पुनरुत्थान और

भविष्य में

रिसाले-ए-नूर संग्रह से

मानवता का ईश्वरीय मुठभेड़ श्रृंखला

पुनरुत्थान और परलोक

पुनरुत्थान और परलोक (10वाँ वचन)

स्वर्ग के बारे में सवालों के जवाब (28वाँ वचन)

प्रलय दिवस और परलोक (29वाँ शब्द)

बेदिउज्जमां

नर्स ने कहा

The Light

न्यू जर्सी 2006

संशोधित संस्करण 2006

प्रथम प्रकाशन 2002

08 07 06 05 2 3 4 5

द लाइट, इंक. द्वारा प्रकाशित.
26 वर्ल्ड्स फेयर डॉ. सुइट सी

समरसेट, न्यू जर्सी, 08873, संयुक्त राज्य अमेरिका

www.thelightpublishing.com

तुर्की से अली उनाल द्वारा अनुवादित

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा

नर्सी, सईद, 1877-1960।

पुनरुत्थान और परलोक / बेदिउज़्ज़मान सईद नूरसी.

पृ. सेमी. - (मानवता का ईश्वर से साक्षात्कार ; 2)

"रिसाले-ए नूर संग्रह से।"

सूचकांक शामिल है.

आईएसबीएन 0-9720654-0-7 (पीबीके)

1. परलोक विद्या, इस्लामी 2. पुनरुत्थान (इस्लाम) 3. भावी जीवन--
इस्लाम 4. इस्लाम-सिद्धांत 5. नूरकुलक I. शीर्षक II. श्रृंखला

बीपी166.8.एन87 2002

297.2'3--डीसी21

2002006831

मुद्रित लेखक:
Çaðlayan A.Þ., इज़मिर - तुर्की, जनवरी
2006

विषयसूची

बेदिउज्जमां और रिसाले-ए नूर

अपने जीवनकाल की उपलब्धियों के कई आयामों के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व और चरित्र में, बेदीउज्जमां (1877-1960) मुस्लिम दुनिया में एक महत्वपूर्ण विचारक और लेखक थे और अपने निरंतर प्रभाव के माध्यम से, आज भी हैं। उन्होंने इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों को सबसे प्रभावी और गहन तरीके से प्रस्तुत किया, जो चौदहवीं शताब्दी के इतिहास में विभिन्न स्तरों पर स्पष्ट है। वे अस्सी-पांच साल तक जीवित रहे। उन्होंने लगभग सभी वर्ष इस्लाम के लिए प्रेम और जोश से भरे हुए, उचित तर्क पर आधारित और कुरान और पैगंबर के उदाहरण की छाया में एक बुद्धिमान और मापा हुआ सक्रियता में बिताए।

बेदीउज्जमां उस दौर में जी रहे थे जब भौतिकवाद अपने चरम पर था और बहुत से लोग साम्यवाद के पीछे पागल थे, और दुनिया बहुत बड़े संकट में थी। उस महत्वपूर्ण दौर में, बेदीउज्जमां ने लोगों को विश्वास के स्रोत की ओर इशारा किया और उनमें सामूहिक बहाली की प्रबल आशा जगाई। ऐसे समय में जब विज्ञान और दर्शन का इस्तेमाल युवा पीढ़ी को नास्तिकता की ओर गुमराह करने के लिए किया जा रहा था, और शून्यवादी दृष्टिकोण का व्यापक आकर्षण था, ऐसे समय में जब यह सब सभ्यता, आधुनिकीकरण और समकालीन सोच के नाम पर किया जा रहा था और जो लोग उनका विरोध करने की कोशिश करते थे, उन्हें सबसे क्रूर उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था, बेदीउज्जमां ने पूरे लोगों के समग्र पुनरुत्थान के लिए प्रयास किया, उनके दिमाग और आत्माओं में वही सब फूंक दिया जो आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा और आध्यात्मिक प्रशिक्षण दोनों के संस्थानों में सिखाया जाता है।

बेदिउज्जमां ने देखा था कि आधुनिक अविश्वास विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न हुआ है, अज्ञानता से नहीं।

उन्होंने पहले लिखा था कि प्रकृति ईश्वरीय शक्तियों का संग्रह है।
संकेत और इसलिए विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी विषय नहीं हो सकते। बल्कि, वे एक ही सत्य की दो (स्पष्टतः) भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। मन को विज्ञान से प्रकाशित किया जाना चाहिए, जबकि हृदय को विज्ञान से प्रकाशित किया जाना चाहिए

धर्म।

बेदिउज़्ज़माँ सामान्य अर्थों में लेखक नहीं थे।
शब्द। उन्होंने अपनी शानदार रचना रिसाले-ए-नूर लिखी,
5,000 पृष्ठों से अधिक का संग्रह, क्योंकि उनके पास
मिशन: उन्होंने विज्ञान और दर्शन द्वारा पोषित भौतिकवादी और नास्तिक विचारधारा के खिलाफ संघर्ष किया और
इस्लाम की सच्चाई को आधुनिक दिमागों के सामने पेश करने की कोशिश की और
हर स्तर की समझ वाले दिल। रिसाले-ए नूर,
कुरान की एक आधुनिक टिप्पणी, मुख्य रूप से केंद्रित है
ईश्वर के अस्तित्व और एकता, पुनरुत्थान,
पैगम्बरत्व, ईश्वरीय शास्त्र जिसमें मुख्य रूप से शामिल हैं
कुरान, अस्तित्व के अदृश्य क्षेत्र, ईश्वरीय नियति
और मानवता की स्वतंत्र इच्छा, पूजा, मानव जीवन में न्याय,
और सृष्टि में मानवता का स्थान और कर्तव्य।

लोगों के दिलो-दिमाग से मिटाने के लिए
झूठी मान्यताओं और धारणाओं के संचित 'अवसाद' को दूर करने और उन्हें बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने के लिए, बेदिउज़्ज़मान जोरदार तरीके से लिखते हैं और बार-बार दोहराते हैं। वह न तो अकादमिक और न ही उपदेशात्मक तरीके से लिखते हैं;

बल्कि वह भावनाओं से अपील करता है और अपनी भावनाओं को बाहर निकालने का लक्ष्य रखता है
लोगों के दिलों और दिमागों में विचारों और अवधारणाओं को पहुँचाना
उन्हें विश्वास और दृढ़ विश्वास के प्रति जागृत करना।

इस पुस्तक में रिसाले-आई से चयनित अनुभाग शामिल हैं
केवल एकत्रण ।

दसवाँ शब्द

जी उठना और परलोक

[नोट: मैं समझ को आसान बनाने के लिए रूपकों और दृष्टांतों का उपयोग करता हूं और दिखाता हूं कि कैसे तर्कसंगत, उचित, सुसंगत, इस्लाम की सच्चाइयाँ सुसंगत और सुसंगत हैं। उनके अन्तिम अर्थ उन सच्चाइयों में निहित हैं।

प्रत्येक कहानी इन सच्चाइयों की ओर संकेत करती है। तो, इस अर्थ में, वे काल्पनिक नहीं हैं, बल्कि, निस्संदेह सत्य.]

भगवान के नाम पर,
दयालु, कृपालु.

ईश्वर की दया के चिन्हों और छापों को देखो, वह पृथ्वी को उसकी मृत्यु के बाद कैसे पुनर्जीवित करता है। वह वही है जो मुर्दों को जिलाएगा, और वह हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है। (30:50)

यदि आप पुनरुत्थान के बारे में सुनना चाहते हैं और परलोक की कहानी सरल भाषा और शैली में, सुनिए इस दृष्टांत के अनुसार: दो लोग एक स्वर्गलोक में गए-

---

1 ईश्वर कुरान में घोषणा करता है: मैं जाने की अनुमति नहीं दूंगा तुममें से किसी के भी कर्म को व्यर्थ न जाने दो, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री। तुम एक दूसरे से भिन्न हो (3:195) यह स्पष्ट है कि इस्लाम धार्मिक आधार पर पुरुषों और महिलाओं के बीच भेदभाव नहीं किया जाता

जैसे ज़मीन (यह दुनिया)। उन्होंने सभी दरवाज़े खुले देखे
और दुकानें खुली रहीं, मानो लोगों को कोई परवाह ही नहीं थी
अपनी संपत्ति की रक्षा के बारे में। पहले वाले ने लिया
जो कुछ भी वह चाहता था और अपनी इच्छा का पालन करते हुए,
हर प्रकार का अन्याय और अभद्रता की।
लोगों ने उसे रोकने के लिए लगभग कुछ भी नहीं किया।

उसके दोस्त ने पूछा: "तुम क्या कर रहे हो? तुम
सज़ा पाओ, और तुम मुझे भी मुसीबत में डाल दोगे!
यह संपत्ति सामूहिक रूप से स्वामित्व वाली है, क्योंकि ये लोग सैनिक
या सरकारी कर्मचारी हैं।
अब वे आम नागरिकों की तरह काम कर रहे हैं, इसलिए वे आपके काम
में ज़्यादा दखल नहीं दे रहे हैं। लेकिन आदेश सख्त है।
राजा ने फ़ोन लगा दिए हैं, और उसके अधिकारी
हर जगह। जाओ और माफ़ी मांगो!" मूर्ख, जिद्दी आदमी ने जवाब दिया:
"नहीं, यह संपत्ति

जिम्मेदारी। प्रत्येक लिंग अधिकांश जिम्मेदारियों को साझा करता है, लेकिन प्रत्येक की कुछ
जिम्मेदारियाँ होती हैं जो उसके लिए विशेष होती हैं। कुरान में आमतौर पर संबोधन के लिए
पुल्लिंग रूप का उपयोग किया जाता है,
क्योंकि यह अरबी की विशेषताओं में से एक है। लगभग हर भाषा में, पुल्लिंग रूप का
उपयोग ऐसे समूह के लिए किया जाता है जिसमें दोनों शामिल होते हैं
पुरुष और महिला, अंग्रेजी शब्द मानव जाति की तरह, जो
इसमें पुरुष और महिला दोनों शामिल हैं। इसलिए भाईचारे में भी शामिल है
बहनचारा, और, चूंकि विश्वासियों में पुरुष और महिला दोनों शामिल हैं
महिला विश्वासी, विश्वासी भाई-बहन हैं।
हालाँकि, मूल पाठ को बनाए रखने और त्रुटियों से बचने के लिए
पुनरावृत्ति, आमतौर पर हम स्त्री रूपों का उल्लेख नहीं करते हैं
अनुवाद. (ट्र.)

यह किसी न किसी चैरिटी का है और इसका कोई मालिक नहीं है। हर कोई इसे अपनी मर्जी से इस्तेमाल कर सकता है। मैं इन बढ़िया चीजों का इस्तेमाल क्यों न करूं? जब तक मैं अपनी आंखों से नहीं देखूंगा, मैं इस पर यकीन नहीं करूंगा।" उन्होंने एक दार्शनिक की तरह बहुत सारे कुतर्क भी बोले।

बहस शुरू हो गई। जब जिद्दी व्यक्ति ने पूछा: "राजा कौन है? मैं उसे नहीं जानता," तो उसके दोस्त ने कहा: "हर गाँव का एक मुखिया होना चाहिए, हर सुई का एक निर्माता और कारीगर होना चाहिए, और हर अक्षर का एक लेखक होना चाहिए। इतनी अच्छी तरह से व्यवस्थित भूमि पर कोई शासक कैसे नहीं हो सकता? इतनी संपत्ति कैसे हो सकती है

जब हर घंटे कीमती और कलात्मक उपहारों से भरी एक रेलगाड़ी आती है, मानो अदृश्य के राज्य से आ रही हो?2 यह यहाँ उतरती है और आगे बढ़ जाती है। हर घोषणा और उद्घोषणा, उन सामानों पर लगी हर मुहर और मोहर, पूरे राज्य में लहराते सभी सिक्के और झंडे - उनका कोई मालिक कैसे नहीं हो सकता? ऐसा लगता है कि आपने किसी विदेशी संस्कृति में कुछ प्रशिक्षण प्राप्त किया है, क्योंकि आप विदेशी लिपि तो पढ़ सकते हैं, लेकिन इस्लामी लिपि नहीं। आप उन लोगों से भी पूछने से इनकार करते हैं जो इसे पढ़ सकते हैं। अब आइए, मैं आपको सर्वोच्च आदेश पढ़कर सुनाता हूँ।”

---

2 यह रेलगाड़ी एक वर्ष को दर्शाती है, क्योंकि प्रत्येक बसंत अदृश्य से आने वाली रसद से भरी गाड़ी है।

जिद्दी ने पलटकर जवाब दिया: "भले ही कोई हो

राजा, मैं उनकी संपत्ति का इतना कम उपयोग कर रहा हूँ कि उन्हें इससे कोई नुकसान नहीं हो सकता। इससे उनके खजाने में क्या कमी आएगी? मुझे यहाँ कोई जेल नहीं दिख रही है, इसलिए मुझे सज़ा मिलने की चिंता क्यों करनी चाहिए?"
उसके दोस्त ने जवाब दिया: "गंभीरता से बोलो! यह भूमि युद्धाभ्यास का मैदान है, राजा की अद्भुत शाही कलाओं की प्रदर्शनी है, एक अस्थायी धर्मशाला है। क्या तुम नहीं देख सकते कि रोज़ एक कारवां आता है और दूसरा निकल जाता है और गायब हो जाता है?

यह लगातार भरता और खाली होता रहता है। जल्द ही यह भूमि बदल जाएगी। इसके लोगों को दूसरी और शाश्वत भूमि पर ले जाया जाएगा, जहाँ उन्हें उनकी सेवा के लिए पुरस्कृत या दंडित किया जाएगा।”

उस अविश्वासी ने कहा: "मैं इस पर विश्वास नहीं करता।

क्या यह भूमि नष्ट होकर किसी अन्य स्थान पर जा सकती है?”
उसके वफादार दोस्त ने जवाब दिया: "हे हठी और विद्रोही, मैं तुम्हें असंख्य प्रमाणों में से कुछ दिखाता हूँ कि जो कुछ मैंने तुम्हें बताया है वह सच है।"

बारह चित्र

पहली तस्वीर: क्या इतने शानदार राज्य में आज्ञा मानने वालों के लिए इनाम और विद्रोह करने वालों के लिए सज़ा की व्यवस्था नहीं हो सकती? क्योंकि इनाम और सज़ा वस्तुतः अस्तित्वहीन हैं

यहाँ, कहीं न कहीं एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण अवश्य होना चाहिए
अन्यथा।

दूसरी तस्वीर: इस संगठन को देखिए और
प्रशासन। सबसे गरीब और वंचित लोगों सहित हर कोई
सबसे कमज़ोर व्यक्ति को सबसे उचित और उत्तम पोषण मिलता है। अकेले और
बीमार व्यक्ति को सबसे अच्छा मिलता है
शाही और स्वादिष्ट भोजन, व्यंजन पर ध्यान दें,
आभूषणों से सजे आभूषण, कढ़ाई वाले कपड़े, शानदार दावतें। हर कोई अपने
कर्तव्यों को गंभीरता से लेता है,
सिवाय तुम्हारे जैसे विद्रोहियों के, और तुम अतिक्रमण न करो
उनकी सीमाएँ। महानतम लोग इसमें लगे हुए हैं
विनम्र और आज्ञाकारी सेवा, तथा भय और भय के भाव से काम करना।

इस दृष्टि से, शासक में महान उदारता, सर्वव्यापी करुणा, महान गरिमा,
सर्वोच्च सम्मान और उच्च पद होना चाहिए।

उदारता के लिए उदारता की आवश्यकता होती है, करुणा के लिए नहीं
उपकार और सम्मान के बिना वितरित किया जा सकता है
उच्च राज्य की अपेक्षा है कि अविनम्र लोगों को दंडित किया जाए।
लेकिन उस करुणा का एक छोटा सा हिस्सा भी नहीं
और यहाँ उच्च राज्य की आवश्यकता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उत्पीड़क
शक्तिशाली बना रहता है और उत्पीड़ित अपमानित होता है। जैसे ही वे दोनों इस
क्षेत्र से प्रस्थान करते हैं और पलायन करते हैं,
उनके मामलों को सर्वोच्च न्यायाधिकरण पर छोड़ दिया जाना चाहिए।

तीसरी तस्वीर: सभी मामलों का प्रबंधन
उच्च बुद्धि और व्यवस्था; लेन-देन प्रभावी होते हैं
सच्चे न्याय और संतुलन के साथ। एक बुद्धिमान राजनीति की आवश्यकता है
राज्य की सुरक्षा शाखा के साधकों को प्राप्त होता है
न्याय की मांग है कि नागरिकों के अधिकारों की रक्षा की जाए ताकि
सरकार की गरिमा और
राज्य का अधिकार और वैभव कायम रहता है। लेकिन
यहाँ उसका केवल एक छोटा सा हिस्सा ही पूरा होता है। तुम्हारे जैसे
अवज्ञाकारी लोग अक्सर इस राज्य से बिना दण्डित हुए निकल जाते हैं।
उनके मामलों को सर्वोच्च न्यायालय पर छोड़ देना चाहिए
न्यायाधिकरण।

चौथी तस्वीर: असंख्य को देखिये
और अद्वितीय रत्नों को शानदार व्यंजनों की तरह प्रदर्शित किया गया
एक भोज। शासक के पास एक अटूट होना चाहिए
खजाना और असीम उदारता, दोनों ही
सभी इच्छित वस्तुओं के साथ-साथ शाश्वत का भरपूर और शाश्वत प्रदर्शन
आवश्यक है
दावत का आनंद लेने वालों की प्रकृति, ताकि वे
अनंत काल तक मृत्यु या वियोग के कारण पीड़ा नहीं सहनी चाहिए। जिस
प्रकार पीड़ा का अंत सुख लाता है, उसी प्रकार सुख का अंत सुख लाता है।
अंत पीड़ा लाता है.

इन प्रदर्शनों को देखिए और सुनिए
घोषणाएँ। हेराल्ड चमत्कार करने वाले सम्राट की बेहतरीन और नाजुक
कलाओं का प्रचार करते हैं। वे
अपनी पूर्णता दिखाएं, अपनी अतुलनीयता की घोषणा करें और

अदृश्य सौंदर्य, और उसकी छिपी हुई सुंदरता की सूक्ष्म अभिव्यक्तियों के बारे में बताएं। यह देखते हुए, उसके पास एक अद्भुत सुंदरता और पूर्णता होनी चाहिए जो यहाँ नहीं देखी गई है।
इस छिपी हुई पूर्णता के लिए ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो इसकी सराहना और प्रशंसा करेगा, जो इसे देखेगा और कहेगा: “ईश्वर ने क्या ही अद्भुत इच्छा की है!” इस प्रकार इसे प्रदर्शित करेगा और इसे ज्ञात करेगा।

छिपी हुई और बेजोड़ सुंदरता देखना और देखा जाना चाहती है, दर्पणों में खुद का चिंतन करना चाहती है और आनंदित दर्शकों और चकित प्रशंसकों के चिंतन के माध्यम से खुद को देखना चाहती है। यह देखना और देखा जाना चाहती है, खुद को अनंत काल तक चिंतन करना चाहती है, और बिना रुके चिंतन करना चाहती है। यह उन लोगों के लिए स्थायी अस्तित्व चाहती है जो इसे विस्मय और आनंद से देखते हैं, क्योंकि शाश्वत सुंदरता क्षणिक प्रशंसकों से संतुष्ट नहीं हो सकती।

इसके अलावा, बिना किसी वापसी की उम्मीद के मरने के लिए किस्मत में लिखे प्रशंसक जब भी अपनी मौत की कल्पना करेंगे तो पाएंगे कि उनका प्यार दुश्मनी में बदल गया है। ऐसी प्रशंसा और सम्मान अवमानना की ओर झुक जाएगा, क्योंकि हम उस चीज के दुश्मन हैं जिसे हम नहीं जानते और

हम इस अतिथिगृह से जल्दी से निकल जाते हैं और उस पूर्णता और सौंदर्य की एक धुंधली रोशनी या छाया को केवल एक पल के लिए देखने के बाद गायब हो जाते हैं। चूंकि यह दृश्य हमें संतुष्ट नहीं करता, इसलिए हम

जान लें कि हम एक शाश्वत क्षेत्र की ओर बढ़ रहे हैं
देखने का.

पाँचवी तस्वीर: ऊपर दी गई बातों को देखते हुए, उस अद्वितीय प्राणी में भी असीम दया है। वह तुरन्त ही अपने सेवकों को भेजता है।
हर पीड़ित या दुर्भाग्यपूर्ण व्यक्ति की सहायता करें। वह उत्तर देता है
हर अनुरोध और याचिका, यहां तक कि सबसे निम्न विषय की सबसे निम्न आवश्यकता। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति का पैर
यदि किसी चरवाहे की भेड़ को चोट लग जाए, तो वह दवा उपलब्ध कराता है या पशुचिकित्सक को भेजता है।

आओ, एक महान बैठक में चलें जो आयोजित हो रही है
उस देश में। देश के सभी कुलीन लोग वहाँ इकट्ठे हुए हैं। एक सबसे महान सेनापति, एक असर

एक उच्च कोटि का अलंकरण, दयालु राजा से कुछ चीज़ों के लिए प्रार्थना कर रहा है। उसके पीछे-पीछे हर कोई कह रहा है: "हाँ, हाँ, हम भी यही माँगते हैं।"

वे उसके शब्दों से सहमत हैं और उसकी पुष्टि करते हैं। अब सुनिए उस महान सेनापति की बात, जो सर्वश्रेष्ठ है
राजा द्वारा प्रिय, कह रहा है:

> हे हमारे स्वामी, आप जो हमें अपनी उदारता से पालते हैं,
> हमें इन उदाहरणों की उत्पत्ति और वास्तविक रूप दिखाएं
> और छायाएँ जो तुमने हमें दिखाई हैं। हमें अपने करीब खींचो
> अपने शासन की सीट। हमें इन रेगिस्तानों में नष्ट न होने दें,
> बल्कि हमें अपनी उपस्थिति में स्वीकार करो। हम पर दया करो
> हमें वहाँ उत्तम के सच्चे रूप से खिलाओ
> आपने हमें यहाँ बहुत कुछ चखाया है। हमें कष्ट न दें

हमें निराशा और निर्वासन में छोड़ दें, या अपनी तड़पती, आभारी
और आज्ञाकारी प्रजा को उनके अपने हाल पर छोड़ दें
हमें नष्ट मत करो।

उसकी बातें सुनकर क्या ऐसा दयालु और शक्तिशाली राजा अपने सेवक की प्रार्थना को अस्वीकार कर सकता था?
सबसे प्रिय और महान कमांडर का सबसे अच्छा और

सर्वोच्च लक्ष्य? याद रखें कि वह अपने सबसे छोटे सैनिक की सबसे छोटी इच्छा को पूरा करता है। कमांडर और

मानवता का उद्देश्य एक ही है। इसके अलावा, इसकी पूर्ति राजा की प्रसन्नता, करुणा और न्याय से अपेक्षित है।

ऐसे मामले उसके लिए सृजन करने जितना ही आसान हैं
ये आनंद के क्षणिक स्थान हैं।
इस क्षणभंगुर जगह पर इतना कुछ, जो केवल रहता है
5 या 6 दिन, अपनी शक्ति और शक्ति के उदाहरण दिखाने के लिए
वह अपने शासन की सीट पर सच्चा परोपकार प्रदर्शित करेगा
खजाने, परिपूर्णता और कौशल को इस तरह से प्रस्तुत करें, और हमारे सामने ऐसे दृश्य खोलें, कि हमारा
बुद्धिजीवी चकित हो जाएंगे। इस क्षेत्र में भेजे गए लोग
परीक्षण के दौरान उन्हें अपने हाल पर नहीं छोड़ा जाएगा; बल्कि,
आनंद के महल या सजा की काल कोठरी प्रतीक्षा कर रही है
उन्हें।

छठी तस्वीर: अब आओ, देखो! ये सब
रेलगाड़ियाँ, विमान, मशीनें, गोदाम और
प्रदर्शनियों से पता चलता है कि एक राजसी राजा मौजूद है और

परदे के पीछे शासन करता है।3 ऐसे संप्रभु को
अपने योग्य विषय। लेकिन उसके विषय हैं
एक गेस्टहाउस में एकत्र हुए जो भरा हुआ और रोजगार से भरा हुआ है

---

3 जब एक सेना से कहा जाता है कि “अपने हथियार उठाओ और ठीक करो युद्ध के नियमों के अनुसार युद्धाभ्यास के दौरान आपकी संगीनें, यह ओक के जंगल जैसा दिखता है। जब एक गैरीसन के सैनिक
उत्सव के दिन उन्हें परेड की वर्दी और पदक पहनने का आदेश दिया जाता है, सेना एक अलंकृत बगीचे जैसी दिखती है
हर रंग के फूलों का। पृथ्वी के सभी हिस्सों के साथ ऐसा ही है
बेरहम पौधों और पेड़ों की प्रजातियाँ, जो जानवरों, जिन्नों की तरह हैं,
मानवता और पशु, असीम रूप से विविध में से केवल एक हैं
अनन्त राजा की सेनाओं को जब आदेश मिलता है, " रहो!"
और यह जीवन को बनाए रखने के संघर्ष में है, और आदेश है कि “अपनी रक्षा के लिए और अपने जीवन को बनाए रखने के लिए अपने हथियार और उपकरण उठाओ!” उस समय, वे सभी पौधे
और पेड़ अपनी संगीनें पेड़ों और पौधों के रूप में स्थापित करते हैं
कांटों से युक्त, और तट पर खड़ी एक शानदार सेना जैसा दिखता है
परेड या युद्ध का मैदान।

हर वसंत का दिन और सप्ताह हर सब्जी-पशु प्रजाति के लिए एक उत्सव के दिन की तरह होता है। हर प्रजाति खुद को शाश्वत राजा के सामने पेश करती है
रत्नजटित सजावट के साथ, देखना और साक्षी बनना
उसने उन्हें ऐसे उपहार दिए हैं, मानो वह उन्हें परेड में दिखा रहा हो कि उसने उन्हें क्या अनमोल उपहार दिए हैं। ऐसा लगता है मानो वे आज्ञाकारी थे
उनका आदेश था कि "ईश्वर द्वारा निर्मित वस्त्र पहनें"
कलात्मकता और सजावट (फूल और फल) बनाया
उनकी रचनात्मकता द्वारा।" ऐसे समय में, पृथ्वी का चेहरा एक शानदार उत्सव पर एक शानदार परेड में एक गैरीसन का प्रतिनिधित्व करता है
सैनिकों की वर्दी और आभूषणों से जगमगाता दिन
सजावट। इस तरह के उद्देश्यपूर्ण और अच्छी तरह से व्यवस्थित उपकरण
और सजावट उन सभी को, जो अंधे नहीं हैं, यह दर्शाती है कि

प्रतिदिन बांधा जाता है। इसके अलावा, अब उनके विषय युद्धाभ्यास के लिए एक
परीक्षण मैदान पर एकत्र हुए हैं, एक मैदान
जिसे हर घंटे बदला जाता है। फिर से, उसके विषय अंदर ही रहते हैं
कुछ मिनटों के लिए एक प्रदर्शनी हॉल में उनकी परोपकारिता के उदाहरण, उनकी अमूल्य
उत्पाद देखने के लिए
चमत्कारी कला। लेकिन प्रदर्शनी प्रत्येक को बदल देती है
जो कुछ भी चला जाता है वह वापस नहीं आता और जो कुछ भी आता है उसे जाना
तय है। यह सब इस बात को साबित करता है कि
वहाँ स्थायी महल और स्थायी निवास हैं,
साथ ही शुद्धि से भरे बगीचे और खजाने भी
और नमूनों के उत्कृष्ट मूल, उससे भी अधिक
हम यहाँ देख रहे हैं। यही कारण है कि हम यहाँ मेहनत करते हैं।
हम यहाँ काम करते हैं, और वह हमें वहाँ एक फॉर्म से पुरस्कृत करता है
और हमारी क्षमता के अनुकूल खुशी की डिग्री।

सातवीं तस्वीर: चलिए चलें और देखें कि क्या है
हर जगह आप फोटोग्राफरों को तस्वीरें लेते और लेखकों को सब कुछ रिकॉर्ड करते
हुए देखते हैं, नहीं
चाहे वह कितना भी तुच्छ या साधारण क्यों न हो। राजा का
सर्वोच्च फोटोग्राफर, जो अपनी सेवा के लिए समर्पित है
और सब कुछ तस्वीरें, एक उच्च पर स्थापित है
पहाड़.४ राजा ने आदेश दिया होगा कि सभी

वे केवल अनंत शक्ति वाले राजा की आज्ञा के कारण ही घटित होते हैं
शक्ति और असीमित बुद्धि.

[4] इनमें से कुछ सत्य सातवें सत्य में प्रस्तुत हैं:
राजा की सेवा में समर्पित फोटोग्राफर संकेत देता है

उसके राज्य में किए गए लेन-देन और कार्य
रिकॉर्ड किया जाएगा। एक दिन, वह इन रिकॉर्डों का उपयोग करेगा
अपनी प्रजा से जवाब मांगो।

क्या ऐसा सर्वज्ञ और सर्वरक्षक
अपने सबसे महान विषय - मानवता - के सबसे महत्वपूर्ण कार्यों को रिकॉर्ड में न रखते हुए? क्या वह नहीं कहेंगे
पुरस्कृत या दण्डित करने के लिए सभी को जवाबदेह बनाया जाएगा
आखिर लोग ऐसे काम करते हैं जो परमेश्वर को ठेस पहुँचाते हैं
महिमा के विपरीत हैं, उसके गर्व के विपरीत हैं, और उसकी करुणा के लिए अस्वीकार्य हैं। वे इस दुनिया में दण्डित नहीं होते, और इसलिए उन्हें पहले बुलाया जाना चाहिए
सर्वोच्च न्यायाधिकरण (कहीं और)

आठवीं तस्वीर: मुझे राजा का पत्र पढ़ने दो
तुम्हारे लिए आदेश देता है। वह कई बार निम्नलिखित वादे और धमकियाँ देता है: "मैं तुम्हें यहाँ से ले जाऊँगा
आपके वर्तमान निवास स्थान को और आपको के दायरे में ले आओ

सर्वोच्च संरक्षित टैबलेट। इस टैबलेट की वास्तविकता और अस्तित्व
छब्बीसवें वचन में इसे इस प्रकार सिद्ध किया गया है: एक छोटा सा पोर्टफोलियो एक बड़े बहीखाते के अस्तित्व का सुझाव देता है; एक छोटा सा दस्तावेज एक बड़े रजिस्टर के अस्तित्व की ओर इशारा करता है; और छोटी बूंदें एक बड़े रजिस्टर के अस्तित्व की ओर इशारा करती हैं
एक बड़े जल टैंक के अस्तित्व की ओर इशारा करते हैं। इस प्रकार हमारी धारण क्षमताएँ, एक पेड़ के फल, एक फल के बीज और गिरी समान हैं
एक छोटा सा पोर्टफोलियो, एक छोटी सी संरक्षित पट्टिका, या उस कलम से निकलती हुई एक बूंद जो महान संरक्षित पट्टिका को अंकित करती है। वे
सभी एक सर्वोच्च के अस्तित्व की ओर इशारा करते हैं, संकेत देते हैं और साबित करते हैं
स्मृति, एक महान रजिस्टर, एक उत्कृष्ट संरक्षित पट्टिका।

मेरा पूर्ण शासन ताकि मैं आज्ञाकारी को खुशी प्रदान कर सकूँ और अवज्ञाकारी को कैद कर सकूँ। मैं उस अस्थायी निवास को नष्ट कर दूँगा और एक अलग राज्य स्थापित करूँगा जिसमें शाश्वत महल और कालकोठरी होगी।" वह जो वादा करता है उसे बड़ी आसानी से पूरा करता है, और ये वादे उसकी प्रजा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। उसकी गरिमा और शक्ति उसे अपना वादा तोड़ने की अनुमति नहीं देती।

इसलिए हे भ्रमित व्यक्ति, विचार करो। अपनी झूठी कल्पना, व्यथित बुद्धि और धोखेबाज आत्मा की बात मत सुनो, ये सभी उस व्यक्ति के शब्दों का खंडन करते हैं जो अपना वचन नहीं तोड़ सकता, जिसका उच्च कद किसी धोखे की अनुमति नहीं देता, और जिसकी विश्वसनीयता के सभी दृश्यमान कर्म गवाह हैं। तुम दंड के पात्र हो, क्योंकि तुम उस यात्री के समान हो जो अपनी कल्पना द्वारा प्रदान की गई रोशनी का अनुसरण करने के लिए सूर्य के प्रकाश की ओर अपनी आँखें बंद कर लेता है। तुम अपने मस्तिष्क के प्रकाश से इस भयानक अंधेरे मार्ग को रोशन करना चाहते हो, हालाँकि यह एक चमकने वाले कीड़े से अधिक कुछ नहीं है। राजा अपने सभी वचनों को पूरा करता है, एक ऐसा कार्य जो उसके लिए आसान है और सृष्टि के साथ-साथ उसके और उसके राज्य के लिए भी आवश्यक है। इस प्रकार, एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण और एक उच्च सुख है।

नौवीं तस्वीर: इन कार्यालय प्रबंधकों को देखिए और समूह के नेता.5 प्रत्येक के पास एक निजी फोन है राजा से व्यक्तिगत रूप से बात करें। कभी-कभी वे सीधे उसके पास जाओ। वे सभी कहते हैं कि राजा ने एक शानदार और भयानक तैयार किया है पुरस्कार और दण्ड का स्थान। उनके वादे उसकी धमकियाँ जोरदार हैं और उसकी धमकियाँ सख्त हैं। उसका अभिमान और गरिमा उसे वादा तोड़ने में निहित अपमान को सहन करने की अनुमति नहीं देती है।

इस रिपोर्ट को प्रस्तुत करने वाले लोग, जिनकी संख्या बहुत अधिक है, सर्वत्र स्वीकार किए जाने के लिए, सर्वसम्मति से रिपोर्ट करें कि ऊंचे राज्य की सीट और मुख्यालय, जिनके कुछ निशान यहाँ दिखाई देते हैं, वे यहाँ से बहुत दूर किसी दूसरे क्षेत्र में स्थित हैं। ये अस्थायी हैं और जल्द ही इनका आदान-प्रदान किया जाएगा अनन्त महलों के लिए। यह दुनिया बदल जाएगी, उसके लिए शानदार और अमर साम्राज्य, वैभव जो उसके कार्यों से स्पष्ट है, उसे नहीं समझा जा सकता किसी क्षणिक, अनित्य, अस्थिर, महत्वहीन, परिवर्तनशील, दोषपूर्ण चीज़ पर आधारित या आधारित,

---

5 आठ सत्यों से परामर्श करें। उदाहरण के लिए, हम पैगंबरों और संतों के लिए कार्यालय प्रबंधकों और समूह नेताओं का उपयोग करते हैं, और फोन करते हैं ईश्वर के साथ एक संपर्क और संबंध के लिए जो आगे बढ़ता है हृदय, रहस्योद्घाटन का दर्पण और प्रेरणा का पात्र है। हृदय टेलीफोन के इयरपीस की तरह है।

और अपूर्ण है। यह केवल उन मामलों पर आधारित हो सकता है जो इसके योग्य हैं, और जो शाश्वत, स्थिर, स्थायी हैं,
और गौरवशाली। इस प्रकार वहाँ एक और क्षेत्र है
जिस ओर हम जा रहे हैं।

दसवीं तस्वीर: आज वसंत विषुव है।6
कुछ परिवर्तन होंगे, और अद्भुत होंगे
चीजें होंगी। इस सुंदर वसंत के दिन, चलो चलें
खूबसूरत फूलों से सजे हरे मैदान पर टहलने के लिए अन्य लोग भी जा रहे हैं।

कुछ जादू काम कर रहा होगा, जो अचानक खंडहर बन गया
फिर से इमारतें बन गई हैं, और यह खाली मैदान अब एक घनी आबादी वाले शहर जैसा दिखता है। यह हर घंटे एक अलग दृश्य दिखाता है, बिल्कुल एक फिल्म स्क्रीन की तरह,
और एक अलग आकार ले लेता है। सही क्रम पर ध्यान दें
इन जटिल, तेजी से बदलते और असंख्य दृश्यों के बीच, और प्रत्येक वस्तु को उसके उचित स्थान पर रखा गया है।

---

6 इन पहलुओं को नौवें सत्य में समझाया गया है। विषुव बिंदु वसंत की शुरुआत का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि हरे खेत
फूलों से भरा यह दृश्य वसंत ऋतु में पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करता है। बदलते दृश्य
वसंत ऋतु में जीवों, प्राणियों और चीजों का प्रतिनिधित्व करते हैं और
मानवता और जानवरों को दिए गए प्रावधान। ये हैं
की शुरुआत से ही, व्यवस्थित उत्तराधिकार में सामने लाया गया
वसंत से ग्रीष्म ऋतु के अंत तक, एक राजसी, शक्तिशाली निर्माता द्वारा,
वह अत्यन्त बुद्धिमान, दयालु सृष्टिकर्ता है, जो उन्हें अत्यन्त उत्तम रीति से नया करता है।
करुणा और उन्हें लगातार, एक के बाद एक भेजता है
अन्य।

इस जगह पर काल्पनिक दृश्य इतने सुव्यवस्थित नहीं हो सकते, और लाखों कुशल जादूगर
ऐसी कलात्मकता किसी में नहीं हो सकती। इस बात को ध्यान में रखते हुए, अदृश्य राजा ने और भी बड़े चमत्कार किए होंगे।

हे हठी! तुम पूछते हो कि इस विशाल राज्य को कैसे नष्ट करके कहीं और स्थापित किया जा सकता है। क्या तुम असंख्य परिवर्तनों के प्रति अंधे हो?

और हर घंटे होने वाली क्रांतियाँ, ठीक उसी तरह जैसे एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरण जिसे आप नकारते हैं? यह
एकत्रित होना और बिखर जाना यह दर्शाता है कि
इन दृश्यमानों के भीतर कुछ उद्देश्य छिपा हुआ है
और तेजी से जुड़ना और अलग होना, ये मिश्रण और विलय। ऐसा लगता है जैसे 10 साल की मेहनत का नतीजा है
एक साथ जुड़ने के लिए समर्पित, जिसका उद्देश्य कोई अंत नहीं है
एक घंटे से अधिक समय तक। ऐसी परिस्थितियाँ कैसे हो सकती हैं
क्या ये अपने आप में लक्ष्य हैं? ये दृष्टांतों से अधिक कुछ नहीं हैं जो अपने आप से परे किसी चीज़ का संकेत या अनुकरण करते हैं।

वह महान् सत्ता उन्हें चमत्कारिक ढंग से लाती है, और फिर उनकी नकल की जाती है, उन्हें संरक्षित किया जाता है,
और रिकॉर्ड किया गया, ठीक वैसे ही जैसे युद्ध के मैदान में होता है
दर्ज किया गया है। इसका तात्पर्य है कि एक असीम विशाल
एक सभा स्थल बनाया जाएगा, और वहां जो कुछ होगा वह यहां घटित होने वाली घटनाओं पर आधारित होगा।

इसके अलावा, यहाँ जो कुछ घटित होगा उसके परिणाम भी
किसी सर्वोच्च प्रदर्शनी में स्थायी रूप से प्रदर्शित किया जाएगा।
यहां देखी गई सभी क्षणिक और उतार-चढ़ाव वाली घटनाएं
शाश्वत एवं अपरिवर्तनीय रूप का फल प्राप्त होगा।
इस प्रकार इस संसार में देखी जाने वाली सभी विविधताएँ
एक सर्वोच्च खुशी के लिए, एक ऊंचा न्यायाधिकरण,
और ऐसे उच्च उद्देश्यों के लिए जो अभी तक हमारे लिए अज्ञात हैं।

ग्यारहवीं तस्वीर: तो, मेरे जिद्दी दोस्त,
चलो समय के माध्यम से यात्रा करते हैं और देखते हैं कि क्या चमत्कार है
इस राजा ने अन्य स्थानों पर जो कार्य पूरे किये हैं।
हम जहाँ भी जाते हैं, ऐसे ही चमत्कार देख सकते हैं,
यद्यपि वे कला और रूप के संबंध में भिन्न हैं।
लेकिन व्यवस्था और सामंजस्य स्पष्ट दिखाई देता है
बुद्धि, स्पष्ट पक्षपात के संकेत, संकेत
उच्च न्याय, और व्यापक दया के फल
अभी भी इन क्षणिक स्टेशनों, अस्थायी क्षेत्रों और गुजरते दृश्यों में देखा जाता है।

सीमित अंतर्दृष्टि वाले लोग भी यह समझते हैं कि
कोई भी इस राजा की उत्तम बुद्धि, सुन्दर विधान, व्यापक करुणा और गौरवशाली न्याय की बराबरी या उससे बढ़कर कुछ नहीं कर सकता। यदि आप स्थायी निवास, ऊँचे स्थान, निश्चित पद और

स्थायी रूप से निवासी और संतुष्ट आबादी
उसके राज्य में विद्यमान रहना—यदि तुम उसकी सम्पूर्णता को अस्वीकार करते हो
उसकी बुद्धि, अनुग्रह की सच्चाइयों की अभिव्यक्ति-

उसके राज्य में दया, न्याय और प्रेम की भावना हो, तो हम अवश्य ही उसकी इच्छा पूरी करेंगे।
हमें इस दुनिया में जो कुछ भी दिखाई देता है, उसे नकारना होगा।

क्या हम सूर्य को नकार सकते हैं, जिसका प्रकाश स्पष्ट रूप से
क्या हम इन बुद्धिमानी भरे विचारों के स्रोत पर विचार कर सकते हैं?
उपाय, उदार कार्य और दयालु उपहार - सभी
जो स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं - एक चालबाज या
तानाशाह? हम सत्य को उसके विपरीत में बदल देते हैं अगर हम
उत्तर "हाँ" है, हालाँकि सभी तर्कसंगत प्राणी यही कहते हैं
असंभव है। इस नियम का एकमात्र अपवाद ये हैं
सोफ़िस्ट, क्योंकि वे हर चीज़ से इनकार करते हैं। इस प्रकार वहाँ है
एक अन्य क्षेत्र जिसमें एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण है,
न्याय का ऊंचा स्थान, और पुरस्कार का ऊंचा स्थान।
वहाँ, यह सब अनुग्रह, बुद्धि, दया और न्याय पूर्ण रूप से प्रकट होगा।

बारहवीं तस्वीर: आइए प्रमुखों से मिलें और

इन समूहों के अधिकारियों से मिलें, उनके उपकरणों की जांच करें और पूछें कि क्या उन्हें
यह इसलिए दिया गया था ताकि वे इसका उपयोग कर सकें।
यहाँ कुछ समय तक जीवित रहने के लिए या इसे एक साधन के रूप में उपयोग करने के लिए
दूसरे लोक में आनंदमय जीवन प्राप्त करें। चूंकि हम हर किसी के साथ ऐसा नहीं कर
सकते, इसलिए आइए इस अधिकारी के पहचान पत्र और रजिस्टर को देखें।

हम देखते हैं कि उसका पद, वेतन, कर्तव्य, आपूर्ति और
निर्देश दर्ज किए गए हैं। उनका पद सिर्फ़ इसलिए नहीं है क्योंकि
कुछ दिन। वास्तव में, यह उसे दिया जा सकता था
लंबे समय तक। उनके कार्ड पर लिखा है: "आप

अमुक दिन राजकोष से इतना वेतन प्राप्त होगा।" लेकिन प्रश्नगत तिथि बहुत दूर भविष्य में है, इस क्षेत्र के खाली हो जाने के बाद।

इसी तरह, उसके कार्ड पर उल्लिखित कर्तव्य केवल इस अस्थायी क्षेत्र के लिए नहीं है, बल्कि राजा के साथ कुछ हद तक निकटता के माध्यम से स्थायी खुशी अर्जित करने के लिए है। उसकी आपूर्तियाँ यहाँ कुछ दिनों तक जीवित रहने के लिए नहीं हैं; वे केवल एक लंबे और खुशहाल जीवन के लिए हो सकती हैं। निर्देश बताते हैं कि उसे एक अलग जगह के लिए नियत किया गया है और वह दूसरे क्षेत्र के लिए काम कर रहा है।

इन रजिस्टरों को देखिए। वे बताते हैं कि इन हथियारों और उपकरणों का उपयोग कैसे करना है और उनका निपटान कैसे करना है। यदि कोई उच्च और शाश्वत क्षेत्र नहीं होता, तो स्पष्ट निर्देशों का ऐसा रजिस्टर और स्पष्ट जानकारी वाला पहचान पत्र अर्थहीन होता। वह सम्मानित अधिकारी, महान कमांडर और सम्मानित प्रमुख किसी भी अन्य व्यक्ति से कमतर होता, क्योंकि वह सबसे अधिक दुखी, भाग्यहीन, अपमानित, पीड़ित, दरिद्र और कमजोर व्यक्ति होता। हर चीज पर यही सिद्धांत लागू करें। आप जो कुछ भी देखते हैं, वह दूसरे और शाश्वत संसार की गवाही देता है।

यह अस्थायी दुनिया एक मैदान, एक प्रशिक्षण मैदान, एक बाजार की तरह है जिसे एक सर्वोच्च द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा

न्यायाधिकरण और परम सुख। यदि आप इससे इनकार करते हैं, तो आपको सभी अधिकारियों के पहचान पत्र, उपकरण और आदेशों के साथ-साथ देश की व्यवस्था, उसकी सरकार और सरकार जो कुछ भी करती है, उससे भी इनकार करना होगा।

यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप एक सच्चे मनुष्य या एक सचेत प्राणी कैसे माने जा सकते हैं?

सृष्टि के एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरण का प्रमाण केवल इन बारह चित्रों तक सीमित नहीं है। अनगिनत अन्य संकेत और प्रमाण बताते हैं कि यह अस्थायी, परिवर्तनशील राज्य एक स्थायी, अपरिवर्तनीय क्षेत्र में स्थानांतरित हो जाएगा।

अनगिनत संकेत और प्रमाण बताते हैं कि हम इस अस्थायी धर्मशाला को छोड़ देंगे और सभी सृष्टि के शासन के शाश्वत आसन पर भेजे जाएँगे। मैं एक ऐसे प्रमाण पर चर्चा करूँगा जो सभी बारह चित्रों को एक साथ लेने से भी अधिक शक्तिशाली है।

महान सभा के बीच में, वही महान सेनापति जिसे हमने पहले देखा था, एक घोषणा कर रहा है। चलो चलते हैं और सुनते हैं। वह एक शाही फरमान सुना रहा है, जो वहाँ ऊपर लटका हुआ है। वह कहता है: "अपने आप को तैयार करो। तुम दूसरे और स्थायी राज्य में जाओगे, एक ऐसा राज्य जो इस राज्य को कालकोठरी जैसा बना देगा। तुम हमारे राजा के शासन की सीट पर जाओगे, और उसकी करुणा और उदारता प्राप्त करोगे, अगर तुम इस फरमान पर ध्यान दोगे और उसका पालन करोगे। अगर तुम विद्रोह करते हो

और इसकी अवज्ञा करो, तुम भयानक स्थिति में डाल दिए जाओगे
काल कोठरी।”

यही संदेश वह दे रहे हैं। यह आदेश
इस पर एक चमत्कारी मुहर लगी है जिसकी नकल नहीं की जा सकती।
केवल तुम्हारे जैसे जिद्दी, विद्रोही लोग ही ऐसा नहीं करते
समझ लो कि यह राजा की ओर से है।
महान कमांडर ऐसे उज्ज्वल सजावट धारण करता है
अंधे लोगों को छोड़कर हर कोई यह समझता है कि
वह राजा के आदेशों का सच्चा संवाहक है।
क्या महान कमांडर पर संदेह किया जा सकता है,
तो इसका मतलब होगा कि हमने जो कुछ भी देखा है उसे नकारना।
मेरे मित्र, तुम्हें अपने बारे में क्या कहना है?

मेरे दोस्त ने जवाब दिया: "मैं क्या कह सकता हूँ? क्या कह सकता हूँ?"
इन सबका खंडन कौन कर सकता है?
दोपहर में सूरज? मैं केवल इतना कह सकता हूँ: 'भगवान की स्तुति हो,'
मुझे मेरी व्यर्थ कल्पना से बचाने के लिए धन्यवाद और
कल्पना, और मुझे एक अनन्त कारागार से मुक्ति दिलाने के लिए। मेरा
मानना है कि राजा के कुछ हद तक निकटता में खुशी का निवास है,
एक
जो इस भ्रमित और अस्थायी धर्मशाला से अलग है।”

पुनरुत्थान और परलोक की सच्चाई को इंगित करने वाला हमारा
दृष्टांत यहीं समाप्त होता है। अब, परमेश्वर के वचन के साथ
कृपा से हम परम श्रेष्ठ सत्य की ओर बढ़ेंगे।
हम बारह परस्पर संबंधित सत्य प्रस्तुत करेंगे-

ऊपर चर्चित बारह चित्रों के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए।
विभिन्न संकेतों के माध्यम से, हम यहां कई मामलों का भी उल्लेख कर रहे हैं जिनकी व्याख्या अन्यत्र भी की गई है।7

चार संकेत

पहला संकेत: ऊपर वर्णित दो लोग तीन अन्य जोड़ों से मेल खाते हैं: • सहज प्रवृत्ति से प्रेरित आत्मा और हृदय [आध्यात्मिक बुद्धि का स्थान]। • दर्शनशास्त्र के छात्र और विवेकपूर्ण कुरान के छात्र। • अविश्वासी और विश्वासियों का समुदाय [मुसलमान]।

प्रत्येक समूह की सबसे बड़ी गलती और गुमराही ईश्वर को न पहचानना है। जैसा कि हमारे दृष्टांत में विश्वासी ने कहा: "लेखक के बिना कोई पत्र नहीं हो सकता, विधायक के बिना कोई कानून नहीं हो सकता।" हम इसकी पुष्टि करते हैं।

एक किताब, खास तौर पर वह किताब जिसके हर शब्द में एक छोटी कलम ने दूसरी किताब लिखी हो, और जिसके हर अक्षर में एक बढ़िया कलम ने प्रशंसा का एक शानदार सुलेख रचा हो, उसमें लेखक की कमी कैसे हो सकती है? चूँकि यह ब्रह्मांड एक ऐसी किताब है, इसलिए इसका एक लेखक होना चाहिए। हर पन्ने में कई किताबें शामिल हैं, हर पन्ने में कई किताबें हैं, हर पन्ने में कई किताबें हैं।

7 उन्नीसवें, बाईसवें और छब्बीसवें शब्दों में।

शब्द एक किताब है और हर अक्षर एक प्रशंसा है। पृथ्वी की सतह उस पुस्तक का केवल एक पृष्ठ दर्शाती है
ब्रह्माण्ड, जिसमें असंख्य पुस्तकें सम्मिलित हैं।
हर पेड़ एक शब्द है, हर फल एक अक्षर है, और हर पेड़ एक शब्द है।
एक विस्तृत वृक्ष के सूचकांक युक्त एक बिंदु को बीजित करें।
ऐसी पुस्तक केवल उन्हीं द्वारा लिखी जा सकती थी
एक महाप्रतापी की शक्तिशाली कलम, जो महिमा और अनुग्रह के गुणों से योग्य है और जिसके पास
अनंत शक्ति और बुद्धि। आस्तिक के कथन की पुष्टि करना अनिवार्य रूप से अवलोकन से होता है
इस संसार में, जब तक कि कोई मोह में डूबा न हो।

एक घर में एक वास्तुकार होना चाहिए, विशेष रूप से एक
ऐसी अद्भुत कलात्मकता, डिजाइन और सूक्ष्म अलंकरण प्रदर्शित करना। इसके पत्थरों में से एक में और भी अधिक कला है
पूरे महल की तुलना में। इसमें कैसे नहीं हो सकता
वास्तुकार? इसके कमरों का हर घंटे नवीनीकरण और परिवर्तन किया जाता है,
कपड़े बदलने या मूवी स्क्रीन पर एक दृश्य से दूसरे दृश्य में जाने जितना ही आसान और व्यवस्थित। इसके अलावा, प्रत्येक दृश्य में कई छोटे कमरे लगातार बनाए जाते हैं।

ब्रह्माण्ड के अस्तित्व के लिए एक असीम बुद्धिमान, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान निर्माता की आवश्यकता है,
क्योंकि यह एक ऐसा महल है जिसके दीपक सूर्य और अग्नि हैं।
चाँद, जिसकी मोमबत्तियाँ तारे हैं। इसके भीतर, समय
एक निलंबित रस्सी की तरह है जिस पर राजसी

निर्माता हर साल एक नई दुनिया बनाता है। वह नवीनीकरण करता है
दुनिया का रूप या स्वरूप प्रतिदिन निरपेक्ष रूप से
वह पृथ्वी की व्यवस्था और बुद्धिमत्ता को बनाए रखता है।

एक भरपूर फैलाव का सामना करें, जो प्रत्येक वसंत को सुशोभित करता है
अनगिनत पौधों और जानवरों की प्रजातियों से भरा हुआ है
अनगिनत प्रकार के उदार उपहारों के साथ।
उनकी विशाल बहुतायत में, प्रत्येक प्राणी स्पष्ट रूप से व्यक्तिगत है और साथ ही, निकटता से संबंधित है
और आपस में घुलमिल गए हैं। क्या ऐसे महल के निर्माता के अस्तित्व को नज़रअंदाज़ करना संभव है?

आप दोपहर के समय सूर्य के अस्तित्व को कैसे नकार सकते हैं?
बादल रहित दिन पर, जब इसकी उपस्थिति प्रतिबिम्बित होती है
सभी पारदर्शी वस्तुओं में? ऐसा करने का मतलब है कि आप

यह मान लें कि प्रत्येक पारदर्शी वस्तु में एक लघु, वास्तविक और विद्यमान सूर्य होता है; कि प्रत्येक सूक्ष्म कण में एक विशाल सूर्य होता है, यद्यपि उस कण में केवल अपने लिए ही पर्याप्त स्थान होता है। आप यह कैसे मान सकते हैं कि प्रत्येक पारदर्शी वस्तु में एक लघु, वास्तविक और विद्यमान सूर्य होता है; कि प्रत्येक सूक्ष्म कण में एक विशाल सूर्य होता है, यद्यपि उस कण में केवल अपने लिए ही पर्याप्त स्थान होता है।

सृष्टिकर्ता के उत्तम गुणों को तार्किक रूप से नकारना
महामहिम, इस व्यवस्थित ब्रह्मांड को देखते हुए, जो लगातार व्यवस्थित, उद्देश्यपूर्ण तरीकों से बदलता रहता है और इसी तरह के व्यवस्थित तरीके से निरंतर नवीनीकृत होता रहता है? सृष्टिकर्ता को नकारने का मतलब है

यह विश्वास करना कि प्रत्येक विद्यमान वस्तु में ईश्वर-सदृश्य तत्व विद्यमान है
शक्तियां.

उदाहरण के लिए, हवा का एक परमाणु किसी तरह से जानता है कि फूल, फल या पत्ती में कैसे प्रवेश करना है और उस पर कैसे काम करना है, क्योंकि यह ऐसा तभी कर सकता है जब यह उन सभी वस्तुओं की संरचना और रूप को जानता हो जिनमें यह प्रवेश करता है और उन्हें प्रभावित करता है। क्या इसमें वह सर्वव्यापी शक्ति और ज्ञान है जिसका श्रेय केवल ईश्वर को जाता है? या, मिट्टी का एक परमाणु अनगिनत विभिन्न बीजों को उगने में सक्षम बनाता है। या तो यह ईश्वरीय आदेश के तहत काम कर रहा है या इसके पास सभी पेड़ों और पौधों के लिए उपयुक्त साधन और उपकरण हैं। क्या प्रत्येक मिट्टी का परमाणु प्रत्येक पौधे की संरचना और सभी रूपों को जानता है या उन रूपों को आकार देने की शक्ति और कलात्मकता रखता है? नहीं। यह भी सत्य है

सृष्टि के अन्य सभी स्तर और क्षेत्र।

सभी चीज़ों में ईश्वर की एकता के कई स्पष्ट प्रमाण हैं। एक चीज़ से सब कुछ बनाने और सब कुछ एक चीज़ में बदलने के लिए, एक ऐसी शक्ति की आवश्यकता होती है जो केवल सभी के निर्माता के पास ही उपलब्ध हो। इसलिए, ध्यान दें: ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति के साथ महिमा करे (17:44)। यदि आप एक, अद्वितीय ईश्वर को अस्वीकार करते हैं, तो आपको उतने ही ईश्वरों को स्वीकार करना चाहिए जितने सृजित प्राणी हैं।

दूसरा संकेत: हमने पहले जिस दृष्टांत का उल्लेख किया था, उसमें एक बहुत ही महान सेनापति का उल्लेख था। हमने बताया कि जो लोग उसके अलंकरण और पदक देखते हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि वह राजा का पसंदीदा सेवक है जो राजा के आदेशों के अनुसार कार्य करता है।

कमांडर ईश्वर का सबसे महान दूत है ।
परम पावन, इतने सुन्दर ब्रह्माण्ड के रचयिता, अवश्य ही
एक महान दूत भेजो, जैसे सूर्य को प्रकाश देना चाहिए
प्रकाश। सूर्य प्रकाश उत्सर्जित किए बिना अस्तित्व में नहीं रह सकता,
और दिव्यता स्वयं को प्रकट किए बिना नहीं हो सकती
भविष्यद्वक्ताओं को भेजना।

क्या एक पूर्ण, परिपूर्ण सुंदरता नहीं चाहेगी
खुद को एक ऐसे व्यक्ति के माध्यम से प्रस्तुत करें जो प्रदर्शित करेगा
और इसे प्रदर्शित करें? क्या यह बिल्कुल सुंदर कलाकृति
किसी ऐसे व्यक्ति के माध्यम से स्वयं को ज्ञात करने की इच्छा नहीं जो
क्या हमारा ध्यान इस ओर आकर्षित होगा? क्या सार्वभौमिक
एक सर्वव्यापी आधिपत्य का प्रभुत्व नहीं होगा
अपनी एकता और सभी के लिए शाश्वत रूप से प्रार्थनीय होने को बहुलता के
सभी स्तरों तक ज्ञात कराना और
एक दूत के माध्यम से विशिष्टता उसके द्वारा प्रतिष्ठित
दोहरा अधिकार? उनकी उपासना की सार्वभौमिकता
उसे बहुलता के दायरे का दिव्य दूत
न्यायालय, और ईश्वर से उसकी निकटता और उसे सौंपा जाना-

---

[8] पैगम्बर मुहम्मद से संबंधित किसी भी प्रकाशन में,
नाम या उपाधि के बाद "उन पर शांति और आशीर्वाद हो" लिखा जाता है, जो उनके
प्रति हमारा सम्मान दर्शाता है और क्योंकि यह एक धार्मिक
अपने साथियों और अन्य प्रतिष्ठित मुसलमानों के लिए:
"भगवान उससे प्रसन्न हों" का प्रयोग किया जाता है। हालाँकि,
चूँकि यह गैर-मुस्लिम पाठकों को विचलित कर सकता है, इसलिए ये वाक्यांश इस
पुस्तक में नहीं दिखाई देते हैं, इस समझ के साथ कि वे
यह मान लिया गया है कि किसी भी प्रकार का अनादर नहीं किया गया है। (संपादक)

उनके संदेश से प्रेरित होकर उन्हें दिव्य न्यायालय का न्यायाधीश बना दिया गया।
उस क्षेत्र के लिए दूत.

क्या वह अनंत आवश्यक सौंदर्य वाला नहीं हो सकता
क्या आप दूसरों को भी अनेक दर्पणों में उनकी सुन्दरता और उनकी कृपा के आयामों को देखने की इच्छा रखते हैं? उनके प्रिय संदेशवाहक एक दर्पण दिखाते हैं
उसकी पूजा के माध्यम से। ईश्वर के संदेश का वाहक,
वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर को हमारा प्रिय बनाता है और दिखाता है
हमें उसके नाम की सुन्दरता दिखाओ।

क्या असाधारण धन से भरे खजाने का मालिक
दैनिक चमत्कार और अमूल्य सामान दिखाने की इच्छा नहीं
विशेषज्ञ के माध्यम से उन्हें एक सराहनीय मानवता के लिए
क्या आप एक कुशल जौहरी के कौशल और उसकी वर्णनात्मक वाक्पटुता के बारे में जानते हैं, जिससे उसकी छिपी हुई परिपूर्णताएँ प्रकट होती हैं?
क्या वह जो अपने नाम की पूर्णता दिखाता है
एक ऐसे ब्रह्मांड में जो इतना सुसज्जित है कि वह एक महल जैसा दिखता है
सूक्ष्म, चमत्कारी हर प्रकार से सुसज्जित
कला में शिक्षक और मार्गदर्शक की नियुक्ति नहीं की गई है ताकि
मानवता उसके चमत्कारों को समझ सके
निर्माण?

क्या वह प्रभु जो ब्रह्माण्ड पर शासन करता है और उसका पालन-पोषण करता है,
अपने दूत के माध्यम से हमारी समस्या का समाधान नहीं कर सकता?
इस बात पर आश्चर्य कि लगातार परिवर्तन क्यों हो रहा है
ब्रह्मांड में, और हर किसी के मन में उठने वाले सवालों का जवाब दें: हमारा उद्गम क्या है? हम कहाँ जा रहे हैं-

क्या हमारा उद्देश्य [यहाँ] है? क्या वह महान निर्माता, जो अपनी सुंदर रचना के माध्यम से सचेत प्राणियों को अपना परिचय देता है और अपने अनमोल उपहारों के माध्यम से उनसे प्रेम करता है, एक संदेशवाहक नहीं भेज सकता जो उन्हें बता सके कि बदले में उसकी इच्छा उनसे क्या चाहती है? क्या ईश्वर हमें बहुलता (इस संसार और इसके आकर्षण) से पीड़ित होने की प्रवृत्ति के साथ-साथ सार्वभौमिक पूजा में संलग्न होने की क्षमता के साथ बना सकता है, बिना यह चाहे कि हम एक शिक्षक और मार्गदर्शक के माध्यम से बहुलता से दूर होकर एकता की ओर मुड़ें?

पैगम्बर होने के कई अन्य कार्य हैं, जिनमें से प्रत्येक इस बात का निर्णायक तर्क है कि ईश्वरत्व का तात्पर्य अनिवार्य रूप से पैगम्बर होना है। क्या पैगम्बर मुहम्मद से अधिक योग्य और इन कार्यों को पूरा करने के लिए अधिक योग्य, पैगम्बर के पद के लिए अधिक उपयुक्त, ईश्वर के संदेश को पहुंचाने के कार्य के लिए अधिक उपयुक्त व्यक्ति कभी हुआ है? नहीं। वे पैगम्बरों के गुरु हैं, पैगम्बरों में सबसे आगे हैं, शुद्ध विद्वानों के नेता हैं, ईश्वर के सबसे निकट हैं, जो ईश्वर के निकट आए हैं, वे प्राणियों में सबसे उत्तम हैं, और उन लोगों के गुरु हैं जो धर्म की ओर मार्गदर्शन करते हैं।

उनके लिखित चमत्कारों और मान्यताओं में उनके पैगम्बर होने के अनगिनत संकेतों को छोड़ दें तो,

सभी विद्वानों द्वारा पुष्टि की गई, सर्वोच्च चमत्कार
कुरान - सत्य का सागर और एक चमत्कारी पुस्तक
40 अलग-अलग पहलुओं में - अकेले ही उसकी स्थापना होती है
पैगम्बरत्व। चूँकि हमने इन पहलुओं पर अन्यत्र चर्चा की है, इसलिए हम अपनी चर्चा यहीं तक सीमित रखते हैं।

तीसरा संकेत: क्या हमारा पद बहुत कम है और
हमारा अस्तित्व इस विशाल सृष्टि के लिए बहुत तुच्छ है
क्या हमें केवल इसलिए प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए ताकि हम जवाबदेह बन सकें?
नहीं, क्योंकि हमारी तुच्छता केवल दिखावटी है। हमारी व्यापक प्रकृति हमें सभी प्राणियों का स्वामी बनाती है और हमें भविष्यद्वाणी करने की क्षमता प्रदान करती है।
परमेश्वर के प्रभुत्व को स्वीकार करें और उसकी सार्वभौमिक पूजा करें।
इस दृष्टि से, हम सृष्टि में सबसे महत्वपूर्ण प्राणी हैं।

यदि कोई पूछे कि ऐसा क्षणभंगुर प्राणी कैसे
अनन्त दण्ड के पात्र हैं, विचार करें कि अविश्वास सृष्टि को, जो ईश्वर द्वारा लिखे गए पत्र के समान अमूल्य और श्रेष्ठ है, निरर्थक और निरर्थक बनाने का प्रयास करता है। यह अभिव्यक्तियों को अस्वीकार करता है,

उनके पवित्र नामों की छापें और शिलालेख,
जो कि हर जगह स्पष्ट है। यह भी नकारना चाहता है
ईश्वर की सच्चाई को दर्शाने वाले अनंत प्रमाण।
संक्षेप में, अविश्वास अस्तित्व का अपमान करता है और इसलिए एक अपराध है

---

9 विशेषकर पच्चीसवें वचन में।

अनंत अनुपात के अनंत दंड के योग्य।

चौथा संकेत: बारह प्रेरितों के दृष्टान्त

चित्रों में तर्क दिया गया कि एक राजा जो एक को नियंत्रित करता था
एक क्षणिक छात्रावास की तरह क्षेत्र अनिवार्य रूप से होना चाहिए
दूसरा, एक शाश्वत और स्थायी क्षेत्र जिसमें
राजा होने का ऐश्वर्य और उत्कृष्टता
ठीक से प्रदर्शित नहीं किया जा सकता। यह भी असंभव है कि
इस क्षणभंगुर संसार का शाश्वत रचयिता
एक शाश्वत क्षेत्र बनाएं; इस सुंदर लेकिन परिवर्तनशील ब्रह्मांड का निर्माता, स्वयं शाश्वत,

एक और स्थायी और चिरस्थायी ब्रह्मांड नहीं बनाएगा; कि एक ऐसे संसार का सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, दयालु निर्माता जो एक अखाड़े की तरह है

परीक्षण और प्रदर्शन, परलोक नहीं बनाएगा
जिसमें इस दुनिया के उद्देश्य प्रकट होते हैं
उचित रूप से। इस सत्य तक पहुँचने का मार्ग है
बारह द्वार जिन्हें बारह अन्य सत्यों के माध्यम से खोला जा सकता है। हम सबसे छोटे और सरलतम से शुरू करते हैं
एक।

पहला सत्य: प्रभुता और प्रभुता का द्वार, उनके नाम का प्रकटीकरण, जो सर्व-पालन करने वाला प्रभु और स्वामी है।

भगवान ने प्रभु और दिव्य संप्रभु होने के नाते अपनी पूर्णता को प्रदर्शित करने के लिए इस अस्थायी ब्रह्मांड का निर्माण किया।

ऐसे महान उद्देश्यों और प्रयोजनों के साथ, उन विश्वासियों के लिए कोई पुरस्कार स्थापित किए बिना,
क्या हमें विश्वास और पूजा के द्वारा उन्हें संतुष्ट करना चाहिए?
वह उन गुमराह लोगों को दंडित नहीं करता जो अस्वीकार करते हैं उसके उद्देश्य?

दूसरा सत्य: उदारता और उदारता का द्वार

दया, उसके नामों की अभिव्यक्तियाँ जो सर्व-उदार और दयालु हैं। क्या प्रभु का यह वचन है कि

इस संसार में, जो असीम उदारता प्रदर्शित करता है,
उनके कार्यों के माध्यम से दया, वैभव और महिमा, उनकी मुनि-फ़िक्शन और दया के अनुसार प्रतिफल
और अपने तेज और महिमा के अनुसार दण्ड देगा?

निम्नलिखित पर विचार करें: सभी सजीव प्राणी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।
किसी न किसी रूप में उचित भरण-पोषण दिया जाता है ।10
सबसे कमज़ोर और सबसे शक्तिहीन व्यक्ति को सबसे अच्छा भरण-पोषण मिलता है। इस तरह की उदारता से दिया गया दान
महान उदारता अनंत के देने वाले हाथ को दर्शाती है

---

10 सभी स्वीकृत पोषण आवश्यकता के माध्यम से प्राप्त होते हैं।
इसके लिए निर्णायक तर्क यह है कि शक्तिहीन शिशु किस प्रकार आनंद लेते हैं
सबसे अच्छी आजीविका, जबकि मजबूत, जंगली जानवर सभी प्रकार की पीड़ा झेलते हैं
अभाव की; कैसे मूर्ख मछलियाँ मोटी हो जाती हैं, जबकि चालाक लोमड़ी और बंदर अपनी आजीविका की तलाश में दुबले हो जाते हैं।
जीविका के बीच एक विपरीत संबंध प्रतीत होता है
एक ओर प्राप्त शक्ति, तथा दूसरी ओर बल और इच्छाशक्ति।
कोई व्यक्ति जितना अधिक बल और इच्छाशक्ति पर निर्भर होगा, उसे जीविका प्राप्त करने में उतनी ही अधिक कठिनाई होगी।

उदारता। वसंत के दौरान, सभी पेड़ सजे हुए होते हैं
रेशम जैसा तामझाम, फूलों और फलों से ढका हुआ
मानो आभूषणों से सुसज्जित हो, और अनेक प्रकार की वस्तुएं प्रस्तुत करने के लिए तैयार किया गया हो
अपनी शाखाओं पर फैले बेहतरीन फलों के
एक नौकर की बाहों की तरह आगे बढ़ें। हमें मीठा और
डंक मारने वाली मधुमक्खी से प्राप्त पौष्टिक शहद, पोशाक
हाथ रहित रेशमकीट द्वारा बुने गए बेहतरीन और सबसे मुलायम कपड़े में, और दया का एक महान खजाना पाओ
हमारे लिए छोटे-छोटे बीजों में संग्रहित है।
क्या परम उत्तम दानशीलता, श्रेष्ठतम एवं सूक्ष्मतम दया भी ऐसा कर सकती है?

मानवता [और जिन्न] और कुछ जंगली जानवरों को छोड़कर
सभी प्राणी अपने कार्य पूर्ण सटीकता के साथ करते हैं, अपनी सीमाओं का उल्लंघन नहीं करते, तथा
गंभीर माहौल में पूरी तरह से आज्ञाकारी हैं
भय। इससे पता चलता है कि वे आदेश द्वारा कार्य करते हैं
सर्वोच्च ऐश्वर्य और अधिकार रखने वाले का।
इसी प्रकार, जिस प्रकार वनस्पति, पशु और मानव लोकों में सभी माताएं अपने असहाय शिशुओं का पालन-पोषण करती हैं
कोमलता और करुणा से उनका पालन-पोषण करके
दूध के साथ वृद्धि सर्वव्यापी दया को दर्शाती है।11

---

[11] एक भूखा शेर अपने बच्चे को खुद से ज्यादा पसंद कर सकता है और उसे खाने दे सकता है वह मांस जो वह सामान्यतः खाता था। एक डरपोक खरगोश
एक अंजीर के पेड़ की सामग्री
वह स्वयं कीचड़ में लिप्त रहता है, जबकि अपने बच्चों (फलों) को शुद्ध मिट्टी खिलाता है।
"दूध।" इस प्रकार वे असीम दयालु, उदारता वाले की आज्ञा का पालन करते हैं,

इस संसार के प्रतापी प्रभु एवं शासक ने
अनंत उदारता और दया, अनंत वैभव
और महिमा। उसकी उदारता के लिए अनंत देने की आवश्यकता है,
उसकी दया के लिए अपने योग्य अनुग्रह की आवश्यकता है,
और उसकी महिमा और वैभव को दंड की आवश्यकता है
जो लोग उनका अनादर करते हैं। चूँकि ऐसी विशेषताओं का केवल एक छोटा सा अंश ही स्थापित और प्रकट होता है

इस नश्वर संसार और जीवन की गति में लीन,
वहाँ एक धन्य क्षेत्र होना चाहिए जो इन इच्छाओं को पूरा कर सके

कर्तव्यों से इनकार करना। ऐसे क्षेत्र को नकारना मतलब है
हमारे लिए दया इतनी प्रत्यक्ष है कि यह उस सूर्य को नकारने जैसा होगा
जिसका अस्तित्व हमें प्रतिदिन प्रकाशित करता है।
पुनरुत्थान के बिना मृत्यु करुणा को पीड़ा में बदल देगी, प्रेम वियोग के दु:ख में, आशीर्वाद प्रतिशोधी अभिशाप में, तर्क को क्रोध में,

दु:ख और आनंद का साधन
दर्द। ऐसी घटनाओं से ईश्वरीय दया आती है
गायब होना।

सर्वशक्तिमान की महिमा और ऐश्वर्य के लिए भी दण्ड का एक क्षेत्र होना चाहिए।
दुनिया के उत्पीड़क अपनी दमनकारी शक्ति के साथ मरते हैं

और चिंता। इसी तरह, तथ्य यह है कि बेहोश पौधे
और जानवर सबसे उद्देश्यपूर्ण और सचेत तरीके से कार्य करते हैं
निर्विवाद रूप से दर्शाता है कि एक सर्वज्ञ और सर्वज्ञ है
उन्हें उनके कार्य सौंपें, और वे उसके नाम पर कार्य करें।

जब तक पीड़ित व्यक्ति का जीवन सुरक्षित है, तब तक वह अपमान सहता हुआ मरता है। ऐसे अपराधों को अनिवार्य रूप से सर्वोच्च न्यायाधिकरण के समक्ष स्थगित कर दिया जाता है; उन्हें कभी भी अनदेखा नहीं किया जाता। वास्तव में, कभी-कभी इस दुनिया में भी सज़ा दी जाती है।
पहले के अवज्ञाकारी और विद्रोही लोगों द्वारा सहन की गई यातनाएं यह दर्शाती हैं कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर का तेज और महिमा जो भी सुधार लागू करना चाहे, हम उससे बच नहीं सकते।

मानवता को उसे पहचानने और उस पर विश्वास करने से क्यों मना करना चाहिए, क्योंकि सृष्टि में हमारा सबसे बड़ा कर्तव्य है और इसलिए हमें सबसे महत्वपूर्ण क्षमताओं का आशीर्वाद प्राप्त है। इसके अलावा, हमारे प्रभु और पालनहार अपने व्यवस्थित कार्यों के माध्यम से खुद को प्रकट करते हैं।

मानवता को ईश्वर की आराधना के माध्यम से खुद को उसका प्रिय बनाकर उसका उत्तर क्यों नहीं देना चाहिए, क्योंकि वह अपनी दया के असंख्य, सुशोभित उपहारों के लिए खुद को हमसे प्रिय बनाता है। मानवता को उसे श्रद्धापूर्वक धन्यवाद और प्रशंसा के साथ उत्तर क्यों नहीं देना चाहिए, क्योंकि वह अपने अनुग्रह के उपहारों के माध्यम से हमें अपना प्रेम और दया दिखाता है।

क्या यह समझ में आता है कि हमें बिना किसी प्रतिफल और बिना किसी उत्तर के रहना चाहिए, कि वैभव और महिमा का महाप्रतापी परमेश्वर हमारे लिए प्रतिफल का क्षेत्र तैयार न करे? क्या यह समझ में आता है कि सर्व-दयालु और करुणामय परमेश्वर हमारे लिए प्रतिफल का क्षेत्र तैयार न करे?

स्थायी पुरस्कार और आनंद का क्षेत्र तैयार न करें
उन विश्वासियों के लिए जो उसके स्वयं के निर्माण का जवाब देते हैं
विश्वास में उसे पहचान कर जाना जाता है, आराधना में उससे प्रेम करके
स्वयं को प्रिय बनाना,
और उसकी दया को श्रद्धापूर्वक धन्यवाद देकर
प्रशंसा?

तीसरा सत्य: बुद्धि और न्याय का द्वार,
उनके नामों की अभिव्यक्तियाँ सर्वज्ञ और

वह महान् प्राणी, जो ब्रह्माण्ड की व्यवस्था, उद्देश्यपूर्णता, न्याय और संतुलन में अपने प्रभु होने की प्रभुता को प्रकट करता है ,

वह उन विश्वासियों पर अपना अनुग्रह नहीं दिखाएगा जो उसके अपने प्रभु और प्रभु होने की सुरक्षा चाहते हैं, जो

---

[12] इस और अन्य तर्कों में, ऐसे प्रश्नवाचक शब्द और
वाक्यांश जैसे कि हो सकता है, होगा, क्या यह बोधगम्य है, और क्या यह संभव है
ये बातें एक बहुत ही महत्वपूर्ण सत्य की ओर संकेत करती हैं:
गलत मार्गदर्शन और विश्वास की कमी अक्सर आदत से उत्पन्न होती है
चीजों को असंभव या समझ से परे मानने की कल्पना करना और फिर
उन्हें नकारना। पुनरुत्थान की हमारी चर्चा में, हमने तर्क दिया
इस बात पर जोर देते हुए कि वास्तविक असंभवता, बेतुकापन और तर्कहीनता अविश्वास और गुमराही के रास्ते पर आती है,
जबकि वास्तविक संभावना, सुविधा और तर्कसंगतता विश्वास के व्यापक राजमार्ग (इस्लाम) की विशेषताएं हैं। संक्षेप में, भौतिकवादी और प्रकृतिवादी दार्शनिक संभावनाओं को असंभव मानकर अविश्वास की ओर बढ़ते हैं, जबकि दसवां शब्द,

ऊपर बताए गए शब्दों का प्रयोग इस ओर इशारा करता है कि
यह सचमुच असंभव है।

क्या वह उन लोगों को दंडित नहीं करेगा जो उसकी बुद्धि और न्याय को नकारते हुए उसके विरुद्ध विद्रोह करते हैं? चूँकि इस क्षणभंगुर दुनिया में मानवता के संबंध में उसकी बुद्धि और न्याय की केवल एक छोटी सी मात्रा ही स्थापित है, इसलिए उन्हें स्थगित किया जाना चाहिए। अधिकांश गुमराह लोग बिना दण्ड के मर जाते हैं, और अधिकांश निर्देशित लोग बिना पुरस्कार के मर जाते हैं। ऐसे मामलों को निश्चित रूप से एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण, एक परम संतोष के लिए स्थगित कर दिया जाता है।

जो इस दुनिया को चलाता है, वह अनंत बुद्धि के अनुसार ऐसा करता है। हम इसे इस बात में देख सकते हैं कि सभी चीज़ों का उपयोग कैसे किया जाता है और दूसरों को कैसे लाभ पहुँचाया जाता है।

क्या आपने नहीं देखा कि प्रत्येक मानव अंग, हड्डी और नस, साथ ही साथ आपके शरीर में प्रत्येक मस्तिष्क कोशिका और प्रत्येक कोशिका परमाणु कितने बुद्धिमान उद्देश्यों को पूरा करते हैं? वास्तव में, उद्देश्य एक पेड़ के फलों जितने असंख्य हैं। यह पुष्टि करता है कि सब कुछ अनंत बुद्धि के अनुसार व्यवस्थित है। एक और सबूत वह पूर्ण व्यवस्थितता है जिसमें सब कुछ गढ़ा गया है।

एक छोटे से बीज में फूल के विकास के संपूर्ण, सटीक कार्यक्रम का लघुकरण, साथ ही नियति की कलम द्वारा एक बड़े वृक्ष के बीज को उसके जीवन-इतिहास और उसके सभी भागों का सूचकांक बनाना, यह दर्शाता है कि

उस कलम में एक परम ज्ञान है। सभी चीजों में सूक्ष्म कलात्मकता की पूर्णता एक असीम बुद्धिमान कलाकार की छाप को साबित करती है। एक सूचकांक सहित
एक छोटे से मानव शरीर के भीतर सभी प्राणियों का, साथ ही
दया के खजाने की कुंजी और दर्पण के रूप में
सभी दिव्य नामों को प्रतिबिंबित करते हैं, आगे बुद्धि को दर्शाता है–
उस असीम सूक्ष्म कलात्मकता के भीतर डोम।
यह बुद्धि, जो कार्यों में इतनी व्याप्त है
मैं उन लोगों का पक्ष नहीं लेना चाहता जो सदैव उस प्रभुता की सुरक्षा में शरण चाहते हैं और जो
विश्वास के साथ आज्ञाकारिता की पेशकश करें?

क्या आपको यकीन दिलाने की ज़रूरत है कि सब कुछ हो गया है
न्याय और संतुलन के साथ? तथ्य यह है कि सभी चीजें
अस्तित्व और रूप दिया जाता है, और फिर एक सटीक संतुलन और माप के अनुसार रखा जाता है, पर्याप्त है
आपके लिए सबूत। तथ्य यह है कि सब कुछ प्राप्त होता है
जो कुछ भी उसे अपनी प्रकृति के अनुसार सबसे उपयुक्त रूप में चाहिए,
वह अनंत शक्ति के हाथ द्वारा छोड़ा गया संकेत है।
न्याय। हर याचिका और दलील भाषा में बोली गई
स्वभाव की, प्राकृतिक आवश्यकता या अनिवार्यता की, भी
अनंत न्याय और बुद्धिमता को दर्शाता है.

क्या यह संभव है कि न्याय और बुद्धि
क्या सृष्टि के सबसे छोटे सदस्य की आवश्यकताओं की पूर्ति में जल्दबाजी करना, उसके सबसे महत्वपूर्ण सदस्य (मानवता) की सबसे बड़ी आवश्यकता (अमरता) की पूर्ति नहीं करेगा?

क्या यह कल्पना की जा सकती है कि यह हमारी सबसे बड़ी विनती और मदद के लिए पुकार का जवाब देने में विफल रहेगा, या यह कि यह अपने सेवकों को पुरस्कृत करके भगवान के भगवान होने की गरिमा को बनाए नहीं रखेगा? हम इस क्षणभंगुर दुनिया में न्याय के सच्चे सार का अनुभव नहीं कर सकते, क्योंकि हमारा जीवन बहुत छोटा है। इसलिए मामला स्थगित कर दिया गया है

सर्वोच्च न्यायाधिकरण को सौंप दिया गया।

न्याय का सच्चा सार यह है कि हमें हमारी दिखावटी तुच्छता के अनुसार पुरस्कृत और दंडित नहीं किया जाए, बल्कि हमारे गलत कामों की महानता और हमारे स्वभाव तथा हमारे कार्य के महत्व के अनुसार किया जाए। चूँकि यह क्षणभंगुर दुनिया इतनी मात्रा में ज्ञान और न्याय प्रकट नहीं कर सकती, क्योंकि मानवता अनंत काल के लिए बनाई गई है, इसलिए सर्व-न्यायप्रिय और सर्व-बुद्धिमान द्वारा उनकी कृपा और भय के अनुरूप एक शाश्वत नर्क और एक शाश्वत स्वर्ग अवश्य बनाया जाना चाहिए।

चौथा सत्य: उदारता और सौंदर्य का द्वार, उदार और सुंदर नामों की अभिव्यक्ति। क्या असीमित उदारता और उदारता, अक्षय संपदा और खजाने, अद्वितीय शाश्वत सौंदर्य और अनुग्रह, साथ ही शाश्वत पूर्णता, कृतज्ञ याचकों के अस्तित्व की मांग नहीं करेगी, साथ ही आश्चर्यचकित और तड़पते हुए दर्शकों की भी, जो स्थायी रूप से निवास करने के लिए नियत हैं-

क्या यह संसार आनन्दपूर्ण विश्राम के निवास में है?
अनेक सुन्दर वस्तुओं से सुशोभित, सूर्य
और चंद्रमा इसके दीपक के रूप में काम करते हैं, ग्रह की सतह
बेहतरीन किस्म के भोजन से भरपूर है—

भरपूर दावत, पेड़ों पर फल जैसे
इतने सारे व्यंजन और प्रत्येक को कई बार नवीनीकृत किया गया
यह सब असीमित के अस्तित्व को दर्शाता है-

उदारता एवं उदारता का प्रतीक है।

दया के ऐसे अक्षय खजाने की आवश्यकता है
आनंदमय विश्राम का एक शाश्वत निवास जिसमें सभी वांछित वस्तुएं मौजूद हैं।
उन्हें यह भी चाहिए कि
जो लोग इसका आनंद लेते हैं उन्हें हमेशा वहीं रहना चाहिए,
बिना समाप्ति और अलगाव के दर्द को झेले। दर्द का अंत एक तरह का आनंद है, और
सुख का अंत एक तरह का दर्द है। चूंकि असीमित उदारता ऐसी चीज की अनुमति नहीं दे सकती, इसलिए स्वर्ग अवश्य ही होना चाहिए
शाश्वत हो और उसके निवासियों को उसमें सदैव रहना होगा-

अंत में. असीमित उदारता और उदारता की इच्छा
असीम उदारता और दया प्रदान करें, जिसके लिए
अनंत आभार। इस प्रकार, जो लोग प्राप्त करने वाले हैं और
इस निरंतर प्रदान के लिए निरंतर धन्यवाद दें
उदारता हमेशा जीवित रहेगी। थोड़ी सी संतुष्टि,
इसकी संक्षिप्तता या समाप्ति से खराब हो गया है, असंगत है
असीमित उदारता और उदारता के साथ.

विश्व के विभिन्न क्षेत्रों पर विचार करें, कि कैसे
प्रत्येक ईश्वर की कृति को प्रदर्शित करता है और उसकी घोषणा करता है
सभी पौधों और जानवरों की विविधता में भगवान होने के नाते।13 उन पैगम्बरों और संतों की बात सुनो जो भगवान की सुंदरता का बखान करते हैं। वे भगवान की सुंदरता की ओर इशारा करते हैं।
राजसी निर्माता की दोषरहित पूर्णता को समझें और उनकी चमत्कारी कलाओं का प्रदर्शन करें, जिससे हमारा
प्रशंसा.

इस संसार का निर्माता अपनी सृष्टि को बनाना चाहता है।

सबसे महत्वपूर्ण, आश्चर्यजनक और छिपी हुई परिपूर्णताएँ
उनकी चमत्कारी कलाओं के माध्यम से जाना जाता है। छिपी हुई पूर्णता उन लोगों द्वारा जानी जाने की लालसा रखती है जो गौर से देखेंगे
इस पर प्रशंसा और सराहना के साथ। शाश्वत
पूर्णता के लिए शाश्वत अभिव्यक्ति की आवश्यकता होती है, जो
बदले में उन लोगों के शाश्वत अस्तित्व की आवश्यकता है
जो इसकी सराहना और प्रशंसा करेंगे।
पूर्णता अपने प्रशंसक की दृष्टि में कम हो जाती है
यदि उत्तरार्द्ध शाश्वत नहीं है.14

---

[१३] एक शानदार आकार का, एक चमकदार गुंबददार फूल, एक सबसे
तार की तरह बारीक टहनी पर कलात्मक ढंग से गढ़ा गया रत्न जैसा फल और
पेड़ की कठोर शाखा से जुड़ी हुई - ऐसी चीजें घोषणा करती हैं
एक अत्यंत कुशल, बुद्धिमान और चमत्कारी फैशनर की उत्कृष्ट कलाकारी
सभी सजीव प्राणियों के लिए। यही बात जानवरों और पौधों के लिए भी सच है
राज्य.

[14] एक प्रसिद्ध सुंदरी ने एक बार एक आम आदमी को अस्वीकार कर दिया था
वह उस पर मोहित हो गया। खुद को सांत्वना देने के लिए, उस आदमी ने कहा:

शानदार अलंकरण और सुंदर हस्तकला

पृथ्वी के सभी प्राणियों का कार्य एक अद्वितीय पारलौकिक अनुग्रह और बिंदु के आयामों की गवाही देता है
एक छिपे हुए सौंदर्य के सूक्ष्म पहलुओं के लिए, जैसे सूर्य का प्रकाश सूर्य के अस्तित्व की गवाही देता है।१५ उस पारलौकिक सौंदर्य, उस पवित्रता का प्रत्येक मानव-प्रदर्शन
अनुग्रह, असंख्य अदृश्य के अस्तित्व की ओर इशारा करता है
भगवान के प्रत्येक नाम में खजाना है। इतना ऊंचा, अद्वितीय और छिपा हुआ सौंदर्य खुद को एक में निहारना चाहता है
दर्पण, इसकी डिग्री और माप को प्रतिबिंबित देखने के लिए
सजीव प्राणियों में, और इस प्रकार प्रकट होना कि
वह स्वयं को दूसरों की नजर से देख सकता है।

संक्षेप में, सौंदर्य और अनुग्रह देखना और दिखना चाहेंगे और इस प्रकार उत्सुक गवाहों और चकित प्रशंसकों के अस्तित्व की आवश्यकता है। चूँकि दिव्य सौंदर्य है

"वह कितनी बदसूरत है!" और इस तरह उसकी सुंदरता को नकार दिया गया। एक बार एक भालू
एक बेल की जाली के नीचे खड़ा था और अंगूर खाने के लिए तरस रहा था
अंगूरों तक पहुँचने या जाली पर चढ़ने में असमर्थ, उन्होंने कहा
खुद को सांत्वना देते हुए कहा: "अंगूर खट्टे होंगे,"
और गुर्राता हुआ अपने रास्ते चला गया।

15 जबकि सभी प्राणी दिव्य सौंदर्य के दर्पण के रूप में कार्य करते हैं
जो निरंतर चले जाते हैं और लुप्त हो जाते हैं, दूसरे उनके स्थान पर आ जाते हैं, अपने रूप और विशेषताओं में उसी सौंदर्य को प्रकट करते हैं। यह
यह दर्शाता है कि ऐसी सुन्दरता उनकी नहीं है; बल्कि,
सुंदरता के दृश्य उदाहरण सुंदरता के संकेत और संकेत हैं
एक पारलौकिक, पवित्र सौंदर्य.

शाश्वत और चिरस्थायी होने के कारण, इसके साक्षी और प्रशंसक भी शाश्वत होने चाहिए, क्योंकि शाश्वत सौंदर्य क्षणिक प्रशंसकों से कभी संतुष्ट नहीं हो सकता।

एक प्रशंसक को स्थायी अलगाव की सजा
अलगाव का विचार आते ही घृणा में बदल जाएगा
प्रशंसा बुरी राय को जन्म देती है, और
सम्मान अवमानना में बदल जाता है। जिस तरह जिद्दी लोग उन चीज़ों के दुश्मन हो सकते हैं जिन्हें वे नहीं जानते,
वे उन चीजों का विरोध करते हैं जो उनकी पहुंच से परे हैं।
एक सीमित प्रेम उस सुंदरता का जवाब देता है जो योग्य है
मौन शत्रुता, घृणा और असीम प्रशंसा के साथ
अस्वीकृति। यह एक बहुत बड़ा कारण है कि अविश्वासी लोग परमेश्वर से नफरत क्यों करते हैं।

ऐसी असीमित उदारता और उदारता, अद्वितीय सौंदर्य और पूर्ण पूर्णता के लिए आवश्यक है
अनंत लालसा और कृतज्ञता के साथ याचकों और प्रशंसकों का अस्तित्व।
लेकिन इस अस्थायी दुनिया का
निवासी उस उदारता का स्वाद चखकर चले जाते हैं
केवल उनकी भूख बढ़ाने के लिए पर्याप्त समय।
वे पूर्णता के प्रकाश की एक धुंधली छाया मात्र हैं
पूरी तरह से संतुष्ट नहीं हैं। इस प्रकार हम निश्चिंत हो सकते हैं कि हम संतुष्ट हैं
अनंत आनंद के स्थान की यात्रा जहाँ हम
हमें जो मिलना चाहिए, वह हमें पूरा मिलना चाहिए। संक्षेप में,
जिस प्रकार यह संसार और इसके प्राणी महाप्रतापी सिद्ध होते हैं

सृष्टिकर्ता का अस्तित्व, उसके पवित्र गुण और नाम

परलोक के अस्तित्व की ओर संकेत करते हैं और उसे आवश्यक बताते हैं।

पांचवां सत्य: करुणा का द्वार और
पैगंबर की ईमानदारी से की गई पूजा-अर्चना, प्रार्थना के उत्तरदाता के नामों का प्रकटीकरण और
दयालु। क्या यह कल्पना की जा सकती है कि एक भगवान
असीम करुणा और दया, जो अत्यंत दयालुता से अपने सबसे दीन व्यक्ति की छोटी से छोटी आवश्यकता को भी पूरा करते हैं
सबसे अप्रत्याशित तरीके से जीव, जो
अपने सबसे अस्पष्ट की मदद की सबसे कमजोर पुकार का जवाब देता है
प्राणी, और जो सभी याचिकाओं का जवाब देगा
अपने सबसे प्रिय प्राणी, अपने सबसे प्रमुख सेवक की सबसे बड़ी प्रार्थना को अनदेखा करना,

उसकी सबसे उत्तम प्रार्थना क्या है?

पालन-पोषण में प्रकट हुई कोमल चिंता
कमज़ोर, युवा जानवर दिखाते हैं कि प्रभु यहोवा
ब्रह्मांड का स्वामी अनंत दया के साथ अपना प्रभुत्व प्रदर्शित करता है।
क्या यह कल्पना की जा सकती है कि ऐसी करुणा
और प्रभुता के प्रयोग में दया से इंकार कर दिया जाएगा
सबसे पुण्य और सुंदर की प्रार्थना

सारी सृष्टि?१६ इस महान सत्य को पवित्र आत्मा के वचन बाइबल में समझाया गया है।

---

16 अर्थात, पैगम्बर, जिन्होंने 14 शताब्दियों तक शासन किया
अरबों लोग जो प्रतिदिन उसके प्रति अपनी निष्ठा नवीनीकृत करते हैं,
लगातार उसकी परिपूर्णताओं की गवाही देते रहो, और उसकी आज्ञा का पूरी तरह पालन करो
आज्ञाएँ। उनके आध्यात्मिक स्वभाव ने आधे हिस्से को आकार दिया है

उन्नीसवाँ शब्द, लेकिन हम यहाँ तर्क को दोहराते हैं।

हमने दृष्टांत में एक निश्चित भूमि पर आयोजित एक बैठक का उल्लेख किया, जिसमें एक बहुत ही महान सेनापति ने भाषण दिया। इस दृष्टांत की सच्चाई को जानने के लिए, कल्पना करें कि हम पैगंबर के धन्य युग के दौरान अरब प्रायद्वीप में वापस जा सकते हैं, और उनसे मिलने और उन्हें अपने कर्तव्यों और पूजा का पालन करते हुए देख सकते हैं। वह शाश्वत सुख प्राप्त करने का साधन है, क्योंकि वह संदेशवाहक और मार्गदर्शन करने वाला है, साथ ही वह उस सुख की रचना का कारण भी है - अपनी पूजा और प्रार्थना के माध्यम से स्वर्ग का निर्माण।

देखिए, वह किस तरह से इतनी उत्तम प्रार्थना और उत्कृष्ट उपासना के साथ अनंत सुख के लिए प्रार्थना कर रहा है। ऐसा लगता है मानो प्रायद्वीप, बल्कि पूरी दुनिया, उसके साथ प्रार्थना कर रही हो और उसके लिए विनती कर रही हो।

पृथ्वी और मानवता के एक-चौथाई हिस्से का वह सबसे प्रिय प्राणी है। वह मानवता के दिलों का प्रिय, उनकी आत्माओं का मार्गदर्शक और दुनिया के भगवान का सबसे महान सेवक है। चूँकि सृजित प्राणियों के अधिकांश क्षेत्र उसके चमत्कारों के फल को उत्पन्न करने के माध्यम से उसे सौंपे गए कर्तव्य और भूमिका की सराहना करते हैं, इसलिए वह सभी सृष्टिकर्ता का सबसे प्रिय प्राणी है। इसके अलावा, हमारे स्वभाव में निहित स्थायित्व और निरंतरता की इच्छा, जो हमें निम्नतम से उच्चतम स्तर तक उठाती है, सबसे बड़ी इच्छा और प्रार्थना है, और इसे सभी आवश्यकताओं के प्रदाता को केवल उसके सबसे महान सेवक द्वारा ही प्रस्तुत किया जा सकता है।

उनकी उपासना में उनके समुदाय की उपासना के साथ-साथ अन्य सभी पैगम्बरों की उपासना के आवश्यक तत्व भी सम्मिलित हैं, क्योंकि वे सभी एक ही प्रभु की आज्ञा का पालन करते थे।

वह इतने सारे प्राणियों के बीच अपनी सर्वोच्च प्रार्थना और विनती करता है कि ऐसा लगता है मानो आदम के समय से लेकर आज तक के सभी महान और सिद्ध लोग प्रार्थना में उसका अनुसरण कर रहे हैं और उसकी याचिका पर “आमीन” कह रहे हैं।17 वह इतनी सार्वभौमिक आवश्यकता—अमरता—के लिए प्रार्थना कर रहा है कि सृष्टि के सभी निवासी उसमें हिस्सा लेते हैं और मन ही मन पुष्टि करते हैं: “हे प्रभु, उसकी प्रार्थना स्वीकार करें, क्योंकि हम भी इसकी इच्छा रखते हैं।” वह इतनी करुण भावना और लालसा के साथ अनंत सुख की याचना करता है कि सृष्टि आंसुओं से भर जाती है और उसकी याचना में हिस्सा लेती है।

देखिये वह किस प्रकार खुशी की कामना करता है और उसके लिए प्रार्थना करता है।

ऐसा उद्देश्य और लक्ष्य सभी प्राणियों को ऊपर उठाता है

[17] पैगंबर की पहली याचिका से लेकर अब तक, उन पर शांति और आशीर्वाद के सभी आह्वान उनकी प्रार्थना के बाद एक निरंतर "आमीन" की तरह हैं, एक सार्वभौमिक भागीदारी। अल-शफीई लिखते हैं कि किसी की प्रार्थना के दौरान प्रत्येक ऐसा आह्वान, और निर्धारित प्रार्थनाओं के दौरान पूजा के लिए दूसरे आह्वान के बाद उनके लिए प्रार्थना, शाश्वत खुशी के लिए उनकी याचिका के लिए एक शक्तिशाली और सार्वभौमिक "आमीन" है। मानवता द्वारा अपनी आदिम प्रकृति के अनुरूप, अनंत काल और शाश्वत खुशी की इतनी प्रबल इच्छा, पैगंबर द्वारा उनके लिए वांछित है, और मानवता का शानदार वर्ग उनके बाद कहता है: "आमीन!" क्या ऐसी सार्वभौमिक याचिका को स्वीकार नहीं किया जा सकता था?

विनाश की खाई, बेकार और लक्ष्यहीन
व्यर्थता, मूल्य के शिखर तक, उच्च उद्देश्य, और
अनंत जीवन। यह सब कुछ स्टेशन तक पहुंचाता है
यह ईश्वर द्वारा लिखी गई एक लिपि है, जो हमेशा से सभी के लिए प्रार्थना करने वाला है। उसकी प्रार्थना इतनी महान है, एक मांग है
दया इतनी मधुर है, मानो उसने सभी को प्रेरित किया हो
प्राणियों, स्वर्ग और दिव्य सिंहासन को सुनने के लिए
और उसके शब्दों को हर्षित स्वर में “आमीन” कहकर दोहराएँ,
O Lord, Amen!”18

---

18 क्या इस संसार के स्वामी, जिनके सभी कार्य स्वतःसिद्ध रूप से उनकी पूर्ण जागरूकता, ज्ञान और पर आधारित हैं, उन्हें इस प्रकार समझा जा सकता है?
बुद्धि, अपने सबसे बड़े प्राणी के कर्मों और प्रार्थनाओं से अनभिज्ञ और अनभिज्ञ रहते हुए, उनके प्रति उदासीन रहती है या उन्हें महत्वहीन समझती है? जागरूक रहते हुए और उदासीन न रहते हुए,
सर्वशक्तिमान और दयालु प्रभु क्या यह संभव है कि
दुनिया उसकी प्रार्थना स्वीकार नहीं करती? मुहम्मद की रोशनी
दुनिया का स्वरूप बदल दिया। मानवता का सच्चा सार और
ब्रह्मांड में सभी प्राणियों का अस्तित्व उसके माध्यम से स्पष्ट हो गया
प्रकाश; अर्थात्, प्रत्येक शाश्वत रूप से मांगे गए परमेश्वर का एक संदेश है
दिव्य नामों का उद्घोष करने वाला; एक मूल्यवान, सार्थक
ईश्वर प्रदत्त कार्यों के साथ और अनंत काल के लिए नियत।
यदि वह प्रकाश न होता, तो प्राणी विनाश की निंदा करते; मूल्यहीन, अर्थहीन, या उपयोगहीन; भ्रमपूर्ण प्रभाव
अंधे संयोग और भ्रम के अंधकार में खोया हुआ। यही कारण है कि
जैसे मानवता पैगंबर की प्रार्थना पर "आमीन" कहती है, पृथ्वी की सतह से लेकर दिव्य सिंहासन तक सभी अन्य प्राणी,
धरती से लेकर सितारों तक, उनकी रोशनी पर गर्व करते हैं और उनके साथ अपने संबंध का दावा करते हैं। पैगम्बर की आत्मा ही

वह उस एक, सर्व-उदार और सर्वशक्तिमान, सर्व-देखने वाले, दयालु और सर्वज्ञ से शाश्वत सुख की कामना करता है, जो अपने सबसे अस्पष्ट प्राणी की सबसे गुप्त इच्छा और छोटी से छोटी इच्छा को प्रत्यक्ष रूप से देखता है, सुनता है, स्वीकार करता है और उस पर दया करता है। वह सभी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है और अपनी कृपाओं को इतनी बुद्धिमानी और उपयुक्त दया के साथ प्रदान करता है कि कोई भी संदेह नहीं कर सकता कि जो ऐसा करता है वह सर्व-श्रवण करने वाला, सर्व-देखने वाला, उदार और दयालु है।

सब को याचना करने में क्या घमण्ड है?

वह मानवता के सम्मान का स्रोत है, वह अद्वितीय व्यक्ति है जो इस धरती पर अपने पीछे पूरी मानवता के साथ खड़ा है और अपने हाथों को भगवान के सिंहासन की ओर खोलकर प्रार्थना करता है। वास्तव में, उसकी पूजा और भगवान के प्रति सेवा में हमारी पूजा शामिल है और यही इसका सार है। वह अपने और सभी विश्वासियों के लिए अनंत खुशी, अनंत काल और स्वर्ग की माँग करता है।

वह सभी पवित्र दिव्य नामों के माध्यम से प्रार्थना करता है, जिनकी सुंदरता सभी सृजित प्राणियों में प्रतिबिम्बित होती है। निश्चित रूप से आप देखते हैं कि वह उन नामों से मध्यस्थता की मांग कर रहा है। भले ही वे नाम न हों

प्रार्थना शाश्वत सुख के लिए प्रार्थना है। ब्रह्मांड की सारी गतियाँ और कार्य मूलतः प्रार्थना ही हैं, जैसे कि उदाहरण के लिए, एक बीज का पेड़ बनने तक बढ़ना, सर्व-पालन करने वाले सृष्टिकर्ता से प्रार्थना का एक रूप है।

इसके लिए अनगिनत अन्य कारण और वजहें हैं, उनकी एक ही प्रार्थना स्वर्ग बनाने के लिए पर्याप्त होगी,
दयालु ईश्वर की शक्ति के लिए यह कार्य वसंत उत्पन्न करने जितना ही आसान है।

किसी के लिए स्वर्ग बनाना कितना कठिन हो सकता है?
सर्वशक्तिमान, जो हर वसंत में पृथ्वी की सतह को नवीनीकरण का एक विशाल क्षेत्र बनाता है और अनगिनत पुनरुत्थान लाता है? ठीक उसी तरह जैसे पैगंबर का होना
मैसेंजर ही इसकी स्थापना का कारण था
परीक्षण का क्षेत्र जैसा कि हदीस कुदसी में उल्लेख किया गया है—
लेकिन तुम्हारे लिए, मैंने दुनिया नहीं बनाई होगी
यह इस बात का संकेत है - उनकी पूजा ही इसका कारण थी
सुख के निवास की स्थापना के लिए।

क्या परमेश्वर के प्रभु होने की उत्तम कलात्मकता और अद्वितीय सुन्दरता, जो सृष्टि की अद्भुत सुव्यवस्था और व्यापक दया में देखी जा सकती है, उसे अस्वीकार कर देगी?
पैगंबर की प्रार्थना और इस तरह चरम की अनुमति देता है
कुरूपता, निर्दयता और कलह? क्या सर्व-पालक भगवान सबसे तुच्छ इच्छा को सुनेंगे और उसे स्वीकार करेंगे, लेकिन सबसे बड़ी और सबसे महत्वपूर्ण इच्छा को बेकार मानकर अस्वीकार कर देंगे? नहीं, वह ऐसा नहीं करेंगे! ऐसी

सुन्दरता कभी भी ऐसी कुरूपता को सहन नहीं कर सकती और
जिससे वह खुद को बदसूरत बना ले। जैसे पैगंबर ने खोला
ईश्वर के दूत बनकर इस संसार के द्वारों पर
उसकी उपासना करने से परलोक के द्वार खुल जाते हैं।

उस पर दयालु अल्लाह की कृपा हो,
उस सीमा तक जो इस संसार और

बागों का घर-जन्नत। हे ईश्वर, अपने बन्दे और रसूल पर कृपा और शांति प्रदान कर, ताकि
प्रियतम जो दोनों लोकों का स्वामी है,
सभी लोकों का गौरव, दोनों लोकों में जीवन का स्रोत,
यहाँ और परलोक में सुख प्राप्ति के साधन
इसके बाद जो व्यक्ति नबूवत और
वह स्वयं एक सन्देशवाहक थे, जिन्होंने इस लोक और परलोक में सुखी जीवन के सिद्धांतों का उपदेश दिया,
मानवता और जिन्न का रसूल कौन है?
उसे, उसके परिवार को, उसके सभी साथियों को, साथ ही उसके
साथी नबियों और संदेशवाहकों। आमीन।

छठा सत्य: महिमा और अनंत काल का द्वार,
सर्व-महान् नामों का प्रकटीकरण
और सर्व-स्थायी। क्या यह कल्पना की जा सकती है कि

वह प्रभु है, और उसकी आज्ञा से वह महान है
सभी प्राणियों को आज्ञाकारी सैनिकों की तरह वश में कर लेना चाहिए
इस में क्षणभंगुर प्राणियों पर पूरी तरह ध्यान केंद्रित करें
अस्थायी दुनिया बनाना, और स्थायी क्षेत्र नहीं बनाना
स्वयं को सदैव प्रभु होने का प्रकटीकरण करने के लिए?
ऋतु परिवर्तन में दिव्य महिमा दिखती है, ग्रहों की ऐसी शानदार परिक्रमा मानो वे विमान हों, हर वस्तु की व्यवस्थितता, पृथ्वी की रचना हमारे पालने के समान

और सूर्य को अपना दीपक बनाना, और सूखी, मृत पृथ्वी को पुनर्जीवित करना
और उसे सजाना जैसे विशाल परिवर्तन करना -

ये सभी दर्शाते हैं कि एक उत्कृष्ट प्रभुत्व, एक राजसी संप्रभुता, जो दिखाई देने वाले पर्दे के पीछे शासन करती है।

उस अनंत, गौरवशाली संप्रभुता के लिए अपने योग्य विषयों के साथ-साथ उपयुक्त साधन की भी आवश्यकता होती है
इसकी अभिव्यक्ति के लिए। लेकिन मानवता, दुनिया की सबसे बड़ी शक्ति
महत्वपूर्ण निवासी और सबसे अधिक धन्य
व्यापक कार्यों, यहाँ रहने के लिए इकट्ठा किया जाता है
यह केवल कुछ समय के लिए ही है और इसकी स्थिति दयनीय है।
दुनिया रोज़ भरती और खाली होती है, साथ ही साथ
हर घंटे बदलाव होता है, और हम सेवा में परीक्षण के लिए केवल अस्थायी रूप से ही रहते हैं।
विषय संभावित खरीदारों की तरह हैं जो आते हैं
कीमती उपहारों के नमूने देखने के लिए कुछ समय
राजसी निर्माता द्वारा प्रदान की गई, उनकी चमत्कारी
इस दुनिया के प्रदर्शन में कला के काम। वे
जल्द ही चले जाओ, जबकि तमाशा हर बार बदलता है
जो चला जाता है वह कभी वापस नहीं आता, और जो आता है वह अंततः चला जाता है।

ऐसी वास्तविकता यह तर्क देती है कि पीछे और परे
यह संसार और इसकी गतिविधियाँ एक स्थायी, शाश्वत निवास है जो
ईश्वर की शाश्वत सत्ता को पूरी तरह से प्रकट करता है
संप्रभुता - महल, उद्यान, खजाना घर
शुद्ध और उत्तम मूल सामग्री से भरा हुआ
यहाँ हम जो फॉर्म और प्रतियाँ देखते हैं, हम उनके लिए प्रयास करते हैं
वहाँ हमारा क्या इंतज़ार है। हम यहाँ मेहनत करते हैं और पुरस्कृत होते हैं-

वहाँ आनंद सभी का इंतजार कर रहा है, बशर्ते कि वे
हारे हुए लोगों में से नहीं, और उसके अनुसार आनंद लिया जाता है
प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता। संक्षेप में, एक शाश्वत संप्रभुता केवल उस क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकती है जिसका
क्षणभंगुरता इसे दयनीय बना देती है।

इस उदाहरण पर विचार करें: यात्रा करते समय, आप
एक महान व्यक्ति द्वारा उन लोगों के लिए बनाया गया एक कारवांसेराई देखें उनसे मिलने आ रहे हैं।
खर्च के बिना, यह मेहमानों को रात भर ठहरने के दौरान प्रसन्नता और शिक्षा प्रदान करता है। वे उनमें से बहुत कम ही देख पाते हैं
सजावट, और केवल बहुत ही कम समय के लिए।
जो कुछ दिया गया है, उसका आनंद संक्षेप में चखने के बाद, उन्होंने
वे अपनी यात्रा पर असंतुष्ट होकर आगे बढ़ते हैं।
प्रत्येक अतिथि कारा-वानसेराई में वस्तुओं की तस्वीरें लेता है, जबकि महान व्यक्ति के सेवक रिकॉर्ड करते हैं
प्रत्येक अतिथि के आचरण की निगरानी करना तथा उसका रिकार्ड सुरक्षित रखना।
मेहमान यह देखते हैं कि अधिकांश शानदार सजावट को नए आने वाले मेहमानों के लिए प्रतिदिन नए सामानों से बदल दिया जाता है।

यह सब देखने के बाद, एकमात्र उचित निष्कर्ष यह है कि कारवां सराय के मालिक ने अवश्य ही ऐसा किया होगा।

स्थायी उच्च निवास, अक्षय और बहुमूल्य खजाने, और असीमित उदारता का निर्बाध प्रवाह। वह अपनी उदारता को दर्शाता है

अपने मेहमानों की भूख जगाने के लिए कारवां सराय

वह उन्हें अपनी तत्काल उपस्थिति में रखता है, तथा उनके लिए तैयार किए गए उपहारों के प्रति उनकी इच्छा को जागृत करता है।

यदि आप इस संसार पर निर्मल एकाग्रता से विचार करेंगे, तो आप नौ सिद्धांतों को समझ जायेंगे।
सिद्धांत नीचे बताए गए हैं:

• पहला सिद्धांत: यह दुनिया (कारवां सराय)

न तो यह अस्तित्व में है और न ही इसने स्वयं यह आकार ग्रहण किया है।

बल्कि, यह एक अच्छी तरह से निर्मित छात्रावास है, जो बुद्धिमानी से उन प्राणियों के

कारवां को प्राप्त करने के लिए डिज़ाइन किया गया है जो

लगातार आते हैं, कुछ देर रुकते हैं और फिर चले जाते हैं। • दूसरा

सिद्धांत: हम यहाँ मेहमान हैं, हमारे उदार भक्तों द्वारा शांति के धाम में
आमंत्रित किए गए हैं ।
पालनकर्ता.

• तीसरा सिद्धांत: इस संसार का श्रृंगार
हमारी भूख को जगाने के लिए हैं।
अस्थायी और अलग होने पर दर्द देते हैं, वे
हम यहां केवल ज्ञान की शिक्षा देने, कृतज्ञता जगाने और हमें
स्थायी खोज करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए हैं
वे मूल प्रतियाँ हैं जिनकी वे प्रतिलिपियाँ हैं।19 संक्षेप में,
वे स्वयं से कहीं परे ऊँचे लक्ष्य हैं।

19 सभी सांसारिक चीजों का जीवनकाल छोटा है, जबकि उनकी
मूल्य और उनके निर्माण में सूक्ष्मताएं सबसे अधिक उत्कृष्ट और सुंदर हैं। इसका तात्पर्य यह है कि हर चीज केवल दर्शकों की निगाह को उसके प्रामाणिक मूल की ओर आकर्षित करने का एक नमूना मात्र है।
इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इस संसार के विविध श्रृंगार

• चौथा सिद्धांत: दुनिया के श्रृंगार, ईश्वर की दया से ईमान वालों के लिए स्वर्ग में संग्रहित आशीर्वादों के नमूने और रूप हैं।20

ये स्वर्ग की नेमतों के नमूने हैं, जो दयालु और कृपालु अल्लाह ने अपने प्रिय बन्दों के लिए तैयार किये हैं।

20 हर चीज़ कई उद्देश्यों के लिए अस्तित्व में है, और इसके कई परिणाम होते हैं। ये उद्देश्य और प्रभाव, जैसा कि गुमराह लोग मानते हैं, सिर्फ़ इस दुनिया और मानवता से संबंधित नहीं हैं; बल्कि, वे इन तीन श्रेणियों से संबंधित हैं: पहला और सबसे ऊंचा सृष्टिकर्ता से संबंधित है: उसकी नज़र में उन शानदार ढंग से सजे हुए अजूबों को पेश करना जो उसने हर चीज़ से जोड़े हैं, मानो किसी सैन्य परेड के लिए,

जिसके लिए वह अनंत काल से साक्षी है। उसकी नज़र पाने के लिए सबसे क्षणभंगुर अस्तित्व ही पर्याप्त है। वास्तव में, अस्तित्व की मात्र संभावना ही पर्याप्त है। यह उद्देश्य, उदाहरण के लिए, नाज़ुक जीवों द्वारा पूरी तरह से साकार होता है जो जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं, और बीजों और गुठलियों द्वारा, जिनमें से प्रत्येक एक उत्कृष्ट कृति है, जो कभी फूल या फल नहीं देते।

ऐसे प्राणी व्यर्थता और निरर्थकता से अछूते रहते हैं। सभी चीज़ों का प्राथमिक उद्देश्य अपने अस्तित्व से, अपने निर्माता की शक्ति के चमत्कारों और उसके काम के संकेतों की घोषणा करना और उन्हें उसकी नज़र में दिखाना है।

दूसरी श्रेणी सचेत प्राणियों से संबंधित है। हर चीज़ एक सत्य-वाहक संदेश, या कलात्मक कविता, या राजसी निर्माता का एक बुद्धिमान शब्द है जो फ़रिश्तों और जिन्न, मानवता और जानवरों को दिया जाता है, और उनके द्वारा “पढ़े जाने” की इच्छा रखता है।

प्रत्येक वस्तु उस पर नजर रखने वाले प्रत्येक चेतन प्राणी के चिंतन और निर्देश की वस्तु है।

तीसरी श्रेणी वस्तुओं के स्व से संबंधित है, और इसमें आनंद और खुशी के अनुभव जैसे छोटे प्रभाव शामिल हैं,

• पांचवां सिद्धांत: सभी क्षणभंगुर चीजें अस्तित्व में आने के लिए बनाई गई हैं और

कुछ हद तक स्थायित्व और आराम के साथ रहने का। अगर
हम एक पर कार्यरत एक स्टीयरसमेन के कार्यों पर विचार करते हैं
रॉयल यॉट में, हम देखते हैं कि इनमें से केवल 1% कार्य ही वास्तव में स्टीयरमैन से संबंधित हैं (जैसे, उसका वेतन); शेष 99%
उस राजा से संबंधित है जो नौका का मालिक है।
अपने और अपने से संबंधित चीजों के उद्देश्यों के बीच प्राप्त होता है
सांसारिक अस्तित्व और उसके निर्माता से संबंधित लोग।

उद्देश्यों की इस बहुलता को देखते हुए, हम यह समझा सकते हैं
दिव्य बुद्धि और अर्थव्यवस्था के बीच अंतिम सहसंबंध,
साथ ही ईश्वरीय उदारता और दानशीलता (जो वास्तव में असीमित हैं), भले ही वे एक दूसरे का खंडन करते प्रतीत होते हैं। चीज़ों के व्यक्तिगत उद्देश्यों में, उदारता और दानशीलता प्रबल होती है और सबसे उदार नाम मानव रूप में प्रकट होता है। उदाहरण के लिए, फल और अनाज गणना से परे हैं और सबसे उदार नाम को प्रकट करते हैं। लेकिन ईश्वरीय उदारता और दानशीलता में, दानशीलता और दानशीलता दोनों ही अलग-अलग हैं।
सार्वभौमिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए चीजें बनाई गई हैं, सर्वज्ञ नाम प्रकट हुआ है। यह कहा जा सकता है कि एक पेड़ का फल
जितने फल होंगे, उतने ही उद्देश्य होंगे। इन उद्देश्यों को ऊपर बताई गई तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

सार्वभौमिक उद्देश्य अनंत बुद्धिमत्ता को प्रदर्शित करते हैं
और अर्थव्यवस्था। इस प्रकार अनंत ज्ञान और अनंत उदारता
उनके स्पष्ट विरोध के बावजूद, सहसंबंधित। उदाहरण के लिए,
सेना बनाने का एक उद्देश्य व्यवस्था बनाए रखना है।
पहले से उपलब्ध संसाधन इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पर्याप्त हो सकते हैं।
पूरी सेना राष्ट्रीय सीमाओं की रक्षा और दुश्मनों को खदेड़ने जैसे अन्य उद्देश्यों के लिए बमुश्किल पर्याप्त हो सकती है।

इस प्रकार बुद्धि और बहुलता परस्पर संबंधित हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे उद्देश्य और बहुलता परस्पर संबंधित हैं।

किसी सरकार का अस्तित्व कभी भी उसकी महिमा के प्रतिकूल नहीं होता।

अपने अपेक्षित फॉर्म प्राप्त करने के लिए ताकि वे
पंजीकृत किया जाए, उनकी छवियों को संरक्षित किया जाए, उनके अर्थों को समझा जाए, और उनके परिणामों को रिकॉर्ड किया जाए। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि अन्य उद्देश्यों के साथ-साथ
स्थायित्व का क्षेत्र, चिरस्थायी दृश्य
उन लोगों के लिए काम किया जा सकता है
अनंत काल। हर चीज़ अनंत काल के लिए बनाई गई है, विनाश के लिए नहीं।

स्पष्ट विनाश एक पूर्णता का प्रतीक है
कर्तव्य और सेवा से मुक्ति, जबकि हर
क्षणभंगुर वस्तु एक क्षण में विनाश की ओर अग्रसर होती है
एक पहलू के अलावा, यह कई अन्य पहलुओं में भी शाश्वत रूप से विद्यमान रहता है।
एक फूल पर विचार करें, जो ईश्वर की शक्ति का एक शब्द है।
कुछ देर तक हम पर मुस्कुराता है और फिर पीछे छिप जाता है
विनाश का पर्दा। यह वैसे ही गायब हो जाता है जैसे
बोला गया शब्द चला गया, लेकिन उसका अर्थ
यह बात उन लोगों के मन में बनी रहती है जिन्होंने इसे सुना है।

फूल चला गया, लेकिन उसका दृश्य रूप रह गया
इसे देखने वालों की स्मृति में और इसके आंतरिक भाग में
इसके सार में सार है। यह ऐसा है जैसे कि प्रत्येक स्मृति और
बीज फूल की सजावट को रिकॉर्ड करने या उसे कायम रखने का एक साधन थे।

चूंकि यह बात इतनी सरल इकाई के लिए सत्य है, हम यह कह सकते हैं
देखें कि हम अनंत काल से कितने करीब हैं, यह देखते हुए कि हम जीवन का उच्चतम

रूप हैं और

एक अविनाशी आत्मा है। फिर से,
तथ्य यह है कि फूल और फल देने वाले पौधे किस नियम के अनुसार बनते हैं, और
उनके रूपों का प्रतिनिधित्व संरक्षित है
और सबसे व्यवस्थित तरीके से कायम रखा गया
छोटे बीज सभी तूफानी परिवर्तनों के माध्यम से
मौसम, ऋतुएँ, इत्यादि], हम आसानी से समझ सकते हैं कि प्रत्येक
व्यक्ति की आत्मा कितनी निकटता से जुड़ी हुई है
अनंत काल से जुड़ी और संबंधित है।21 यह आत्मा,
जो प्रत्येक व्यक्ति को सबसे ऊंचा और
व्यापक प्रकृति, एक सचेतन की तरह है और
यह ईश्वरीय आदेश से निकलने वाला एक प्रकाशमान कानून है,
भले ही यह शरीर में स्थित हो।

- छठा सिद्धांत: हमें अपनी मर्जी से भटकने के लिए नहीं छोड़ा गया है, जैसे कोई जानवर अपनी मर्जी से जहाँ चाहे वहाँ चरता है। हमारे कर्मों के रूप और
  परिणाम रिकॉर्ड किए गए हैं, पंजीकृत किए गए हैं, और उस दिन के लिए तैयार किए गए हैं जब हमें हिसाब देना होगा
  उन को।

- सातवां सिद्धांत: की समग्र मृत्यु
  शरद ऋतु के दौरान वसंत और ग्रीष्म के जीव
  यह विनाश नहीं है, बल्कि बर्खास्तगी है
  कर्तव्य की पूर्णता, एक खालीपन जो रास्ता बनाता है

21 इन नियमों का पौधों के जीवन और अस्तित्व के लिए वही अर्थ है जो एक आत्मा का एक व्यक्तिगत मनुष्य के लिए है।

अगले वसंत में नए जीव आएंगे और
अपने कार्य संभालो।22 यह एक ईश्वरीय चेतावनी है
सचेत प्राणियों को उनकी विस्मृति से जगाना, उन्हें उस सुस्ती से बाहर
निकालना जो उन्हें धन्यवाद देने के अपने कर्तव्य की उपेक्षा करने पर
मजबूर करती है।

• आठवां सिद्धांत: यह क्षणभंगुर संसार शाश्वत है
निर्माता के पास एक शाश्वत संसार है जिसकी ओर वह जाता है

अपने सेवकों को प्रेरित और प्रोत्साहित करता है।

• नौवां सिद्धांत: उस दुनिया में, एक ऐसा
दयालु परमेश्वर अपने सेवकों को ऐसे सर्वोत्तम उपहार देगा जो हमारी
जानकारी से इतने परे हैं कि हम उनकी कल्पना भी नहीं कर सकते। इसमें
हम
विश्वास।

सातवां सत्य: सुरक्षा और विश्वास का द्वार
संरक्षण, सभी के नामों का प्रदर्शन

---

[22] यह उचित ही है कि एक पेड़ के पत्ते, फूल और फल,
ईश्वरीय दया से पोषित होते हैं, समय आने पर चले जाते हैं
और उनके कर्तव्य समाप्त हो गए। अन्यथा गेट खुला रहता
उनका अनुसरण करने वाले लोग ईश्वर के विस्तार को अवरुद्ध कर देंगे
दया और प्रजाति के अन्य सदस्यों द्वारा की जाने वाली सेवाएं। इसके अलावा, वे दुखी
और व्यथित हो जाते हैं जब
वे अपना चरम समय पार कर जाते हैं। वसंत एक फलदार वृक्ष की तरह है जो पुनरुत्थान
के विशाल मैदान को दर्शाता है। इसी तरह, हर युग में
यह संसार चिंतन को आमंत्रित करने वाले वृक्ष के समान है;
एक संपूर्ण एक अद्भुत पेड़ की तरह है जिसके फल आगे भेजे जाते हैं
परलोक के बाजार में।

संरक्षक और संरक्षक। क्या यह कल्पना की जा सकती है कि संरक्षक का ईश्वर का गुण, जो पूर्ण व्यवस्था और संतुलन के भीतर सभी विद्यमान वस्तुओं की रक्षा करता है, तथा उनके परिणामों को छानता और उनका लेखा-जोखा रखता है, उसके महान प्रतिनिधि, जो सर्वोच्च विश्वास को धारण करता है, के कार्यों को अलिखित, अछूता और अलेखित रहने देगा, न्याय के तराजू में तौला नहीं जाएगा, दण्डित नहीं किया जाएगा या उचित रूप से पुरस्कृत नहीं किया जाएगा, भले ही उसके कार्य ईश्वर की सार्वभौमिक प्रभुता से बहुत निकटता से संबंधित हों?23 ऐसा नहीं है।

वह सत्ता जो इस ब्रह्माण्ड का प्रशासन करती है, सभी वस्तुओं को एक क्रम और सन्तुलन में रखती है, जो उसके ज्ञान और बुद्धि, इच्छा और शक्ति को व्यक्त करती है।

हम देखते हैं कि प्रत्येक निर्मित वस्तु का पदार्थ, तथा उसके सभी अनुवर्ती व्यक्तिगत रूप और उनकी समग्रता, पूर्ण (और मनभावन, सममित) क्रम में गढ़े गए हैं। इसके अलावा, राजसी संरक्षक उन वस्तुओं के कई रूपों को सुरक्षित रखता है जो अपने कर्तव्यों को पूरा करने और विदा होने के बाद नष्ट हो जाती हैं, लोगों की यादों में, जो एक सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका की तरह हैं

23 ईश्वर की प्रतिनिधिता का अर्थ है कि मानवता वह “साधन” है जिसका उपयोग ईश्वर पृथ्वी पर अपने आदेशों को निष्पादित करने के लिए करता है और हम उसके नियमों के अनुसार इस पर शासन करते हैं। सर्वोच्च विश्वास हमारा अहंकार है, जिसे ईश्वरीय नामों और गुणों की सभी अभिव्यक्तियों के साथ, सापेक्ष रूप से सुसज्जित किया गया है। इसके अलावा, तीसवाँ वचन देखें। (अनुवाद)

या आदर्श दर्पण। वह एक बीज (उस जीवन का मुद्दा और परिणाम) में एक संक्षिप्त जीवन-इतिहास अंकित करता है।
इस प्रकार वह सभी चीजों को बाहरी और आंतरिक दुनिया के अनुरूप दर्पणों में संरक्षित करता है।
यादें, एक पेड़ का फल, एक फल की गिरी, एक फूल की
बीज - सभी संरक्षण के कानून की सार्वभौमिकता और समावेशिता को प्रकट करते हैं।

क्या तुमने नहीं देखा कि कर्मों का अभिलेख कैसा है?
सभी वसंत के फूलों और फलों, उनके निर्माण के नियम और उनके रूपों की छवियां सभी अंकित हैं
एक मिनट के भीतर बीज और वहाँ संरक्षित?
वसंत के बाद, उन अभिलेखों को खोला जाता है - उनके लिए उपयुक्त खाते में लाया जाता है - और दूसरा
वसंत की विशाल दुनिया पूर्ण व्यवस्था और बुद्धिमत्ता के साथ उभरती है। यह शक्तिशाली और
ईश्वरीय गुण का व्यापक अभ्यास
संरक्षक: यह देखते हुए कि ऐसी क्षणभंगुर, सामान्य और महत्वहीन चीजों का मुद्दा पहले से ही रखा हुआ है, हमारे कर्म, जो (सार्वभौमिक प्रभुत्व के दृष्टिकोण से) महत्वपूर्ण फल कैसे दे सकते हैं

अदृश्य दुनिया में, परलोक में, और परलोक में
क्या आत्माओं के संरक्षण को उच्च महत्व के मामले के रूप में संरक्षित और दर्ज नहीं किया जाना चाहिए?

यह व्यापक संरक्षण हमें दिखाता है कि
सृष्टि के स्वामी व्यवस्था के प्रति बहुत सावधानी बरतते हैं-

उसके शासन के अधीन होने वाली हर चीज़ की शुद्धता।
वह संप्रभु, पालनहार और प्रभु होने के कार्य के प्रति पूरी तरह से सजग है। इसलिए वह छोटी से छोटी घटना और छोटी से छोटी सेवा को रिकॉर्ड करता है या रिकॉर्ड करवाता है और हर चीज के स्वरूप को कई अभिलेखों में सुरक्षित रखता है। संरक्षक का यह गुण दर्शाता है कि हमारे कर्मों का रिकॉर्ड रखा जाएगा

खुला और बारीकी से जांच और वजन किया गया।

ईश्वर की प्रतिनिधिता और विश्वास से सम्मानित होकर, हम उनके प्रभु होने की सार्वभौमिकता के साक्षी हैं और इस बहुलता के क्षेत्र में उनकी एकता की घोषणा करते हैं। इस प्रकार हम नियंत्रक और गवाह के रूप में कार्य करते हैं जो उनकी महिमा और अधिकांश प्राणियों की पूजा में हिस्सा लेते हैं। हम यह सब कैसे कर सकते हैं और फिर कब्र में अंतहीन नींद में सो जाएँगे, कभी नहीं जगाए जाएँगे और न ही हमसे इस बारे में सवाल किए जाएँगे कि हमने क्या किया? बिना किसी संदेह के, हम पुनरुत्थान के मैदान की यात्रा करेंगे और सर्वोच्च न्यायाधिकरण में मुकदमा चलाया जाएगा।

हम भाग नहीं सकते, शून्य में नहीं छिप सकते, या जमीन में प्रवेश नहीं कर सकते, जैसे कि हम स्वयं को उस सर्वशक्तिमान और महाप्रतापी से नहीं छिपा सकते, जिसका

वह शक्ति जो सभी भावी आकस्मिकताओं और सभी भूतकाल की घटनाओं की साक्षी है, और जो शीतकाल और वसन्त ऋतु का निर्माण करती है

जो एक साथ मिलकर पुनरुत्थान के समान हैं।24
चूँकि हमसे उचित रूप से जवाब नहीं माँगा जाता और
इस दुनिया में रहते हुए न्याय किया जाना चाहिए, हमें आगे बढ़ना चाहिए
सर्वोच्च न्यायाधिकरण और दूसरे में स्थायी खुशी।

---

24 अतीत घटनाओं से बना है। हर दिन, साल और सदी
जो अस्तित्व में आया वह एक पंक्ति, एक पृष्ठ और एक पुस्तक की तरह है
भाग्य की कलम द्वारा। दिव्य शक्ति अपने चमत्कारी कार्यों को पूर्ण बुद्धि और क्रमबद्धता के साथ उसमें अंकित करती है। इसी प्रकार,
भविष्य, अब से लेकर पुनरुत्थान, स्वर्ग और अनंत काल तक, पूरी तरह से आकस्मिकताओं से बना है। इन दोनों की तुलना करें,
हम निश्चित रूप से समझते हैं कि जिस सत्ता ने कल और उसके प्राणियों को बनाया है, वही कल और उसके प्राणियों को भी बना सकती है। जैसे भूतकाल के चमत्कार एक शक्तिशाली के चमत्कारी कार्य हैं
और महाप्रतापी, वे पुष्टि करते हैं कि वह भविष्य का निर्माण कर सकता है
और इसकी आकस्मिकताओं और इसके चमत्कारों को दिखाएं।

जो सेब बनाता है, वह सब कुछ बना सकता है।
सेबों को उगाना और वसंत को अस्तित्व में लाना। इसी तरह, जो वसंत नहीं बना सकता, वह एक भी सेब नहीं बना सकता, क्योंकि वे वसंत नहीं बना सकते।
एक ही वर्कबेंच पर बनाया गया। प्रत्येक सेब एक पेड़, एक बगीचे या एक ब्रह्मांड का एक छोटा सा उदाहरण है। इसके बीज में
यह वृक्ष का जीवन-इतिहास है, तथा इसमें ऐसी उत्तम कलात्मकता प्रदर्शित होती है
यह एक चमत्कार है जो उस व्यक्ति द्वारा किया गया है जो कुछ भी कर सकता है।
इसी तरह, जो आज का सृजन करता है, वह कल का भी सृजन कर सकता है।
पुनरुत्थान, और केवल वही जो वसंत का निर्माण कर सकता है, पुनरुत्थान का निर्माण कर सकता है। वह जो सभी पिछली घटनाओं को एक सूत्र में पिरोता है
समय के रिबन पर और उन्हें वहाँ सही ढंग से प्रदर्शित करता है
बुद्धि और व्यवस्था अन्य प्राणियों को भी बंधन से जोड़ सकती है
भविष्य की कल्पना करें और उन्हें वहां प्रदर्शित करें। कई ग्रंथों में
शब्दों से हमने साबित कर दिया कि जो एक चीज़ बना सकता है, वह दूसरी चीज़ भी बना सकता है।

आठवाँ सत्य: वादा और धमकी का द्वार,
सुंदर और सुंदर नामों का प्रदर्शन
राजसी। क्या इस दुनिया के निर्माता, जिसने
पूर्ण ज्ञान और पूर्ण शक्ति, बार-बार किए गए वादे और धमकी को पूरा
नहीं करती
क्या सभी पैगम्बरों, सत्य के खोजियों और संतों द्वारा ऐसा नहीं किया जा रहा है?
तो यह नपुंसकता या अज्ञानता दिखाएगा। उसकी शक्ति
वह अपने वादे और धमकी को उतनी ही आसानी से महसूस कर सकता है जितना वह
वसंत ॠतु में असंख्य प्राणियों को वापस लाता है
वसंत ॠतु से पहले, कुछ समान (पेड़ों की जड़ें)
और घास) और कुछ समान (पत्तियाँ और फल)।
हर चीज़ के लिए हमारी ज़रूरत और ज़रूरत
उसका प्रभु और प्रभु होना यह दर्शाता है कि वह अपना वादा पूरा
करेगा। ऐसा न करना उसके वादे का खंडन करना होगा।
शक्ति की गरिमा और अधिकार तथा उसके ज्ञान की
व्यापकता.

यदि आप ऐसे तथ्यों से इनकार करते हैं, तो वास्तव में आप अपनी झूठी
कल्पना, मनमौजी बुद्धि और अंधविश्वास का अनुसरण कर रहे हैं।
धोखा देने वाली आत्मा। तुम उसे झूठा कहते हो, हालाँकि वह अपनी
महिमा और गरिमा के लिए कभी भी अपना वादा नहीं तोड़ता

सब कुछ बनाओ। साथ ही, अगर हर चीज का निर्माण जिम्मेदार ठहराया जाता है
एक ही प्राणी के लिए, उनका निर्माण एक चीज़ बनाने जितना आसान हो जाता है।
लेकिन अगर सृजन का श्रेय कई एजेंटों को दिया जाता है
या कारणों, एक चीज़ का निर्माण बनाना उतना ही कठिन है
सब कुछ। नतीजतन, यह असंभव के करीब है।

उसके लिए यह असंभव बना दो। इसके अलावा, उसकी सच्चाई हर उस चीज़ से प्रमाणित होती है जो तुम देखते हो। इसके बावजूद
आपकी तुच्छता, आपकी त्रुटि अनंत है और इस प्रकार
महान और अनन्त दण्ड के पात्र हैं।25 वे
जो इनकार करते हैं वे उन यात्रियों के समान हैं जो अपनी आँखें बंद कर लेते हैं
सूर्य के प्रकाश की ओर मुड़ते हैं और अपनी कल्पनाओं के प्रकाश की ओर मुड़ते हैं, हालांकि यह जुगनू की रोशनी से अधिक शक्तिशाली नहीं है,
आगे की भयावह सड़क को रोशन करने के लिए। सर्वशक्तिमान करता है
जो वादा वह करता है, वह पूरा होता है। उसके सत्य वचन ये हैं
हम जो प्राणी देखते हैं, और उसके सत्य, वाक्पटु संकेत हैं
प्रकृति की प्रक्रियाएँ। और इसलिए वह स्थापित करेगा
एक सर्वोच्च न्यायाधिकरण और अनन्त खुशी प्रदान करते हैं।

नौवां सत्य: परमेश्वर के पुनरुद्धार और उद्धार का द्वार
मृत्यु का कारण, नामों की अभिव्यक्ति
सदा जीवित और आत्मनिर्भर, वह जो
पुनर्जीवित करनेवाला और मरनेवाला परमेश्वर।

जब यह विशाल पृथ्वी मृत और सूखी होती है, तब वह उसे पुनर्जीवित करता है, और इस प्रकार असंख्य प्राणियों को जीवित करके अपनी शक्ति प्रदर्शित करता है।
सृष्टि की सभी प्रजातियाँ, जिनमें से प्रत्येक मनुष्यता जितनी ही असाधारण है। वह अपना सर्वव्यापी ज्ञान प्रकट करता है
इन प्राणियों की अनंत विविधताएँ

---

25 कुछ परंपराओं के अनुसार, नरक में कुछ लोगों के दांत पहाड़ों जितने बड़े होंगे, जो कि नरक के विनाश का संकेत है।
उनकी त्रुटि का आकार.

उनके सभी अलग-अलग रूपों का मिश्रण। भगवान
अपने सेवकों का ध्यान अनन्त संतुष्टि की ओर मोड़ता है, उन्हें अपने स्वर्गीय आदेशों में पुनरुत्थान का आश्वासन देता है, और उनकी महिमा को दृश्यमान बनाता है

वह उनका प्रभु और पालनहार है। वह सभी का कारण बनता है
उसके प्राणियों को एक दूसरे के साथ सहयोग करने, उसकी आज्ञा और इच्छा की परिधि में घूमने के लिए,
और एक दूसरे की सहायता करके उसके अधीन रहना चाहिए।

वह हमें वृक्ष के रूप में बनाकर हमारा मूल्य दर्शाता है
सृष्टि का सबसे व्यापक, सूक्ष्म, श्रेष्ठतम,
और मूल्यवान, फल; हमें सीधे संबोधित करके और सभी चीजों को हमारे अधीन करके। क्या कोई इतना दयालु और शक्तिशाली, बुद्धिमान और सर्वज्ञ नहीं हो सकता

(या असमर्थ) पुनरुत्थान ला सकता है, अपने प्राणियों को इकट्ठा कर सकता है, और हमें जीवन प्रदान कर सकता है? क्या वह ऐसा करने में असमर्थ है
अपना सर्वोच्च न्यायालय स्थापित नहीं कर सका या बना नहीं सका
स्वर्ग और नर्क? ऐसे विचार अकल्पनीय हैं।

वास्तव में, इस संसार के सर्वशक्तिमान पालनहार
मामले लगातार अपने परिमित, क्षणिक पर बनाता है
अनेक संकेत, उदाहरण और संकेत सामने आते हैं
सर्वोच्च सभा और मैदान का
पुनरुत्थान। हर वसंत में हम अनगिनत जानवरों और पौधों की प्रजातियों को कुछ दिनों में इकट्ठा होते हुए देखते हैं और
फिर बिखरा दिया। सभी पेड़ और पौधों की जड़ें, साथ ही

कुछ जानवरों को पुनर्जीवित और बिल्कुल बहाल किया जाता है
जैसे वो थे।

अन्य जानवरों को लगभग समान रूपों में पुनः बनाया जाता है। एक
जैसे दिखने वाले बीज जल्दी ही उग जाते हैं
अलग और विभेदित संस्थाओं में,
असाधारण तीव्रता के साथ पूर्ण उत्साह में लाया गया
और सहजता, पूर्ण व्यवस्था और सामंजस्य में।
जो करता है उसके लिए क्या कुछ भी कठिन हो सकता है
यह? वह आकाश और पृथ्वी कैसे बना सकता है

क्या यह 6 दिनों में पूरा हो जाएगा और फिर भी एक ही विस्फोट से मानवता को पुनर्जीवित करने में असमर्थ होगा?

मान लीजिए कि एक प्रतिभाशाली लेखक किसी रचना को कॉपी कर सकता है
अनगिनत किताबों के उलझे हुए, आधे मिट चुके अक्षरों को कागज़ के एक
पन्ने पर बिना किसी त्रुटि या त्रुटि के लिखिए।
पूरी तरह से और बेहतरीन शैली में चूक। अगर कोई
फिर आपसे कहा कि वह अपनी किताब फिर से लिख सकता है
याददाश्त से, भले ही वह पानी में गिर गया था
और मिट गया, आप कैसे कह सकते हैं कि वह
ऐसा नहीं कर सकता था? या एक राजा के बारे में सोचो जो यह दिखाना चाहता था कि
अपनी शक्ति या चेतावनी से, एक आदेश से पहाड़ों को हटाता है, अपने राज्य
को पलट देता है, और रूपांतरित करता है
समुद्र को सूखी ज़मीन में बदल दें। फिर कल्पना करें कि एक बड़ा पत्थर
उसके स्वागत में आने वाले मेहमानों का रास्ता रोक देता है। अगर कोई कहता
है कि राजा उसे हटा देगा

एक आदेश के साथ बोल्डर, क्या आप कहेंगे कि
वह ऐसा नहीं कर सका?

या कल्पना करें कि कोई व्यक्ति एक बड़ी सेना इकट्ठा करता है,
और आपको बताया जाता है कि वह इसे परेड में वापस बुलाएगा
बटालियनों को बर्खास्त करने के बाद तुरही बजाकर उन्हें नष्ट कर दिया गया
आराम करने के लिए? यदि बटालियनें अनुशासित पंक्तियों में बनी हों,
क्या आप अविश्वास से जवाब देंगे? अगर हाँ, तो आपका
त्रुटि बहुत बड़ी होगी.

अब, देखें कि कैसे शाश्वत डिजाइनर सर्दियों के सफेद पृष्ठ को बंद करता है
और वसंत और गर्मियों के सफेद पृष्ठों को खोलता है।
हमारी आँखों के सामने हरे पन्ने। शक्ति की कलम से
और भाग्य, वह अनंत प्रजातियों को अंकित करता है, कोई नहीं
जो पृथ्वी की सतह पर एक दूसरे पर सबसे सुंदर शैली में अतिक्रमण करते हैं। प्रत्येक
की अपनी अनूठी विशेषता है
रूप और आकार में है और बिना किसी भ्रम के है। लेखन में भी कोई त्रुटि नहीं है।
क्या यह पूछना उचित है कि सर्वज्ञ और सर्वरक्षक कौन है, जो एक महान रचना को
संक्षिप्त करता है
पेड़ का एक बिंदु आकार के बीज में बदलना, वह कैसे करेगा
परलोक में उससे मिलने आने वाले यात्रियों के मार्ग से पत्थर हटा देंगे?

क्या यह पूछना उचित है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर कौन है?
नए लोगों को गैर-अस्तित्व से अपने में शामिल करता है
बटालियनों के साथ Be! और यह है, और पूर्ण के साथ
सुव्यवस्थितता सभी जीवित चीजों की पंक्तियों को व्यवस्थित करती है,
उनके शारीरिक परमाणुओं तक पहुँचता है, और इस प्रकार उच्च-

सेनाओं को अनुशासित करना—यहाँ तक कि यह पूछना कि वह ऐसा कैसे कर सकता है शरीरों को आज्ञाकारी सैनिकों की तरह अपने अनुशासन के अधीन करवाना, कि वह उनके परस्पर संबंधित मूल परमाणुओं और उनके अंगों को कैसे एकत्रित कर सकता है
उससे बना है?

क्या आप यहाँ बने अनगिनत डिज़ाइन नहीं देख सकते?
ईश्वर ने पुनरुत्थान के संकेत, समानताएं और सादृश्य के रूप में क्या दर्शाया है? उसने उन्हें हर युग में, दिन और रात के परिवर्तन में, यहां तक कि आने वाले और आने वाले समय में भी रखा है।
बादलों का जाना। अगर आप खुद को 1,000 साल आगे की कल्पना करें अतीत में जाकर अतीत और भविष्य की तुलना करें, तो आप पुनरुत्थान की उतनी ही समानताएं और उपमाएं दिखाई देंगी जितनी सदियां और दिन पहले थीं।
इसके बाद भी आप भौतिक पुनरुत्थान पर विचार करते हैं
तर्क के लिए असंभव और अस्वीकार्य है,
आपकी शक्तियों में कुछ गंभीर गड़बड़ी है
तर्क।

इस सत्य के विषय में सर्वोच्च आदेश कहता है:

> ईश्वर की दया के चिन्हों और छापों को देखो,
> वह पृथ्वी को उसकी मृत्यु के बाद कैसे पुनर्जीवित करता है। वह वही है जो
> मुर्दों को जिलाएगा, और वह हर चीज़ पर प्रभुत्व रखता है। (30:50)

पुनरुत्थान को कोई भी चीज़ असंभव नहीं बनाती,
और बहुत कुछ इसकी आवश्यकता है। गौरवशाली और शाश्वत

प्रभुता, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी

संप्रभुता, उस एक की जो इस विस्तृत और अद्भुत पृथ्वी को जीवन और मृत्यु देता है मानो यह एक

एक जीव; जिसने इसे मानवता और पशुओं के लिए एक सुखद पालना और सुंदर शिल्प के रूप में बनाया है; जिसने सूर्य को एक दीपक बनाया है जो उसे प्रकाश और गर्मी दोनों देता है; जिसने ग्रहों को अपने स्वर्गदूतों के लिए परिवहन बनाया है - ऐसे व्यक्ति का प्रभुत्व और संप्रभुता एक परिवर्तनशील, क्षणभंगुर, अस्थिर, मामूली और अपूर्ण दुनिया तक सीमित नहीं हो सकती है।

इस प्रकार एक और क्षेत्र है, जो उसके योग्य है, अपरिवर्तनीय, स्थायी, स्थिर, महान और परिपूर्ण है।

वह हमें इस क्षेत्र के लिए काम करने के लिए प्रेरित करता है और बुलाता है

हमें इसके लिए तैयार करें। जो लोग बाहरी दिखावे से सच्चाई तक पहुँच चुके हैं, जो दिव्य उपस्थिति के सामीप्य से महान बन चुके हैं, सभी आध्यात्मिक "ध्रुव" प्रकाश से भरे दिलों से संपन्न हैं, और वे जो प्रबुद्ध दिमाग वाले हैं, वे गवाही देते हैं कि वह हमें उस दूसरे राज्य में स्थानांतरित कर देगा, कि उसने वहाँ हमारे लिए एक इनाम और प्रतिफल तैयार किया है, और वह हमें अपने दृढ़ वादे और उसके बारे में कड़ी चेतावनियाँ देता है।

वादा तोड़ना बहुत बड़ा अपमान है और उसकी पवित्रता की महिमा के साथ मेल नहीं खाता। धमकी को पूरा न करना केवल क्षमा या क्षमा से ही उत्पन्न हो सकता है।

नपुंसकता और अविश्वास को क्षमा नहीं किया जा सकता ।26
सर्वशक्तिमान सभी प्रकार की नपुंसकता से मुक्त है और उससे कहीं ऊपर है।
जो लोग हमें अपनी गवाही देते हैं, वे सभी इस बात पर सहमत हैं
यह मौलिक है। संख्या में, उनमें सर्वसम्मति का अधिकार है; गुणवत्ता में, विद्वानों का अधिकार है
सर्वसम्मति। रैंक में, प्रत्येक मानवता का मार्गदर्शक प्रकाश है, लोगों का प्रिय व्यक्ति और वस्तु है
उनकी पूजा की जाती है। महत्व में, प्रत्येक एक विषय विशेषज्ञ और अधिकारी है।

किसी भी कला या विज्ञान में दो विशेषज्ञों को प्राथमिकता दी जाती है
हजारों गैर-विशेषज्ञों के लिए, और दो सकारात्मक पुष्टिकर्ताओं को हजारों नकारात्मक लोगों के लिए पसंद किया जाता है
रिपोर्ट का प्रसारण। उदाहरण के लिए, गवाही
दो सक्षम पुरुषों की जिन्हें उन्होंने देखा है

---

२६ अविश्वास सृष्टि की निन्दा करता है, और यह आरोप लगाता है कि वह अस्तित्वहीन है
यह सृष्टि के मूल्य या अर्थ को नष्ट कर देता है। यह सृष्टि के दर्पणों में दिव्य नामों के प्रकटीकरण को नकार कर सृष्टि का अपमान करता है।
यह ईश्वरीय नामों का अनादर करता है, दी गई गवाही को अस्वीकार करता है
सभी प्राणियों द्वारा ईश्वर की एकता को स्वीकार करता है, तथा इस प्रकार सृष्टि के निर्माण को अस्वीकार करता है।
हमारी क्षमताओं को भ्रष्ट कर रहा है, जिसे हम सुधार नहीं सकते और जो हम बनना चाहते हैं, वह बन नहीं सकते।
अच्छाई के प्रति असंवेदनशील। अविश्वास भी पूर्ण अन्याय का कार्य है, सृष्टि और ईश्वर के अधिकारों के विरुद्ध अपराध है
नाम। उन अधिकारों की रक्षा, और एक अविश्वासी की अपूरणीय स्थिति, के लिए यह आवश्यक है कि अविश्वास अक्षम्य हो।
परमेश्वर के साथ साझी ठहराना सचमुच बहुत बड़ा अपराध है (३१:१३) इस आवश्यकता को व्यक्त करते हैं।

अर्धचन्द्राकार चाँद रमजान की शुरुआत का प्रतीक है
हजारों इनकार करने वालों के इनकार को निरस्त कर देता है।

इस दुनिया में इससे ज़्यादा सच्ची रिपोर्ट या पक्का दावा नहीं है,
या इससे भी अधिक स्पष्ट सत्य। यह एक क्षेत्र है, और
पुनरुत्थान - दुनिया को नष्ट करना और बनाना
परलोक एक खलिहान है, एक कटाई का मैदान है जहाँ अनाज रखा जाता है जिसे स्वर्ग या अन्य स्थानों में संग्रहित किया जाएगा।
नरक।

दसवां सत्य: बुद्धि, अनुग्रह, दया का द्वार,
और न्याय, उन नामों की अभिव्यक्ति जो सर्वज्ञ, उदार, न्यायी और दयालु हैं।
समस्त अस्तित्व का स्वामी ऐसा प्रकट ज्ञान, सर्वव्यापी अनुग्रह, अत्यधिक न्याय और
इस अनित्य जगत में व्यापक दया,
अस्थायी परीक्षण स्थल, और अस्थिर प्रदर्शन हॉल
जमिन के।

क्या यह कल्पना की जा सकती है कि उसके राज्य में,
अस्तित्व के बाहरी और आंतरिक आयामों की दुनिया,
कि वहाँ कोई स्थायी निवास नहीं होगा
क्या यह संभव है कि यदि वे शाश्वत स्थानों पर न भी रहते होते तो भी अमर निवासी जीवित रहते?
ज्ञान, अनुग्रह, दया, आदि सभी सत्य विद्यमान हैं।
और न्याय जो हम देखते हैं वह शून्य में बदल जाना चाहिए?

क्या सर्वज्ञ हमें अपना अनुग्रह प्राप्त करने के लिए चुनेंगे?

प्रत्यक्ष और सार्वभौमिक संबोधन; हमें अपना एक व्यापक दर्पण बनाओ; हमें स्वाद लेने दो, नापने दो,

और उसके खजाने की सामग्री को जानें

दया करो; अपने आप को अपनी सारी शक्तियों के साथ हमें ज्ञात कराओ

नाम; हमसे प्रेम करो और स्वयं को हमारा प्रिय बनाओ—

और फिर हमें एक शाश्वत क्षेत्र, एक निवास स्थान पर न भेजें

क्या यह हमें स्थायी आनंद प्रदान कर सकता है, और हमें उसमें खुश कर सकता है?

काश वह हर प्राणी पर, यहाँ तक कि एक बीज पर भी,

एक पेड़ जितना भारी बोझ, उस पर कर्तव्य थोपो

फूलों की तरह असंख्य, और इसे लाभकारी नियुक्त करें

क्या फलों के समान ही अनेक परिणाम हैं, जबकि उन्हें ऐसे प्रयोजन सौंपे गए हैं जो केवल यहीं प्रासंगिक हैं?

वह अपने उद्देश्य को इस सांसारिक जीवन तक ही क्यों सीमित रखेगा, जो कि एक दाने से भी कम मूल्यवान है?
सरसों के बीज? क्या यह अधिक उचित नहीं होगा

इस संसार में प्राणियों को बीज के रूप में बनाने के लिए

अर्थों और सारों की अमूर्त दुनिया, जहाँ

यहाँ हर चीज़ का सच्चा अर्थ मानव-निर्मित होगा, और परलोक के लिए एक खेती के रूप में, जहाँ वे

क्या वे अपनी सच्ची और योग्य उपज दे पाएंगे?

वह वास्तव में ऐसे महत्वपूर्ण परिवर्तनों की अनुमति देते हैं (जैसा कि हम

साक्षी) को उद्देश्यहीन, शून्य और निरर्थक क्यों माना जाए?
क्या वह उनके मुख को अभौतिक की ओर नहीं मोड़ देगा

अर्थों और सारों की दुनिया (जहाँ सच्चा मतलब-

क्या वे अपने सच्चे उद्देश्यों और उचित परिणामों को वहाँ प्रकट कर सकते हैं?

यदि वह वस्तुओं को उनके स्वयं के स्वभाव के विपरीत बनाता है, तो वह अपने स्वयं के सत्य नामों - सर्वज्ञ, उदार, न्यायी और दयालु - को उनके विपरीत रूप से कैसे चित्रित कर सकता है? वह सभी प्राणियों के सच्चे सार को कैसे नकार सकता है जो उसकी बुद्धि, उदारता, न्याय और दया को इंगित करते हैं, और फिर भी सभी चीजों की गवाही का खंडन करते हैं और उनके द्वारा दिए गए संकेतों को नकारते हैं? क्या तर्क इस अनुमान का समर्थन कर सकता है कि ईश्वर हम पर और हमारी इंद्रियों पर असंख्य कर्तव्य थोपेगा, और फिर हमें केवल एक बाल से भी कम मूल्य का सांसारिक पुरस्कार देगा, या वह बेतुके तरीके से कार्य कर सकता है और इस तरह अपने सच्चे न्याय और सच्ची बुद्धि का खंडन कर सकता है?

ईश्वर प्रत्येक जीवित प्राणी (या उसके प्रत्येक अंग) और प्राणी को अनंत उद्देश्य और लाभ प्रदान करके स्वयं को सर्वज्ञ दिखाता है। इसे देखते हुए, क्या वह हमें सबसे महान उद्देश्य, सबसे महत्वपूर्ण लाभकारी परिणाम, सबसे आवश्यक प्रभाव नहीं देगा? ये सभी उसकी बुद्धि, आशीर्वाद और दया को वह बनाते हैं जो वे हैं, और वे उन सभी उद्देश्यों, आशीर्वाद, दया और उपकार के छापों का मूल और लक्ष्य हैं-

प्रभावी परिणाम - अर्थात्, शाश्वतता, मिलना
उसके लिए परलोक में निवास तथा शाश्वत सुख है।

यदि वे इन्हें त्याग दें तो उनके सारे कार्य नष्ट हो जायेंगे।
व्यर्थ होगा। वह एक बिल्डर की तरह होगा जिसने निर्माण किया
एक महल जिसमें हजारों पत्थर लगे हैं
डिजाइनों की भरमार, कोनों में हजारों अलंकरण, और भागों में हजारों
मूल्यवान वस्तुएं उपलब्ध होना
औज़ार और यंत्र-लेकिन उसे ढकना भूल गए
एक छत, जिससे उसमें सब कुछ सड़ गया और
बेकार। जैसे अच्छाई परम से आती है
अच्छाई और सुंदरता परम सौंदर्य से आती है,
एक बुद्धिमान उद्देश्य परम बुद्धि से आना चाहिए।

जो भी इतिहास का अध्ययन करता है, वह अनगिनत मृतकों को देखता है
मंच, स्थान, प्रदर्शनियाँ और दुनियाएँ, प्रत्येक
जो इस वर्तमान संसार के समान है। यद्यपि वे रूप और गुणवत्ता में
एक दूसरे से भिन्न हैं, फिर भी वे अपनी परिपूर्ण व्यवस्था, उत्कृष्टता
और निर्माता की शक्ति को प्रदर्शित करने के तरीके में एक दूसरे से
मिलते जुलते हैं।
और बुद्धि। उन अस्थायी पड़ावों में,
क्षणिक क्षेत्र, और प्रदर्शन के क्षणभंगुर स्थान,
हम केवल स्पष्ट बुद्धि के सुव्यवस्थित कार्य, स्पष्ट अनुग्रह के संकेत,
अत्यधिक न्याय के संकेत और व्यापक दया के फल देखते हैं। जो लोग
किसी भी तरह की समझ रखते हैं वे समझते हैं कि वहाँ

इससे अधिक परिपूर्ण बुद्धि, अनुग्रहपूर्ण अनुग्रह, महिमामय न्याय या व्यापक दया नहीं हो सकती।

इस पर विचार करें: यदि कोई स्थायी निवास न होता,
ऊंचे स्थान, शाश्वत निवास, शाश्वत भवन, और शाश्वत प्रभु के राज्य में कोई शाश्वत निवासी (भगवान के आनंदित सेवक) नहीं, कौन करता है

उन सभी चीजों को लगातार बदलता रहता है
होस्टल और उनके मेहमानों को, हमें अस्वीकार करना होगा
बुद्धि, न्याय, पक्षपात और दया का सच्चा सार
दया।

हालाँकि, ये चार आध्यात्मिक तत्व इस प्रकार हैं
प्रकाश, वायु, जल और मिट्टी की तरह शक्तिशाली और व्यापक।
उनका अस्तित्व इन दृश्य तत्वों की तरह ही स्पष्ट है,
यह क्षणभंगुर संसार और इसकी सामग्री अपना वास्तविक सार पूर्ण रूप से प्रकट नहीं कर सकती।
इसलिए, यदि कोई अन्य स्थान न होता जहां
उन्हें पूर्ण रूप से अभिव्यक्त किया जा सके, इसके लिए हमें
हम जो देखते हैं उसमें स्पष्ट ज्ञान को नकारते हैं,
हम अपने ऊपर तथा अन्य सभी वस्तुओं पर अनुग्रह को प्रकट होते हुए देखते हैं,
न्याय अपने संकेतों द्वारा प्रकट होता है
इतने प्रभावशाली ढंग से, और दया जो हम हर जगह देखते हैं।27

27 न्याय के दो रूप हैं, एक सकारात्मक और दूसरा नकारात्मक। सकारात्मक न्याय में सही न्याय देना शामिल है।
जो इसका हकदार है, उसे। [हमारे द्वारा किए गए अन्याय को छोड़कर

हमें परमेश्वर को भी एक मूर्ख, धोखेबाज और निर्दयी अत्याचारी मानना होगा, भले ही वह
सभी बुद्धिमान प्रक्रियाओं, उदार कार्यों का स्रोत,
और दयालु उपहार जो हम ब्रह्मांड में देखते हैं।
सत्य का ऐसा उलटफेर भी उचित नहीं माना जा सकता
यहाँ तक कि सोफिस्ट भी जो अस्तित्व को नकारते हैं
हर चीज़ का, जिसमें उनका अपना भी शामिल है,
इस तरह के प्रस्ताव पर आसानी से विचार नहीं किया जा सकता।

संक्षेप में, जीवन और पर्यावरण का विश्वव्यापी सम्मिश्रण
मृत्यु का तीव्र विभाजन, भव्य सभाएँ और
तीव्र गति से फैलाव, शानदार परेड, प्रदर्शन, समारोह और शक्तिशाली अभिव्यक्तियाँ अप्रासंगिक हैं।

उस क्षेत्र में जहाँ हमारी स्वतंत्र इच्छाएँ एक भूमिका निभाती हैं],
न्याय पूरे विश्व में स्पष्ट रूप से देखा जाता है। क्योंकि, जैसा कि तीसरे सत्य में चर्चा की गई है, महाप्रतापी सृजक ने न्याय के बारे में कहा है।
निश्चित मापदण्डों के अनुसार तथा निश्चित मानदण्डों के अनुसार, प्राकृतिक आवश्यकता और आवश्यकता की भाषा में जो कुछ भी मांगा जाता है, वह सब प्राप्त किया जाता है।
परम आवश्यकता। दूसरे शब्दों में, वह अपने जीवन और अस्तित्व की सभी आवश्यकताओं को पूरा करता है। इसलिए, न्याय का यह रूप अस्तित्व और जीवन की तरह ही निश्चित है।

न्याय के नकारात्मक रूप में अन्यायी को दण्डित करना शामिल है,
और इस प्रकार गलत काम करने वालों को दंड और सजा के माध्यम से उनका हक दिया जाता है। यद्यपि यह रूप यहाँ पूरी तरह से प्रकट नहीं हुआ है,
अनगिनत संकेत इसके अस्तित्व का संकेत देते हैं। उदाहरण के लिए, धमाकों से
अतीत में विद्रोही आद और समूद लोगों को दी गई सज़ाओं से लेकर वर्तमान युग के लोगों तक का विवरण यह दर्शाता है कि
संसार में सर्वोच्च न्याय का बोलबाला है।

इस क्षणभंगुर संसार में उनके नगण्य परिणाम और महत्वहीन, अस्थायी प्रयोजनों के कारण वे उत्तरदायी नहीं हैं।
[यदि परलोक न होता], तो इसका अर्थ होता कि एक बड़े पर्वत को इतना महत्वहीन उद्देश्य दे दिया जाता
एक छोटा सा पत्थर। यह बिलकुल अनुचित और निरर्थक है।

प्राणियों और उन प्राणियों के बीच इतनी बड़ी असमानता
एक ओर मामले और दूसरी ओर उनके उद्देश्य
दूसरी ओर, इस दुनिया में, यह प्रमाणित करता है कि वे मूल रूप से ईश्वर की अभौतिक दुनिया की ओर से काम करते हैं।
अर्थ, जहाँ उनके सच्चे अर्थ पूरी तरह से व्यक्त किए जाएँगे। वे उपयुक्त फल भेजते हैं
उन्हें उस दूसरी दुनिया में ले जाएं, और उनकी नजरें उस पर टिका दें
पवित्र दिव्य नाम। इस दुनिया में प्रत्यारोपित
मिट्टी, वे प्रतीकों की दुनिया में पनपते हैं या
अमूर्त, आवश्यक रूप.

अपनी क्षमता के अनुसार हम बोते हैं और बोए जाते हैं
यहाँ पर आने के बाद फसल काटने के लिए। अगर आप देखें
दिव्य नामों से संबंधित चीज़ों के पहलू
और आख़िरत में तुम देखोगे कि हर बीज
शक्ति का चमत्कार) के लक्ष्य वृक्ष जितने विशाल हैं,
प्रत्येक फूल (दिव्य ज्ञान का एक शब्द) के रूप में है
एक पेड़ के फूल के रूप में कई अर्थ.[28] प्रत्येक फल,

[28] मैं मुख्य रूप से बीज, फूल और फलों के बीच से उदाहरण चुनता हूँ
क्योंकि वे सबसे अद्भुत और नाजुक चमत्कार हैं

यह ईश्वरीय कला का एक चमत्कार और ईश्वरीय दया की एक रचना है, तथा इसके उतने ही उद्देश्य हैं जितने एक वृक्ष के फल।
हमें भोजन के रूप में परोसना इसके अनगिनत कार्यों में से एक है
प्रयोजनों.

जब वह अपनी सेवा पूरी कर लेता है और अपना अर्थ व्यक्त कर देता है, तो वह मर जाता है और हमारे पेट में "दफन" हो जाता है।
ये क्षणभंगुर चीजें किसी दूसरी जगह पर हमेशा के लिए फल देती हैं, जहाँ वे खुद के स्थायी रूप छोड़ती हैं, अलग-अलग पहलुओं के शाश्वत अर्थों को व्यक्त करती हैं, और लगातार ईश्वर की महिमा करती हैं। हम इन पहलुओं से चीजों को देखकर सच्ची मानवता प्राप्त कर सकते हैं और इस तरह इस क्षणभंगुर दुनिया के माध्यम से अनंत काल तक पहुँचने का रास्ता पा सकते हैं। चूँकि यह सच है, इसलिए ये सभी जीव जो जीवन और मृत्यु के बीच घूमते हैं, जो पहले एकीकृत होते हैं और एक साथ इकट्ठे होते हैं और फिर बिखर जाते हैं और विलीन हो जाते हैं, उन्हें कुछ अन्य उद्देश्यों की पूर्ति करनी चाहिए।

यह स्थिति नकल और प्रतिनिधित्व के लिए की गई व्यवस्थाओं जैसी है। बहुत अधिक खर्च करके संक्षिप्त सभाएँ और फैलाव की व्यवस्था की जाती है, ताकि बाद में तस्वीरें ली जा सकें और दिखाई जा सकें।

ईश्वरीय शक्ति का। इसके बावजूद, चूँकि गुमराह प्रकृतिवादी और वैज्ञानिक ईश्वरीय नियति और शक्ति की कलम द्वारा उनमें अंकित सूक्ष्म डिजाइनों को "पढ़" नहीं सकते, इसलिए वे उनमें डूब गए हैं और प्रकृतिवाद के दलदल में गिर गए हैं।

हमारे संक्षिप्त व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन का कारण है

ताकि तस्वीरें ली जा सकें और हमारे कर्मों के परिणामों को रिकॉर्ड और संरक्षित किया जा सके। फिर उन्हें एक विशाल सभा स्थल में आंका जाएगा और एक महान प्रदर्शनी स्थल में दिखाया जाएगा, ताकि सभी समझ सकें कि उनमें सर्वोच्च खुशी प्राप्त करने की क्षमता है। पैगंबर ने इसे व्यक्त किया: "यह दुनिया आख़िरत के लिए खेती है।"

चूँकि दुनिया मौजूद है और चूँकि उसमें बुद्धि, कृपा, दया और न्याय अपने-अपने छापों के साथ मौजूद हैं, इसलिए आख़िरत भी मौजूद है। चूँकि सभी सांसारिक चीज़ें मुख्य रूप से उस दुनिया की ओर मुड़ी हुई हैं, इसलिए वे उसी की ओर जा रही हैं। आख़िरत को नकारना इस दुनिया और इसकी चीज़ों को नकारने के बराबर है। जिस तरह नियत समय और क़ब्र हमारा इंतज़ार कर रही है, उसी तरह जन्नत और नर्क भी हमारे आने का बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं।

ग्यारहवाँ सत्य: मानवता का द्वार, सत्य नाम की अभिव्यक्ति।

सर्वशक्तिमान सत्य, जो एकमात्र पूजनीय है, हमें अपने परम, सार्वभौमिक प्रभुत्व के लिए सबसे महत्वपूर्ण सेवक बनाता है, और फिर हमें उस शाश्वत निवास से वंचित करता है जिसके लिए हम योग्य हैं और जिसके लिए हम लालायित हैं? क्या वह हमें एक सबसे व्यापक दर्पण बना सकता है जिसमें वह अपने नामों को प्रकट कर सके, हमें सबसे अधिक के रूप में चुन सके

क्या यह विचारपूर्ण बात है कि हम उसे संबोधित करें और फिर हमें शाश्वत निवास से वंचित कर दें?

क्या वह हमें अपनी शक्ति के सबसे सुन्दर रूप में बना सकता है?

क्या वह हमें किसी भी अन्य प्राणी की तुलना में अधिक सुसज्जित जांचकर्ता के रूप में बनाता है, जो दिव्य दया के खजाने की सामग्री का आकलन और अनुभव करने के लिए माप उपकरणों और प्रणालियों से सुसज्जित है, और फिर हमें शाश्वत निवास से वंचित करता है? क्या वह हमें अन्य सभी प्राणियों की तुलना में अपने असीम उपहारों के लिए अधिक जरूरतमंद, नश्वरता से अधिक पीड़ित और अनंत काल के लिए सबसे अधिक इच्छुक बना सकता है, और फिर हमें शाश्वत निवास से वंचित कर सकता है?

क्या वह हमें सबसे नाजुक और

एक बेसहारा सजीव प्राणी, जो सांसारिक जीवन में सबसे अधिक दुखी और पीड़ा के प्रति संवेदनशील है, लेकिन क्षमता और संरचना में सबसे अधिक विकसित है, और फिर हमें शाश्वत निवास से वंचित कर सकता है? सर्वशक्तिमान सत्य हमें ऐसे सभी गुणों के साथ कैसे बना सकता है और फिर हमें शाश्वत निवास में नहीं भेज सकता, जिसके लिए हम योग्य हैं और जिसके लिए हम तरस रहे हैं? क्या वह हमारे सार को इस तरह से नकार सकता है, अपने परम सत्य होने के इतने विपरीत कार्य कर सकता है,

और ऐसा अन्याय करें जिसकी सत्य को कुरूपता कहकर निंदा करनी चाहिए?

क्या न्यायप्रिय शासक, परम दयालु, हमें सर्वोच्च विश्वास को धारण करने की क्षमता दे सकता है, जिससे आकाश और पहाड़ सिकुड़ गए, और फिर हमें शाश्वत सुख से वंचित कर सकता है? क्या वह हमें अपने मामूली और आंशिक उपायों और उपलब्धियों के साथ, हमारे निर्माता के सभी-समावेशी गुणों, सार्वभौमिक कृत्यों और अनंत अभिव्यक्तियों को मापने और जानने में सक्षम कर सकता है, और फिर हमें शाश्वत सुख से वंचित कर सकता है? क्या वह हमें सबसे नाजुक, कमजोर, नपुंसक और सबसे कमजोर प्राणियों के रूप में बना सकता है, हमें पृथ्वी के वनस्पति और पशु जीवन को आदेश देने का काम दे सकता है और हमें उनकी पूजा और ईश्वर की महिमा के तरीकों में हस्तक्षेप करने दे सकता है, और फिर हमें शाश्वत सुख से वंचित कर सकता है?

क्या वह हमें अपने सार्वभौमिक कार्यों को लघु पैमाने पर दर्शाने के लिए बाध्य कर सकता है, जिससे वह हमारे माध्यम से पूरे ब्रह्मांड में वचन और कर्म में अपने गौरवशाली प्रभुत्व की घोषणा कर सके, और फिर हमें शाश्वत सुख से वंचित कर सके? क्या वह हमें अपने स्वर्गदूतों से अधिक तरजीह दे सकता है और हमें प्रतिनिधि का पद दे सकता है, और फिर हमें शाश्वत सुख से वंचित कर सकता है?29 क्या वह हमें सब कुछ दे सकता है

29 सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने हमें ज्ञान, वाणी और स्वतंत्र इच्छा से प्रतिष्ठित किया है। हालाँकि वह हमें अपने आप काम करने की अनुमति देता है

और फिर हमें शाश्वत खुशी से वंचित करें, जो कि है
इन सभी कर्तव्यों का उद्देश्य, परिणाम और फल क्या है?

इस पर विचार करें: उसने हमें सबसे अभागा बनाया,
बदकिस्मत, पीड़ित और अपमानित प्राणी, और
फिर हमें बुद्धि दी, जो उनकी बुद्धि का उपहार है और
खुशी पाने का सबसे धन्य और प्रकाश फैलाने वाला साधन। अगर उसने हमें शाश्वत
खुशी से वंचित कर दिया,
हमारी बुद्धि यातना का साधन बन जायेगी।
परिणामस्वरूप, वह पूरी तरह से विपरीत कार्य करेगा
उसकी परम बुद्धि और दया के लिए।

याद रखें कि हमने एक अधिकारी की पहचान देखी थी-
हमने देखा कि उसका पद, कर्तव्य,
वेतन, निर्देश और आपूर्ति के कारण उसे
एक स्थायी क्षेत्र के लिए खुद को खपाना।
इस प्रकार, सभी सटीक विद्वानों और शुद्ध लोगों के रूप में
छिपी हुई सच्चाइयों को उजागर करने में सक्षम, हम सहमत हैं,
हमारी सभी इंद्रियों, क्षमताओं और बुद्धि से सुसज्जित

अपनी स्वतंत्र इच्छा के अनुसार, वह चाहता है कि हम उसकी आज्ञाओं के अनुसार
यहाँ शासन करें ताकि दुनिया ब्रह्मांड के अन्य भागों के साथ शांति, सद्भाव और
भाईचारे के साथ एकीकृत हो सके।
और शांति, और ताकि हम दोनों में खुशी पा सकें
वो दुनिया जिसके लिए हम तरसते हैं। उप-प्रधान होने का मतलब है
उनके नाम पर पृथ्वी पर शासन करने का अधिकार, लेकिन उनके द्वारा भेजी गई
उनकी आज्ञाओं का पालन करने की जिम्मेदारी के साथ
भविष्यद्वक्ता. (ट्र.)

शाश्वत सुख प्राप्त करने के लिए बौद्धिक और आध्यात्मिक क्षमताएँ विकसित करें।

उदाहरण के लिए, यदि आप अपनी कल्पना (बुद्धि का सेवक जो अवधारणाएं बनाता है) से कहें कि आप
शाही शान-शौकत के बीच दस लाख साल तक जीवित रह सकते हैं
और सुख और फिर शाश्वत विनाश से गुजरना, यह दुख की गहरी सांस लेगा,
जब तक कि
व्यर्थ कल्पना और शारीरिक स्वार्थ से धोखा खाया हुआ।

इसका मतलब यह है कि सबसे बड़ा अस्थायी सांसारिक सुख हमारी छोटी सी क्षमता को भी संतुष्ट नहीं कर सकता।
जैसे हमारा चरित्र और स्वभाव - अनंत काल तक फैली इच्छाएँ, समस्त सृष्टि को समाहित करने वाले विचार, और
सभी प्रकार के शाश्वत सुख की कामनाएँ—
दिखाओ, हम अनंत काल के लिए बनाए गए थे और अनंत काल तक रहेंगे।
यह दुनिया एक प्रतीक्षा कक्ष की तरह है
इसके बाद.

बारहवां सत्य: संदेशवाहक का द्वार
और रहस्योद्घाटन, नाम में की अभिव्यक्ति
ईश्वर दयालु है, दयावान है ।
निराधार कल्पनाएँ, भटकते संदेह और भ्रम,
सभी मच्छर के पंख से भी कमज़ोर, रास्ता बंद कर देते हैं
आख़िरत और जन्नत का दरवाज़ा? ये सब बताये गये हैं
हज़ारों निर्णायक कुरान की आयतों से खुला,
40 तरीकों से चमत्कारी, और महान दूत
परमेश्वर की लगभग 1,000 शक्तियों की शक्ति पर भरोसा करते हुए

यह वही रसूल है जिसकी बातों को सभी नबियों ने अपने चमत्कारों के आधार पर प्रमाणित किया है; जिसका दावा संतों ने अपने दर्शनों और आध्यात्मिक अनुभवों और खोजों के आधार पर पुष्ट किया है; और जिसकी सत्यता की पुष्टि सभी शुद्ध, सटीक विद्वानों ने अपनी जांच पर भरोसा करके की है।

ये बारह सत्य दर्शाते हैं कि पुनरुत्थान एक दृढ़तापूर्वक स्थापित सत्य है जिसे हिलाया नहीं जा सकता।

अल्लाह तआला ने इसे अपने नामों और गुणों की अनिवार्यता के रूप में स्थापित किया है, उसके रसूल ने अपने चमत्कारों और अपनी नबूवत के प्रमाणों की शक्ति से इसकी पुष्टि की है, कुरान अपनी सच्चाइयों और आयतों से इसे साबित करता है, और ब्रह्मांड अपनी सभी घटनाओं और उसमें होने वाली उद्देश्यपूर्ण घटनाओं के साथ इसकी गवाही देता है। पुनरुत्थान, जिस पर अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी और सृष्टि (अविश्वासियों को छोड़कर) सहमत हैं, और जिसका सत्य पहाड़ों की तरह शक्तिशाली और दृढ़ है, उसे बाल से भी कमज़ोर संदेह और शैतानी फुसफुसाहट से कैसे हिलाया जा सकता है?

पुनरुत्थान के लिए ये एकमात्र तर्क नहीं हैं, क्योंकि कुरान, जो हमें इन बारह सत्यों के बारे में बताता है, इस मुद्दे के कई अन्य पहलुओं की ओर इशारा करता है। और प्रत्येक पहलू इस बात का स्पष्ट संकेत है कि हमारा

सृष्टिकर्ता हमें इस क्षणभंगुर निवास से स्थानांतरित करेगा

एक शाश्वत के लिए। इसके अलावा, दिव्य नामों की आवश्यकता है
पुनरुत्थान केवल उल्लेखित तक ही सीमित नहीं है:

सर्वज्ञ, सर्व उदार, सर्व दयालु, सर्व न्यायी, सर्व अभिलेख रखने वाला और सब कुछ पहले से रखने वाला। वास्तव में,
ब्रह्माण्ड के क्रम में प्रकट सभी दिव्य नाम-

प्रशासन और प्रशासन के लिए पुनरुत्थान की आवश्यकता होती है।

पुनरुत्थान की ओर इशारा करने वाली “प्राकृतिक” घटनाएँ सिर्फ़ उन्हीं तक सीमित नहीं हैं, जिन पर हमने चर्चा की है। ब्रह्मांड में ज़्यादातर चीज़ों के पहलू होते हैं

और पर्दे के समान गुण जो खुलते हैं

दायाँ और बायाँ। एक पहलू निर्माता की गवाही देता है,
और दूसरा पुनरुत्थान को इंगित करता है। उदाहरण के लिए-

कृपया, हमारी रचना सबसे सुंदर रूप में प्रदर्शित करती है

निर्माता, उस सबसे सुंदर रूप में निहित व्यापक क्षमताओं के साथ, जबकि हमारा तीव्र

गिरावट पुनरुत्थान की ओर इशारा करती है।

यदि हम एक ही पहलू को दो तरीकों से देखें, तो हम
कभी-कभी ध्यान दें कि यह निर्माता और निर्माता दोनों को इंगित करता है

और पुनरुत्थान। उदाहरण के लिए, बुद्धिमानी से क्रम-व्यवस्था और व्यवस्था, अनुग्रहपूर्ण सजावट, न्यायपूर्ण संतुलन और माप, और दयालु पक्षपात देखा जाता है

अधिकांश चीजों में यह दर्शाया गया है कि वे

एक सर्वज्ञ, सर्वदयावान की शक्ति का हाथ,

सर्व-न्यायप्रिय और सर्व-दयालु निर्माता। लेकिन इसके बावजूद

इन नामों की शक्ति और अनंतता और उनके
यदि हम उन क्षणभंगुर प्राणियों के संक्षिप्त और तुच्छ जीवन को देखें जो अपनी अभिव्यक्तियाँ प्राप्त कर रहे हैं,
प्रकट होते ही परलोक प्रकट हो जाता है। इस प्रकार,
उनके अस्तित्व और जीवन की जीभ, सभी चीजें सुनाती हैं
और दूसरों से कहलवाएँ: “मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ और

अंतिम दिन।"

निष्कर्ष

पूर्ववर्ती बारह सत्य इसकी पुष्टि करते हैं, पूरक हैं,
और एक दूसरे का समर्थन करते हैं। एक सत्य के रूप में, वे
वांछित परिणाम प्रदर्शित करें। क्या कोई संदेह उन बारह दृढ़ दीवारों को भेद सकता है, जिनमें से प्रत्येक स्टील या
हीरे, और पुनरुत्थान में विश्वास को हिला दें
उनके भीतर क्या रखा है?

आपकी रचना और आपका पुनरुत्थान एक ही है
एक आत्मा (31:28) का अर्थ है कि मानवता या एक व्यक्ति का निर्माण और पुनरुत्थान ईश्वरीय शक्ति के लिए समान रूप से आसान है। नुक्ता (बिंदु) में, मैं

इस सत्य को विस्तार से बताया। यहाँ, मैं इसका सारांश दूँगा और
विभिन्न तुलनाएँ प्रस्तुत करें.30 उदाहरण के लिए, यदि
सूर्य के पास स्वतंत्र इच्छा थी और वह स्वयं को अपनी इच्छानुसार प्रकट कर सकता था,

एक प्रकाश देने वाली वस्तु के रूप में वह ऐसा कर सकता था

30 यह ग्रंथ सईद नूरसी की मथनावी नूरिया में शामिल है।
जो अंग्रेजी में Epitomes of Light के नाम से उपलब्ध है। (ट्र.)

तो उसी सहजता के साथ असंख्य पारदर्शी
वस्तुओं या एक कण में.31 पारदर्शी होने के कारण,
सबसे छोटी पारदर्शी चीज़ भी सूर्य की छवि को समाहित करने में समुद्र की सतह के बराबर है।
सुव्यवस्थितता और उसके परस्पर संबंधित भागों को समझने में, एक बच्चा सक्षम हो सकता है
एक युद्धपोत को खिलौना नाव की तरह आसानी से चलाना।
आज्ञाकारिता के आधार पर, एक कमांडर सेना को आदेश दे सकता है कि
एक सैनिक को दिए गए उसी "मार्च!" के साथ आगे बढ़ें।

एक ऐसे तराजू की कल्पना करें जो इतना संवेदनशील हो कि वह वजन कर सके
दो अखरोट, और इतना बड़ा कि इसका वजन दो हो सकता है
सूरज। यदि बराबर वजन के दो अखरोट या सूरज थे
इन पैन में रखे जाने पर, परिणामी संतुलन,
वही शक्ति जो एक अखरोट को स्वर्ग तक उठा लेती है और
दूसरे को ज़मीन पर गिरा देगा, सूर्य को हिला देगा
उसी सहजता से.

इस तुच्छ, अपूर्ण और क्षणभंगुर संसार में
आकस्मिकता के कारण, और ऐसे गुणों के कारण
चमक, पारदर्शिता, सुव्यवस्था और अंतरसम्बन्ध, आज्ञाकारिता और संतुलन (या साम्यावस्था), सभी चीजें समान हो जाती हैं, और असंख्य चीजें

एक चीज़ के बराबर दिखाई देते हैं। यह देखते हुए, और गुण के कारण
परम सत्ता की उज्ज्वल अभिव्यक्तियों का

---

[31] वस्तुतः सूर्य प्रत्येक वस्तु में समान सहजता से प्रकट होता है, बिना किसी को बाधा पहुंचाए।

शक्तिशाली एक की आवश्यक, अनंत और पूरी तरह से परिपूर्ण शक्ति; चीजों के आंतरिक आयाम की पारदर्शिता; सटीक सार्वभौमिक आदेश निर्धारित किया गया
ईश्वरीय बुद्धि और नियति द्वारा; सृष्टि के लिए उसके आदेश के प्रति वस्तुओं का पूर्णतः पालन; तथा
क्योंकि सभी चीजों का अस्तित्व या गैर-अस्तित्व
समान रूप से संभव है, थोड़ा और अधिक, छोटा और महान
उसकी शक्ति के संबंध में समान हैं। और इसलिए वह
एक तुरही ध्वनि के साथ हमें पुनर्जीवित करें, जैसे कि हम थे
एक व्यक्ति।

इसके अलावा, किसी चीज़ की ताकत और
कमज़ोरी इसके हस्तक्षेप से निर्धारित होती है
विपरीत। गर्मी की डिग्री ठंड से निर्धारित होती है
हस्तक्षेप, कुरूपता द्वारा सौंदर्य की डिग्री' हस्तक्षेप, और अंधकार द्वारा प्रकाश की डिग्री'
हस्तक्षेप। लेकिन अगर कोई गुण या विशेषता किसी चीज़ के लिए
आवश्यक है, यानी अगर वह सीधे तौर पर उत्पन्न होती है
स्वयं से भिन्न है और स्वयं से लगभग समान है, इसका
इसमें विपरीत हस्तक्षेप नहीं कर सकता। यदि इसका विपरीत हस्तक्षेप कर सकता है तो
हस्तक्षेप, इसका मतलब यह होगा कि विपरीत
समान गुणों को एक ही चीज़ में मिलाना होगा - जो स्पष्ट रूप से असंभव है।

परम शक्तिशाली की शक्ति उसके दिव्य सार के लिए आवश्यक है, सीधे उससे उत्पन्न होती है, और लगभग उसी के समान है। यह देखते हुए, और

कि यह भी पूर्णतः परिपूर्ण है, इसमें कोई त्रुटि नहीं हो सकती
इसके विपरीत इसमें हस्तक्षेप करने के लिए। इसलिए भगवान
महामहिम वसंत को उतनी ही आसानी से बनाते हैं जितनी आसानी से वे वसंत को बनाते हैं
फूल, और मानवता को उसी सहजता से पुनर्जीवित और एकत्रित करेगा जैसे
वह एक व्यक्ति को पुनर्जीवित करता है। यदि भौतिक कारणों को केवल एक
फूल बनाना पड़े,
दूसरी ओर, उन्हें सक्षम होना होगा
एक संपूर्ण स्प्रिंग बनाएं.

अब तक हमने जो कुछ भी समझाया है वह सब निम्नलिखित से लिया गया है
बुद्धिमान कुरान की किरणें। तो, आइए सुनते हैं
आगे पढ़ें कि इसमें और क्या कहा गया है:

> क्योंकि अन्तिम और निर्णायक तर्क तो अल्लाह ही है। (6:149)

> ईश्वर की दया के चिन्हों और छापों को देखो,
> वह कैसे मिट्टी को उसकी मृत्यु के बाद पुनर्जीवित करता है। वह यह है
> जो मरे हुओं को जिलाएगा [उसी रीति से]। वह है
> सब चीज़ों पर सामर्थी। (30:50)

> [मानवता] हमारे लिए एक उदाहरण गढ़ती है, और भूल जाती है
> अपनी ही रचना को दोहराते हुए कहा: “उन लोगों को कौन पुनर्जीवित करेगा
> क्या तुम हड्डियाँ नहीं होगे, जब वे सड़ चुकी हों?" कह दो, "वही जो
> जिसने उन्हें सबसे पहले पैदा किया वही उन्हें फिर से ज़िंदा करेगा।
> वह हर सृष्टि का ज्ञाता है। (36:78-79)

> ऐ लोगों, अपने रब से डरो, क़ियामत की कयामत
> यह एक शक्तिशाली चीज़ है। जिस दिन आप इसे देखेंगे, हर दूध पिलाने वाली
> महिला अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी, और हर
> गर्भवती स्त्री अपना बोझ उतार देगी। तुम देखोगे

मानवता नशे में है, फिर भी वे नशे में नहीं हैं। भयानक
परमेश्वर का दण्ड होगा। (22:1-2)

हे ईश्वर, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। निश्चय ही वह तुम सबको न्याय के दिन इकट्ठा करेगा, जिसके विषय में कोई निर्णय नहीं है।
इसमें कोई संदेह नहीं है। ईश्वर से अधिक सत्य कौन है?
[वह बोलता है] और ख़बर देता है? (4:87)

पवित्र, शुद्ध व्यक्ति आनंद और आशीर्वाद में रहेगा।
दुष्ट लोग धधकती आग में होंगे। (82:13-14)

जब पृथ्वी अपने [अंतिम और भयानक] आघात से हिलती है
भूकंप आता है और अपना बोझ फेंक देता है, और मानवता पूछती है: "इसमें क्या समस्या है?" उस दिन यह
इसकी ख़बरें सुनाएगा, क्योंकि तुम्हारे रब ने
उस दिन मनुष्य बिखरी हुई टोलियों में अपने कर्म दिखाने के लिए आगे आएगा। जो कोई भी ऐसा करेगा
एक परमाणु के बराबर भी अच्छाई उसे देखेगी, जो कोई भी करेगा
एक अणु के बराबर भी बुराई उसे देखेगी। (99:1-8)

शोर और कोलाहल! शोर और कोलाहल क्या है?
या? काश तुम जानते कि शोर और कोलाहल क्या है! जिस दिन मानवता पतंगों की तरह हो जाएगी
चारों ओर बिखर जाएंगे, और पहाड़ ताश के पत्तों की ऊन के समान हो जाएंगे।
तब जिनके तराजू भारी होंगे [अच्छे में]
कर्म] सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे। लेकिन जो लोग
तराजू हल्के हैं, एक [अथाह] गड्ढे के गर्भ में डूब जाएँगे। तुम्हें क्या बताएगा कि वह क्या है
जैसे? भड़कती हुई आग! (101:1-11)

आकाश और पृथ्वी की अदृश्य वस्तुएँ ईश्वर ही की हैं।
क़ियामत का मामला पलक झपकने जैसा है,

या उससे भी ज़्यादा जल्दी। अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थी है। (16:77)

इन और इसी प्रकार की अन्य आयतों को सुनकर, हम कहना चाहिए: “हम ऐसा विश्वास करते हैं और पुष्टि करते हैं।”

मैं ईश्वर, उसके फ़रिश्तों, किताबों, रसूलों, अन्तिम दिन और नियति पर ईमान रखता हूँ, क्योंकि जो भी अच्छा या बुरा होता है, वह उसके ज्ञान में दर्ज होता है और उसी के द्वारा बनाया जाता है। क़ियामत सच्ची है, जन्नत सच्ची है, आग सच्ची है, सिफ़ारिश [आख़िरी दिन] सच्ची है और मुनकर और नकीर सच्ची हैं। 32 ईश्वर कब्रों में पड़े लोगों को जीवित करेगा। मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद ईश्वर के रसूल हैं।

हे ईश्वर, अपनी दया के सबसे सुंदर, महान और प्रतिष्ठित, परिपूर्ण और सुंदर फल पर कृपा करें, जो पूरे ब्रह्मांड में एक धन्य वृक्ष की तरह खिल गया है; उस पर जिसे आपने सभी संसारों के लिए दया के रूप में भेजा है, और हमारे लिए उस "वृक्ष" के सबसे सुशोभित, सबसे सुंदर, सबसे उज्ज्वल और सबसे उत्तम फल को प्राप्त करने का साधन बनाया है जो परलोक तक फैला हुआ है, अर्थात स्वर्ग में। हे ईश्वर, हमें और हमारे माता-पिता को आग से बचाओ, और हमें और हमारे माता-पिता को अपने चुने हुए पैगंबर की खातिर पवित्र, पवित्र लोगों के साथ स्वर्ग में ले जाओ। आमीन।

32 मुनकर और नकीर वे दो फ़रिश्ते हैं जो मृतकों से इस दुनिया में उनके विश्वासों और कार्यों के बारे में पूछताछ करते हैं। (सं.)

यदि आप इस ग्रंथ का अध्ययन खुले मन से कर रहे हैं, तो यह मत पूछिए: “मैं इस दसवें वचन को इसके सभी विवरणों के साथ तुरंत क्यों नहीं समझ सकता?”

यदि आप इसे तुरंत नहीं समझ पाते तो ऊब जाएंगे।
यहां तक कि इब्न सीना जैसे दर्शनशास्त्र के महारथी ने भी यह माना कि पुनरुत्थान को तर्कसंगत मानदंडों के माध्यम से नहीं समझा जा सकता। चूंकि यह मानवीय तर्क से परे है, इसलिए हमें इस पर विश्वास करना चाहिए।

इसके अलावा, इस्लाम के लगभग सभी विद्वान इसे उन प्रकट सत्यों में से एक मानते हैं जिसके लिए विश्वास की आवश्यकता होती है और जिसे तर्क के माध्यम से स्थापित नहीं किया जा सकता है। इसलिए, मानवीय तर्क के लिए ऐसे गहन और उच्च मुद्दे को समझना कठिन है। दयालु ईश्वर का धन्यवाद

सृष्टिकर्ता की दया और विवेकपूर्ण कुरान के प्रकाश से प्रेरित होकर, मैं आशा करता हूँ कि यदि आप ध्यानपूर्वक और बार-बार इसका अध्ययन करेंगे, तो यह दसवाँ शब्द आपके पुनरुत्थान की सच्चाई के बारे में आपको आश्वस्त करेगा और इसमें विश्वास को सुरक्षित करने में मदद करेगा।

यहाँ मानवीय तर्क के सामने एक कठिनाई यह है कि पुनरुत्थान और महान

भगवान के महानतम नाम के प्रकटीकरण के माध्यम से सभा घटित होगी, इस घटना को उनके महानतम नाम के प्रकटीकरण और अन्य नामों की सार्वभौमिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से उनके कार्यों को प्रदर्शित करके ही तर्कसंगत रूप से स्थापित किया जा सकता है, जैसे कि

अगले वसंत के आगमन को प्रमाणित करते हुए। हमने इस वचन में इसी दृष्टिकोण का पालन किया है।

परिशिष्ट

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु,
कृपालु है।

अतः जब तुम रात में प्रवेश करोगे और जब तुम सुबह में प्रवेश करोगे, तब अल्लाह की प्रशंसा हो। आकाशों और धरती में, दिन ढलने के समय और दोपहर के समय, उसी की प्रशंसा हो। वही जीवित को मुर्दों में से निकालता है और मुर्दों को जीवितों में से निकालता है और मिट्टी को उसके मर जाने के पश्चात जीवन प्रदान करता है। इसी प्रकार तुम भी निकाले जाओगे। उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर देखो, तुम बिखरे हुए लोग हो। और उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारे ही बीच से जोड़े बनाए, ताकि तुम उनके साथ चैन से रहो और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दया स्थापित की।

निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करें। और उसकी निशानियों में से आकाशों और धरती की रचना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का विभेदन भी है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ज्ञान रखते हैं।

और उसकी निशानियों में से वह सोना भी है जो तुम रात को और दिन को लेते हो और उसके अनुग्रह से जीविका की खोज करते हो। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो ध्यान रखें। और उसकी निशानियों में से वह तुम्हें बिजली भी दिखाता है ताकि तुम डरो और आशा दोनों प्राप्त करो और वह आकाश से वर्षा भी बरसाता है।

आकाश में उड़ता है और इसके साथ ही पृथ्वी को मृत अवस्था के बाद जीवन देता है। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं। और उसकी निशानियों में से यह भी है कि आकाश और धरती उसके आदेश से स्थिर हैं। फिर जब वह तुम्हें धरती से पुकारता है तो तुम तुरन्त निकल आते हो। आकाश और धरती में जो भी प्राणी है, सब उसी का है। सभी उसी के आज्ञाकारी हैं।

वही है जो सृष्टि को उत्पन्न करता है, फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है, और उसी के लिए यह सबसे सरल है। आकाशों और धरती में सबसे बड़ी मिसाल उसी की है। वह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शी है। (30:17-27)

ये उत्कृष्ट, ईश्वर-प्रदत्त आयतें, पुनरुत्थान की वास्तविकता के उच्च और पवित्र प्रमाण, विश्वास के एक ध्रुव को स्थापित करते हैं। उन प्रमाणों से, यहाँ एक महत्वपूर्ण तर्क प्रस्तुत किया गया है। यह ईश्वरीय कृपा का एक सूक्ष्म उदाहरण था कि मुहाक़मत (तर्क) के अंत में, जिसे मैंने क़ुरआन की व्याख्या के सिद्धांतों को निर्धारित करने के लिए लगभग 30 साल पहले लिखा था, ये शब्द आए: "दूसरा उद्देश्य: क़ुरआन की दो आयतें जो पुनरुत्थान का उल्लेख करती हैं, उन्हें स्पष्ट और स्पष्ट किया जाना चाहिए।" और यहीं पर यह समाप्त हो गया।

मेरे दयालु प्रभु के प्रमाणों और पुनरुत्थान के प्रमाणों के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद और धन्यवाद कि 30 साल बाद, मैं उस कार्य को फिर से शुरू करने में सक्षम हो गया हूँ। लगभग 9 या 10 साल पहले,

ईश्वर ने मुझे दसवीं और उनतीसवीं आयतें प्रदान कीं, जिनमें ईश्वरीय आदेश के अनेक सशक्त प्रमाण और व्याख्याएँ हैं - ईश्वर की दया की निशानियों और छापों को देखो, कि वह किस प्रकार मिट्टी को उसके मर जाने के बाद जिलाता है। निश्चय ही वह मुर्दों को भी जिलाएगा, और वह हर चीज़ पर सामर्थ्यवान है - यह दो आयतों में से पहली आयत है।

दसवें और उनतीसवें वचनों ने पुनरुत्थान को नकारने वालों को चुप करा दिया। अब, लगभग एक दशक बाद, उसने मुझे उन सर्वोच्च आयतों में से दूसरी आयत की व्याख्या करने की अनुमति दी है, जो पुनरुत्थान में विश्वास के अजेय किले हैं।

वह व्याख्या यहां संबंधित है।

भाग एक: दो बिंदु

[इस परिचय में दो बिंदु हैं जो पुनरुत्थान में विश्वास के कई आध्यात्मिक लाभों में से एक और इसके महत्वपूर्ण लाभों में से एक को संक्षेप में बताते हैं

व्यापक परिणाम। वे यह भी दिखाते हैं कि यह विश्वास मानव जीवन, विशेष रूप से सामाजिक जीवन के लिए कितना आवश्यक है, और इसके कई व्यापक प्रमाणों में से एक का सारांश देते हैं। इसमें यह भी बताया गया है कि यह विश्वास कितना स्पष्ट और निर्विवाद है।

जी उठने।]

पहला बिंदु: हम परलोक में विश्वास के अनेक तर्कों में से केवल चार का वर्णन करेंगे, जो मानव सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन का आधार और आधार हैं।

जीवन का आधार है, तथा समस्त खुशियों और उपलब्धियों का आधार है।

पहला तर्क: बच्चे मानवता का एक-चौथाई हिस्सा हैं। वे मृत्यु को सहन नहीं कर सकते, जो उन्हें एक भयानक त्रासदी लगती होगी, सिवाय स्वर्ग के विचार के, जो आध्यात्मिक रूप से उनके कमज़ोर, नाजुक स्वभाव को मज़बूत करता है। यह उन्हें खुशी से जीने की उम्मीद देता है, उनके स्वभाव की कमज़ोरी के बावजूद, जो इतनी आसानी से आँसू में बह सकता है।

स्वर्ग को ध्यान में रखते हुए, वे कह सकते हैं: “मेरी छोटी बहन या दोस्त मर गई है और स्वर्ग में एक पक्षी बन गई है। वह वहाँ खेल रही है और बेहतर जीवन का आनंद ले रही है।” यदि वे ऐसा नहीं कर सकते, तो उनके आस-पास के लोगों की मृत्यु के बारे में उनकी जागरूकता उन्हें अभिभूत कर देगी; उनकी प्रतिरोध करने की शक्ति और आंतरिक शक्ति को कुचल देगी; उनकी आँखों और सभी आंतरिक शक्तियों, हृदय, मन और आत्मा को रोने पर मजबूर कर देगी; और उन्हें नष्ट कर देगी या उन्हें व्याकुल और पागल जानवरों में बदल देगी।

दूसरा तर्क: बुज़ुर्ग लोग मानवता का एक-चौथाई हिस्सा हैं। वे मृत्यु को तभी सहन कर सकते हैं जब वे मृत्यु के बाद के जीवन में विश्वास करते हैं, जो उन्हें सांत्वना देता है।

उन्हें आसन्न विलुप्ति के लिए कुछ हद तक

इस जीवन से वे इतने जुड़े हुए हैं, कि उन्हें अपनी प्यारी दुनिया से अलग कर दिया गया है। अनंत जीवन की आशा

जीवन उन्हें दर्द और निराशा का सामना करने की अनुमति देता है

उनके नाजुक स्वभाव और भावना के बावजूद, मृत्यु और अलगाव की आशंका से उत्पन्न।

ऐसी आशा के बिना, हमारे आदरणीय बुजुर्ग जो

हमारे वृद्ध माता-पिता, जिन्हें बहुत सम्मान की आवश्यकता है,

एक शांत और स्थिर हृदय, आत्मा में इतना व्याकुल और दिल में व्यथित हो जाएगा कि उनका

दुनिया एक अंधेरी जेल लगती होगी, उनका जीवन

पीड़ा का भारी बोझ.

तीसरा तर्क: युवा लोग सामाजिक जीवन का मुख्य आधार और आधार हैं। केवल विचार ही युवा लोगों को प्रभावित कर सकता है।

नरक की शक्ति उन्हें तूफानी ऊर्जा को नियंत्रित करने में सक्षम बनाती है

भावनाओं और जुनूनों को, उनकी उग्र भावनाओं को, विनाशकारीता और उत्पीड़न से बचाकर उन्हें सामूहिक हित की सेवा में लगाना।

इस डर से, और जवानी की जवानी की ऊर्जा से नशे में,

वे "शक्ति ही सफलता दिलाती है" के सिद्धांत का पालन करेंगे

सही है” और अपनी भावनाओं को खुली छूट दे दो। यह

दुनिया को कमज़ोर और क्रूर लोगों के लिए नरक बना देगा

शक्तिहीन, और मानव जीवन को निम्न स्तर तक गिराना

जानवर.

चौथा तर्क: परिवार हमारे सांसारिक जीवन का समावेशी केंद्र है, हमारा सबसे मौलिक संसाधन है, तथा स्वर्ग, घर और महल है।

हमारी सांसारिक खुशियों का घर हर व्यक्ति का घर होता है
अपनी खुद की छोटी सी दुनिया। जीवन शक्ति और
हमारे घरों और परिवारों की खुशियाँ इस बात पर निर्भर करती हैं
ईमानदार और समर्पित सम्मान, सच्ची दयालुता, और
आत्म-त्याग करुणा। यह सब, बदले में, निर्भर करता है
शाश्वत मित्रता और साहचर्य पर,
अमर बंधन, साथ ही यह विश्वास कि भावनाएं
माता-पिता और बच्चों, भाइयों और बहनों, तथा पतियों और पत्नियों के
बीच का सम्बन्ध सदा बना रहेगा।

उदाहरण के लिए, एक आदमी कह सकता है: "मेरी पत्नी
एक शाश्वत दुनिया में मेरा शाश्वत साथी।
अगर वह अब बूढ़ी हो गई है और पहले जैसी सुंदर नहीं रही, तो
शाश्वत सौंदर्य स्वयं को परलोक में प्रकट करेगा।
अनंत काल में उस साथ की खातिर, मैं
इस संसार में बलिदान करो और अपनी करुणा दिखाओ।"
इस प्रकार वह अपनी वृद्ध पत्नी के प्रति प्रेम, देखभाल,
और करुणा, मानो वह एक भव्य हूरी थी।
एक ऐसा साथ जो कुछ घंटों की शारीरिक संगति के बाद स्थायी अलगाव में समाप्त हो जाता है, वह
यह केवल मामूली, क्षणिक और असुरक्षित होगा। यह केवल सतही प्रेम और सम्मान पैदा करेगा जो कि
शारीरिक आकर्षण और यौन प्रवृत्ति। अन्य रुचियाँ

और अंततः शक्तिशाली भावनाएं उत्पन्न होंगी और,
उस सम्मान और चिंता को पराजित करके, सांसारिक स्वर्ग को सांसारिक नरक में बदल दिया जाता है।

इस विश्वास के अनेक लाभों में से एक यह है कि हमारे सामाजिक जीवन से संबंधित है। यदि संबंधित पहलुओं और इन चारों के साथ सादृश्य के माध्यम से लाभ निकाले जाते हैं, यह स्पष्ट हो जाएगा कि पुनरुत्थान की वास्तविकता और सत्य उतना ही निश्चित है जितना हमारा अपना अस्तित्व और सार्वभौमिक आवश्यकता। यह उससे भी अधिक स्पष्ट होगा

तर्क यह है कि भोजन अवश्य होना चाहिए क्योंकि हमारे पेट को इसकी आवश्यकता होती है।

यदि पुनरुत्थान की वास्तविकता और सत्य, और सब इसके परिणाम घटा दिए जाते हैं
मानवीय अवस्था, मानव होने का अर्थ—
सृष्टि में इतना श्रेष्ठ, महत्वपूर्ण और महत्त्वपूर्ण—
सूक्ष्मजीवों द्वारा खाए गए शव के बराबर हो जाता है।
मानवता के व्यवस्थित जीवन से चिंतित लोगों को,
नैतिकता और समाज इस मामले पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
पुनरुत्थान से इनकार किया गया है, वे किससे भरेंगे?
परिणामस्वरूप शून्य और गहरे घावों को ठीक करना?

दूसरा बिन्दु: हम एक संक्षिप्त और संक्षिप्त रूप में, विश्वास के अन्य स्तंभों द्वारा दिया गया समर्थन। मुहम्मद की पुष्टि करने वाले सभी चमत्कार
एक रसूल के रूप में, उनकी नबूवत के सभी प्रमाण, और
उसकी सच्चाई के सभी सबूत गवाही देते हैं और

पुनरुत्थान की वास्तविकता और सत्य को स्थापित करें। सर्वशक्तिमान ईश्वर की एकता के बाद, उस महान व्यक्ति ने अपना जीवन पुनरुत्थान पर केंद्रित किया। वास्तव में, सभी पैगम्बरों की पुष्टि करने वाले चमत्कार और प्रमाण, और मानवता को उनकी पुष्टि करने के लिए प्रेरित करना, उसी सत्य की गवाही देते हैं। इसी तरह, मुसलमानों के लिए उनके रसूलों पर विश्वास करने की आवश्यकता के बाद उनकी किताबों पर विश्वास करना आवश्यक है, जो इस सत्य की गवाही देती हैं।

कुरान की सच्चाई को स्थापित करने वाले सभी चमत्कार, प्रमाण और सत्य उसी तरह पुनरुत्थान की वास्तविकता और सच्चाई को स्थापित और प्रमाणित करते हैं। कुरान का लगभग एक तिहाई हिस्सा आख़िरत से संबंधित है, इसके अधिकांश छोटे सूरे शक्तिशाली आयतों से शुरू होते हैं जो इसे उजागर करते हैं, और यह सैकड़ों आयतों में स्पष्ट रूप से या निहित रूप से इस सत्य की घोषणा करता है, जिससे यह साबित होता है। उदाहरण के लिए:

जब सूर्य मुड़ा हुआ होगा। (81:1)

ऐ लोगो! अपने रब से डरो, क़ियामत का तूफ़ान बहुत बड़ी चीज़ है। (22:1)

जब पृथ्वी हिलती है (99:1)

जब आकाश फट जायेगा (82:1)

जब आकाश फट जायेगा (84:1)

वे एक दूसरे से किस विषय में प्रश्न कर रहे हैं? (78:1)

क्या इस ज़बरदस्त घटना की कहानी तुम तक पहुँची है? (88:1)

जैसा कि लगभग 20 सूरों की प्रारंभिक आयतों में कहा गया है
कि पुनरुत्थान का सत्य मानवता के लिए सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक है, कई अन्य आयतें उसी सत्य की पुष्टि करती हैं और अन्य सबूत प्रदान करती हैं। आप पुनरुत्थान पर विश्वास न करने के बारे में कैसे सोच सकते हैं? इस तरह का विश्वास इस प्रकार स्पष्ट किया गया है

एक ऐसी किताब में अतिरिक्त असंख्य साक्ष्यों और दावों से सूर्य की महिमा होती है जो इस्लामी धर्मशास्त्र में निहित सभी वैज्ञानिक और ब्रह्मांडीय सत्यों का फल देती है।

विज्ञान, भले ही एक श्लोक में एक संदर्भ पर्याप्त हो। क्या आप सूर्य या ब्रह्मांड के अस्तित्व को भी नकारते हैं?

एक सम्राट कभी-कभी अपनी सेना को केवल अपने किसी कथन की सच्चाई साबित करने के लिए युद्ध में भेज देता है।
तो फिर, क्या उस सबसे पवित्र और गर्वित सम्राट के अनगिनत शब्दों, वादों और धमकियों की सच्चाई को नकारना भी संभव है? महान सम्राट की ओर से एक संकेत ही पुनरुत्थान की सच्चाई को साबित करने के लिए पर्याप्त है, खासकर तब जब उनके कुरान ने अनगिनत आत्माओं, बुद्धि, दिलों और आत्माओं पर शासन किया है, उन्हें प्रशासित किया है और शिक्षित किया है।

13 शताब्दियों से भी अधिक समय तक धार्मिकता और सत्य को सिद्ध किया। इस सत्य को सिद्ध और प्रदर्शित किया
हजारों स्पष्ट प्रमाणों के साथ, हम और क्या कर सकते हैं
जो लोग इस सत्य को नकारते रहते हैं, उनसे अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता
क्या वे नरक की आग में दण्ड के पात्र हैं?

इसी प्रकार, सभी दिव्य पृष्ठ और पवित्र पुस्तकें
कुरान के अलावा, जिनमें से प्रत्येक को संबोधित किया गया था
किसी खास उम्र और समय के लिए, इसे स्वीकार करें। इस प्रकार यह कुरान के लिए तार्किक है, जो भविष्य को संबोधित पुस्तक है
और सभी उम्र के लोगों के लिए, इस पर इतने विस्तार से व्याख्या करना और
ऐसे स्पष्ट तर्कों के साथ। यहां तक कि उनके संक्षिप्त और
कभी-कभी संकेतात्मक व्याख्याएं इतनी सशक्तता से इसकी पुष्टि करती हैं
कि वे कुरान में जो कुछ अवतरित हुआ है, उसका हजार गुना हस्ताक्षर बन जाती हैं।

हम प्रार्थना पर ग्रंथ से निकाले गए तर्क को शामिल करते हैं। इस संक्षिप्त तर्क में, अंतिम दिन में विश्वास की गवाही शामिल है।

विश्वास के अन्य स्तंभ, मुख्यतः ईश्वर में विश्वास
सन्देशवाहक और पुस्तकें, सशक्त है और पर्याप्त हो सकती है
सभी संदेहों को समाप्त करने के लिए। इस प्रार्थना में हम कहते हैं:

> हे दयालु प्रभु! महान के माध्यम से
> रसूल की शिक्षा और हिकमत वाले कुरान की शिक्षा से मैंने समझ लिया है
> कि सभी ईश्वरीय पुस्तकें और
> हे पैगम्बरों, मुख्यतः कुरान और आपके महान
> मैसेंजर, दावा करें और गवाही दें कि अभिव्यक्तियाँ

आपके सभी महिमा और कृपा के नाम, जिनकी अनुकरणीय किरणें पूरे ब्रह्मांड में देखी जाती हैं, निरंतर प्रकट होती रहेंगी

अनंत काल को अधिक शानदार तरीके से; कि आपकी उदारता और आशीर्वाद, दयालु अभिव्यक्तियाँ और
जिसके नमूने इस दुनिया में देखे जाते हैं,
निवास में और अधिक शानदार ढंग से कायम रहेगा
शाश्वत आनंद की; और जो लोग इसके शौकीन हैं
उन्हें और जो उन्हें इस संक्षिप्त सांसारिक जीवन में पहचानते हैं
जो लोग प्रसन्नतापूर्वक उनकी खोज करेंगे और प्रेमपूर्वक उनकी खोज करेंगे, वे परलोक में सदैव उनके साथ रहेंगे।

इसके अलावा सभी नबियों, आपके महान रसूल के नेतृत्व में,
जो अपने सैकड़ों प्रत्यक्ष चमत्कारों पर भरोसा करते थे
और उनकी सत्यता के स्पष्ट संकेत भी
वे जो निर्णायक दिव्य छंद लाए हैं, वे मास्टर हैं
सभी शानदार और प्रबुद्ध "आत्माओं" का; सभी संतों का
जो सभी प्रबुद्ध “दिलों” के नेता हैं; और सभी
सच्चे और शुद्ध विद्वान जो सभी प्रखर, प्रबुद्ध बुद्धि को प्रेरणा देने वाले स्रोत हैं - वे मानवता को शाश्वत सुख का शुभ समाचार देते हैं, और दृढ़ विश्वास के साथ दावा करते हैं और गवाही देते हैं कि नरक है

गुमराह लोगों के लिए स्वर्ग है और सही मार्ग पर चलने वालों के लिए स्वर्ग है।

वे ऐसा वादों और धमकियों के आधार पर करते हैं
आपने सभी स्वर्गीय पृष्ठों और पवित्र में दोहराया है
पुस्तकें; आपकी सभी पवित्र विशेषताओं जैसे शक्ति,
दया, अनुग्रह, बुद्धि, ऐश्वर्य और कृपा, सब
जिसके लिए पुनरुत्थान की आवश्यकता है; महामहिम की ओर से
गरिमा और शक्ति तथा आपके आधिपत्य की संप्रभुता; तथा उनके असंख्य दर्शनों और अवलोकनों, साथ ही उनके विश्वास और दृढ़ विश्वास पर आधारित है।

सच्चे ज्ञान से आने वाली निश्चितता की डिग्री और
प्रत्यक्ष अवलोकन, जो हमें निशान और
परलोक के प्रभाव।

हे सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ, हे दयालु!
हे दयालु, ...
हे वैभव और महानता के स्वामी!
और महामहिम, सर्वव्यापक। आप बहुत दूर हैं
आपके इतने सारे सच्चे मित्रों को कष्ट पहुँचाने से अधिक
झूठा प्रतीत होना, या झूठी गवाही देना
आपके इतने सारे नामों और विशेषताओं का, या जो अपेक्षित है
उसकी वास्तविकता का खंडन और खंडन करना
आपके आधिपत्य की संप्रभुता, या परलोक के लिए असंख्य प्रार्थनाओं
और याचिकाओं को अस्वीकार करना
आपके असंख्य सेवक जिन्हें आप प्यार करते हैं और जो
आप पर विश्वास और आज्ञाकारिता के साथ आपके प्रेम की खोज करें
आप, या पुनरुत्थान के इनकार का समर्थन कर रहे हैं
उन गुमराह लोगों द्वारा जो आपकी महिमा और महामहिम का अपमान करते हैं
उनके विद्रोही अविश्वास और आपके झूठ के साथ
जो आपके वादे का उल्लंघन करते हैं, और महामहिम की महिमा का उल्लंघन करते हैं।

हम आपके असीम न्याय, सौंदर्य की उत्कृष्टता और पवित्रता की चरम सीमा तक
घोषणा करते हैं,
और दया, साथ ही साथ उनका ऐसे लोगों से ऊपर उत्थान
असीम अन्याय और घृणा। हमारा मानना है
वास्तविकता और सत्य पर विश्वास करने की पूरी शक्ति के साथ
जो असंख्य सत्यवादी रसूलों, सभी नबियों, शुद्ध विद्वानों और संतों द्वारा अत्यंत
निश्चितता के साथ बताया गया है - वे सभी संदेशवाहक हैं

आपकी संप्रभुता के बारे में - आपके खजाने के बारे में
अनन्त दया, आपकी उदारता का धन छिपा रहे
अनन्त क्षेत्र में, और अद्भुत, चमत्कार-

आपके सुंदर नामों के अद्भुत प्रकटीकरण जो पूर्ण रूप से सुख के धाम में प्रकट होंगे। उनके संकेत सत्य और सही हैं, और उनकी भविष्यवाणी सत्य है। वे आपके सेवकों को, आपकी आज्ञा से और सत्य के अनुसार सिखाते हैं कि "सत्य" नाम से निकलने वाली सबसे बड़ी किरण - जो सभी सत्यों का मूल, सूर्य और रक्षक है - पुनरुत्थान का उत्कृष्ट सत्य है। वे इस पर विश्वास करते हैं और इसे सत्य के सार के रूप में सिखाते हैं।

हे प्रभु, उनकी शिक्षा और उपदेश के कारण हमें और हमारे भाइयों और बहनों को पूर्ण विश्वास और हमारे जीवन का एक उचित अंत प्रदान करें, और हमें उनकी मध्यस्थता का कुछ हिस्सा प्राप्त हो। आमीन।

कुरान और सभी ईश्वरीय पुस्तकों की सत्यता को स्थापित करने वाले सभी तर्क और प्रमाण, साथ ही ईश्वर के प्रिय पैगंबर मुहम्मद और सभी नबियों की नबूवत को स्थापित करने वाले चमत्कार और प्रमाण, आख़िरत की वास्तविकता की ओर इशारा करते हैं। यह वास्तविकता किताबों और पैगम्बरों द्वारा पुष्टि की गई सच्चाई पर हावी है।

इसी तरह, अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के अस्तित्व और एकता के लिए अधिकांश तर्क और प्रमाण स्पष्ट रूप से खुशी के निवास, अनंत काल के क्षेत्र के अस्तित्व और खुलने की पुष्टि करते हैं जहाँ ईश्वर का प्रभुत्व और दिव्यता पूरी तरह से दिखाई देगी। अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता का अस्तित्व

परलोक के अस्तित्व की आवश्यकता है, साथ ही उसके सभी गुण, उसके अधिकांश नाम और उसके आवश्यक गुण (जैसे, प्रभुत्व, दिव्यता, अनुग्रह, बुद्धि और न्याय) भी आवश्यक हैं। इनके लिए एक शाश्वत क्षेत्र की आवश्यकता है, क्योंकि पुनरुत्थान न्यायपूर्ण दंड और पुरस्कार देने के लिए आवश्यक है।

एक शाश्वत रूप से विद्यमान ईश्वर को एक परलोक की आवश्यकता होती है जो उसकी दिव्य संप्रभुता की शाश्वत धुरी है। हम देख सकते हैं कि एक सबसे शानदार, उद्देश्यपूर्ण रूप से बुद्धिमान और देखभाल करने वाला पूर्ण प्रभुत्व पूरे ब्रह्मांड और सजीव सृष्टि में मौजूद है। इसे देखते हुए, खुशी का एक शाश्वत क्षेत्र होना चाहिए जिसमें प्रवेश दिया जा सके, ताकि उसकी भव्यता समाप्त न हो, उसकी बुद्धि व्यर्थ न हो जाए, और उसकी देखभाल विश्वासघात से नष्ट न हो जाए।

ये दृश्यमान और अनंत उपहार, आशीर्वाद, दयालुता और उदारता और दया के उदाहरण दर्शाते हैं कि अदृश्य के पर्दे से परे एक दयालु और करुणामयी व्यक्ति मौजूद है। इसे देखते हुए, एक शाश्वत दुनिया में एक शाश्वत जीवन होना चाहिए, क्योंकि केवल वही दिखाएगा कि उसकी दिव्य कृपाएँ मज़ाक नहीं उड़ाती हैं, उसका आशीर्वाद धोखा नहीं देता है, उसका अनुग्रह शत्रुता पैदा नहीं करता है, उसकी दया पीड़ा नहीं देती है, और उसकी उदारता विश्वासघात नहीं करती है।

इसके अतिरिक्त, अनंत काल और अविरामता सभी को एक बनाती है

वरदान और आशीर्वाद अपने सच्चे और परिपूर्ण रूप धारण कर लेते हैं।

हर बसंत में हम देखते हैं एक शक्ति की कलम अथक
पृथ्वी के संकीर्ण पृष्ठ पर अनगिनत अंतर्संबंधित पुस्तकें अंकित हैं। उनमें से एक में भी कोई नहीं है
त्रुटि। उस पेन के मालिक ने बार-बार वादा किया है: "मैं लिखूंगा और आपको एक सुंदर,
अविनाशी पुस्तक को एक ऐसे स्थान पर रखना जो उससे कहीं अधिक विशाल हो
यह, और इस तंग जगह से कहीं अधिक आसान तरीके से
और मिश्रित वसंत की किताब जो लिखी गई है
इतने संकीर्ण पृष्ठ पर।" उन्होंने इस पुस्तक का उल्लेख किया है
उसके सारे आदेश। इसकी शुरुआत पहले ही लिखी जा चुकी है,
और क़ियामत के दिन इसे उसकी सारी सीमा-रेखाओं के साथ लिख दिया जाएगा।

पृथ्वी का विशेष महत्व है: यह ब्रह्माण्ड का हृदय, केंद्र, विकल्प, मूल, अंतिम लक्ष्य है,
और इसके निर्माण का कारण भी यही है। यह अपने निवासियों की बहुलता के कारण इस स्थिति का आनंद लेता है
और क्योंकि यह निवास, उत्पत्ति, कार्यशाला और है
अनगिनत निरंतर बदलते रूपों के प्रदर्शन और पुनरुत्थान का स्थान। अपने छोटे आकार के बावजूद,
कुरान में पृथ्वी को विशाल ब्रह्मांड के बराबर बताया गया है।
स्वर्ग । इस प्रकार हम स्वर्गीय पुस्तकों में पढ़ते हैं:
आकाश और पृथ्वी का स्वामी.

मानवता भी सर्वोच्च महत्व की है।
पृथ्वी पर हम सभी का प्रभुत्व है। हम इसके अधिकांश प्राणियों पर प्रभुत्व रखते हैं, लगभग सभी सजीव प्राणियों को अपने अधीन रखते हैं और अपने इर्द-गिर्द इकट्ठा करते हैं, और
अपनी ज़रूरत और इच्छा के अनुसार निर्मित वस्तुओं को क्रम से लगाना, प्रदर्शित करना और अलंकृत करना। हम हर चीज़ को उसकी अद्भुत विविधता के अनुसार सूचीबद्ध और वर्गीकृत करते हैं, प्रत्येक
प्रजातियों को अपने स्थान पर, और इस तरह से कि सभी
लोग और जिन्न इसे देखते हैं, स्वर्ग और ब्रह्मांड के सभी निवासी इसकी प्रशंसा करते हैं,
और यहां तक कि ब्रह्मांड का भगवान भी उस पर अपनी सराहना भरी दृष्टि डालता है।

चूँकि हमारा मूल्य और महत्त्व बहुत अधिक है, इसलिए हमारी कला और विज्ञान यह दर्शाते हैं कि हम ही ब्रह्माण्ड के निर्माण का कारण हैं। सृष्टि के सर्वोच्च फल के रूप में हमारा महान परिणाम और स्थिति इसी में है।

परमेश्वर के प्रतिनिधि के रूप में हमारी सेवा। चूँकि हम निर्माता के चमत्कारी कार्यों का प्रदर्शन और व्यवस्था करते हैं
यहाँ, हमें राहत और सज़ा दी जाती है
हमारे विद्रोह और अविश्वास के बावजूद, इसे स्थगित कर दिया गया है।
और, हमारे द्वारा की गई सेवाओं के कारण, हमें अस्थायी निवास और सर्वशक्तिमान की सहायता प्राप्त होती है।

इतने गुणों से संपन्न होने के बावजूद भी हम
फिर भी जब अत्यंत कमजोर और नपुंसक हैं
यह हमारी प्रकृति की मांगों को पूरा करने के लिए आता है और

और फिर भी एक सबसे शक्तिशाली, बुद्धिमान और देखभाल करने वाला शासक
हमें एक तरह से प्रदान करता है जो पूरी तरह से परे है
हमारी शक्ति और इच्छाशक्ति। वह ग्रह को हर तरह के खनिज और भोजन से
भरा एक भंडार बनाता है
हमें जो भी चाहिए और जो भी सामान हम चाहते हैं, वह सब हमारे पास है।
इस प्रकार शासक हमारा ध्यान रखता है और हमारा पालन-पोषण करता है
और हमारी इच्छाएं पूर्ण करें।

इस प्रकार भगवान में ये गुण विद्यमान हैं।
वह हमसे प्रेम करता है और स्वयं को हमारा प्रिय बना लेता है।
वह अनन्त है और उसके पास अनन्त संसार हैं। वह सब कुछ करता है
न्याय और बुद्धि के साथ। लेकिन इस महान शासक की
शानदार वैभव और शाश्वतता नहीं हो सकती
इस क्षणभंगुर, अस्थायी दुनिया के क्षणभंगुर जीवन में समाहित है। इसके अलावा,
मानवीय अन्याय और विद्रोह की विशालता, जो

ब्रह्मांड के न्यायसंगत संतुलन और सामंजस्यपूर्ण सौंदर्य के प्रति शत्रुतापूर्ण और
विरोधाभासी है, इसकी तो बात ही छोड़िए
सदस्यों का अपने प्रति विश्वासघात, इनकार और अविश्वास
उपकारकर्ता और प्रदाता - ये सभी इस दुनिया में दंडित नहीं होते हैं। क्रूर और विश्वासघाती

आराम से जीवन जीते हैं, जबकि उत्पीड़ित और निराश लोग
दु:ख में जीना.

लेकिन परम सत्ता की सम्पूर्ण प्रकृति और सत्ता
न्याय, जिसके संकेत हर जगह दिखाई देते हैं
ब्रह्मांड, पूरी तरह से असहमत और असंगत हैं

यह विचार कि क्रूर और विश्वासघाती - जो मर जाते हैं
ठीक वैसे ही जैसे उत्पीड़ित और हताश लोगों को होना चाहिए
कभी पुनर्जीवित नहीं किया जाएगा [उनकी क्रूरता का हिसाब देने के लिए
सर्वोच्च न्यायाधिकरण में]

सब कुछ के स्वामी ने इस दुनिया को चुना है
और इसे एक उच्च पद और महत्व दिया।
उसने अपने सभी प्राणियों में से मानवता को पद और महत्व दिया है। उसी तरह उसने पैगम्बरों, संतों और शुद्ध विद्वानों को अपना गुरु चुना है।

उनके संबोधन के मित्र और वस्तुएं, क्योंकि वे दर्शाते हैं
वे सृष्टि के प्रभु के उद्देश्यों के अनुरूप होकर ही वास्तव में मानव हैं। वे विश्वास और भक्ति के माध्यम से स्वयं को अपने निर्माता का प्रिय बनाते हैं।

समर्पण, और वह उन्हें चमत्कारों से महान बनाता है
और ईश्वर उनके विरोधियों का समर्थन करता है और उन्हें दंडित करता है
स्वर्ग से प्रहार के साथ.

इन लोगों में से उसने अपना नेता चुना है
और आधार: मुहम्मद। उसने उसे ज्ञान दिया और,
अपनी रोशनी से, सदियों से पाँचवाँ हिस्सा रोशन कर रखा है
मानवता की। ऐसा लगता है मानो सृष्टि का निर्माण मानवता के लिए ही किया गया था।
उसके लिए, उसके सभी उच्च उद्देश्य उसके, उसके धर्म और कुरान के माध्यम से मानवीय बन गए हैं।
लाया। हालाँकि वह इसके लायक था और योग्य भी था
अनंत मूल्य के लिए अनंत पुरस्कार प्राप्त करें
उनके द्वारा प्रदान की गई सेवाएँ, जो आमतौर पर लेती थीं

हजारों साल तक प्रदर्शन करने के लिए उन्हें एक अधिकार दिया गया था
63 साल का संक्षिप्त जीवन कठिनाई और संघर्ष में बीता। हम कैसे विश्वास कर सकते थे कि वह नहीं रहेंगे
क्या वह अपने सभी साथियों - दूसरे पैगम्बरों - और साथियों के साथ पुनर्जीवित हो सकता है? या कि उसे
क्या वे अब भी आत्मा में जीवित नहीं हैं? या कि वे
क्या उन्हें मर जाना चाहिए और अनंत काल तक विलुप्त हो जाना चाहिए?

ब्रह्माण्ड और वह सत्य जिस पर वह आधारित है

फिर से उसके अस्तित्व की मांग करो, फिर से उसके जीवन की मांग करो
वह सबका स्वामी है। सबका स्वामी से उसका जीवन
अर्थात् हमने रिसाले-ए-नूर में स्थापित किया है
कि ब्रह्माण्ड एक ही सत्ता की हस्तकला है, और
उस सत्ता की एकता और एकता, जो देती है
उसकी सभी परिपूर्णताओं तक उठो, सृष्टि को आज्ञापालन करने के लिए प्रेरित करो
उसे बिल्कुल। एक नए जीवन के माध्यम से,
इसके बाद वे सिद्धियाँ दोषरहित रहती हैं33;
उसका परम न्याय, परम न्याय में विकृत नहीं होता
विश्वासघात; या उसकी सार्वभौमिक बुद्धि को मूर्खता में बदलना
या तो वह व्यर्थ है; या उसकी सर्वव्यापी दया तुच्छ यातना में बदल जाती है; या उसकी महान शक्ति नपुंसकता से भ्रमित हो जाती है।

---

३३ दिव्य पूर्णताएँ बिना किसी आवरण के प्रकट होंगी
इस क्षेत्र में। जिन दोषों का उल्लेख किया गया है, वे अन्याय जैसी चीजें हैं,
कठिनाई, क्रूरता और सभी असमानताएँ जो मानवता के लिए स्वतंत्र हैं
स्वयं कष्ट सहता है और दूसरों को भी कष्ट देता है। (सं.)

पुनरुत्थान होगा। इन बिंदुओं के साथ-साथ
ईश्वर में विश्वास से उत्पन्न सैकड़ों अन्य लोगों के साथ,
इसे साबित करो। इनाम के निवास के बाद ही
दण्ड से उनके द्वार खुलेंगे पृथ्वी का महत्व और केंद्रीयता, और हमारा वास्तविक महत्व और
मूल्य, वास्तव में पूरा हो जाएगा। फिर, बुद्धिमान शासक की
न्याय, बुद्धि, दया और संप्रभुता, कौन है?
हमारे ग्रह और हमारे निर्माता और भगवान,
अपनी सम्पूर्ण पूर्णता के साथ सदा-सदा के लिए प्रकट हो जाओ।

सभी सच्चे मित्र और शाश्वत के उत्साही प्रेमी
प्रभु अनन्त विनाश से मुक्ति पायेंगे,
और उनमें से निकटतम और प्रियतम को पुरस्कृत किया जाएगा-
उन पवित्र सेवाओं के लिए धन्यवाद जिनसे वह संतुष्ट थे
दुनिया। तब शाश्वत संप्रभु की पूर्णताएं दोष रहित होने की पुष्टि करेंगी,

उसकी शक्ति बिना किसी अयोग्यता के, और उसका न्याय
बिना किसी अत्याचार के। संक्षेप में, परलोक मौजूद है
क्योंकि ईश्वर मौजूद है.

ऊपर बताए गए आस्था के लेख पुनरुत्थान की गवाही देते हैं, साथ ही सभी प्रमाण उनकी सच्चाई की गवाही देते हैं। शेष दो

आस्था के लेख - उसके स्वर्गदूतों और भाग्य में विश्वास,
हमारे साथ जो भी अच्छा या बुरा होता है, वह उसमें शामिल है और सर्वशक्तिमान
ईश्वर द्वारा बनाया गया है - इसके लिए ईश्वर की आवश्यकता होती है।

पुनरुत्थान और दुनिया की गवाही

अनंतकाल।

सभी तर्क, साक्ष्य और बातचीत

उनके पास जो सबूत हैं, उनसे यह साबित होता है कि स्वर्गदूत मौजूद हैं और

ईश्वर की सेवा करें, तथा अप्रत्यक्ष रूप से ईश्वर के अस्तित्व को प्रमाणित करें

आत्माओं की दुनिया, अदृश्य, परलोक,
आनंद का निवास जो भविष्य में मानवता और जिन्न से आबाद होगा,
और स्वर्ग और

नरक। स्वर्गदूत उन दुनियाओं को समझते हैं और उनमें प्रवेश करते हैं। सभी

ईश्वरीय सिंहासन के सबसे निकट के देवदूत जो मानवता से संवाद करते हैं, जैसे गेब्रियल, रिपोर्ट करते हैं
उनका अस्तित्व और उसमें यात्राएँ। जैसा कि हम स्वीकार करते हैं
अमेरिका के अस्तित्व के बारे में (जिसे हमने वास्तव में कभी नहीं देखा है) लौटने वाले यात्रियों की रिपोर्टों से,

इसलिए हम भी ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास करते हैं

अनंत काल, परलोक, स्वर्ग और नरक,
स्वर्गदूतों की रिपोर्ट, जिनमें असंख्य निर्विवाद कथनों का अधिकार है।

छब्बीसवें संशोधन में निहित सभी तर्क

वचन (ईश्वरीय आदेश और नियति के बारे में), जो

विश्वास के उस अनुच्छेद को स्थापित करें, अप्रत्यक्ष रूप से प्रमाणित करें

पुनरुत्थान, दूसरी दुनिया में प्रकाशन के लिए
हमारे दर्ज कर्मों (इस दुनिया में), और उनके
सर्वोच्च तराजू में तौलना।
सभी चीजों का अस्तित्व पहले से ही प्रभावित है

हमारी आँखों से देखा और दर्ज किया गया। हर एक का जीवन इतिहास
चेतन सत्ता उसकी स्मृति में, उसके बीज में अंकित है,
और अन्य टेबलेट जैसे रूप; हर प्राणी के कर्म
आत्मा से संपन्न, विशेषकर मानवता से संपन्न, संरक्षित पट्टिकाओं पर पंजीकृत हैं।

ऐसा सर्वव्यापी आदेश, बुद्धिमत्तापूर्ण और उद्देश्यपूर्ण आदेश, विस्तृत और सूक्ष्म रूप से सटीक अभिलेखन और अंकन केवल निर्णय देने में सक्षम बनाने के लिए मौजूद है
स्थायी पुरस्कार या दण्ड का प्रावधान
एक सार्वभौमिक न्यायाधिकरण के बाद सर्वोच्च निर्णय। यदि यह
ऐसा नहीं था, इतना व्यापक, सावधानीपूर्वक
रिकॉर्डिंग और पंजीकरण का कोई उद्देश्य नहीं होगा
या अर्थ, और भावना के विपरीत होगा और
वास्तविकता। इसके अलावा, अगर कोई पुनरुत्थान नहीं होता,
द्वारा अंकित सभी सटीक स्थापित अर्थ
ब्रह्माण्ड की पुस्तक में दिव्य भाग्य की कलम
नष्ट हो जाएगा। यह बराबर होगा
ब्रह्माण्ड के अस्तित्व को नकारना।

संक्षेप में कहें तो, आस्था के पांच सूत्र और उनके महत्व
सबूत इशारा करते हैं और आवश्यकता होती है, गवाही देते हैं और
पुनरुत्थान और उस दायरे की आवश्यकता है
परलोक के रहस्य को खोला जाना चाहिए। इसके लिए दृढ़ आधार और अडिग तर्कों के कारण,
जो उस सत्य की उदात्तता के योग्य हैं,
क़ुरान का एक तिहाई हिस्सा इसी को समर्पित है।

इसे अपने सभी सत्यों का आधार बनाता है, और इसके आधार पर सब कुछ निर्मित करता है।

भाग दो

> ईश्वर की दया के चिन्हों और छापों को देखो,
> वह कैसे पृथ्वी को उसकी मृत्यु के बाद पुनर्जीवित करता है। निश्चय ही वह इसे करता है
> वही मुर्दों को जिलाएगा, और
> वह हर चीज़ पर सामर्थ्यवान है। (30:50)

इस श्लोक में नौ ठोस तर्क दिए गए हैं
पुनरुत्थान के लिए। पहला, जीवन और
नीचे विस्तार से बताया जाएगा, यह बहुत स्पष्ट है और
में बताया गया:

> परमेश्वर की महिमा हो, जब तुम संध्या में प्रवेश करोगे और जब
> तुम सुबह में प्रवेश करो। सारी प्रशंसा उसी के लिए है स्वर्ग में और पृथ्वी पर
> और रात के समय और जब तुम
> दोपहर में प्रवेश करें। वह मरे हुओं में से जीवितों को बाहर लाता है
> और जीवित से मृत को अलग करता है, और पृथ्वी को पुनर्जीवित करता है
> और तुम भी उसकी मृत्यु के कारण उत्पन्न किये जाओगे। (30:17-19)

जीवन का संबंध छह तत्वों से है।

विश्वास और उनकी सच्चाई के संकेतों की एक श्रृंखला द्वारा उन्हें स्थापित करता है। जीवन सबसे महत्वपूर्ण परिणाम है, और सबसे महत्वपूर्ण कारण है,

ब्रह्मांड की रचना। जीवन, वह महान वास्तविकता, इस क्षणभंगुर, क्षणभंगुर, दोषपूर्ण और दर्दनाक दुनिया तक सीमित नहीं हो सकती। बल्कि, जीवन का वृक्ष

फल, उद्देश्य और परिणाम ऐसा होने के योग्य है
एक फल है, परलोक का अनन्त जीवन - परलोक में जीवन
वह क्षेत्र जहाँ पत्थर, पेड़ और मिट्टी भी होंगे
चेतन.

यदि ऐसा न होता, तो जीवन का वृक्ष, जो इतना प्रचुर और महत्वपूर्ण साधनों से सुशोभित है, कोई उपज नहीं दे सकता था।
सजीव प्राणियों के योग्य फल, लाभ या सत्य,
और खास तौर पर हमारे लिए नहीं। मानवता, खुशी के मामले में सबसे महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ प्राणी है
सांसारिक जीवन, गौरैया से भी नीचे गिर जाएगा,
यद्यपि गौरैया पदार्थ की दृष्टि से बहुत हीन है और
संकायों, और सबसे कम भाग्यशाली और सबसे अधिक बन जाते हैं
सभी गरीब प्राणियों में अपमानित.

इसी तरह बुद्धि, हमारी सबसे कीमती संपत्ति, हमेशा अतीत की कठिनाइयों और भविष्य की आशंकाओं पर चिंतन करके हमारे दिलों को घायल कर देगी।
एक भाग खुशी को नौ भाग कठिनाई के साथ मिलाएँ
और दुःख, और इस तरह आपदा का साधन बन जाते हैं
मानव जीवन। चूंकि ऐसा नहीं हो सकता, इसलिए यहाँ जीवन परलोक में विश्वास के लिए एक निर्णायक तर्क है। यह परेड करता है
हमारी आँखों के सामने प्रत्येक वसंत अनंत रूप में
पुनर्जीवित किये जा रहे नमूने (की एक छवि)
जी उठने)।

क्या एक सर्वशक्तिमान एजेंट जो तुरंत
ज्ञान, देखभाल और दया के साथ आपूर्ति और प्रदान करता है

आपके जीवन, शरीर, बगीचे के लिए आवश्यक हर चीज,
और मातृभूमि; कौन सुनता है और यहां तक कि आपके जवाब देता है
पेट की निजी, विशेष प्रार्थना
इतने सारे स्वादिष्ट भोजन प्रदान करके - क्या यह कल्पना की जा सकती है
कि ऐसा प्राणी इस बात से अनजान हो
वह तुम्हारे प्रति बहरा है, कि वह तुम्हें सहायता न दे
अनन्त जीवन के साधन, मानव होने के सर्वोच्च उद्देश्य के साथ?

वह अनंत जीवन की स्थापना कैसे नहीं कर सकता था और अनंत काल के लिए हमारी सबसे बड़ी, सबसे महत्वपूर्ण, योग्य और सार्वभौमिक प्रार्थना का उत्तर देने के लिए स्वर्ग का निर्माण कैसे नहीं कर सकता था?
क्या वह हमारी सार्वभौमिक और
आग्रहपूर्ण प्रार्थना, यह देखते हुए कि हम उनके सबसे महत्वपूर्ण प्राणी और
प्रतिनिधि हैं, एक प्रार्थना जो गूंजती है
पूरे आकाश और पृथ्वी पर, जबकि वह करता है
तो क्या वह हमारे पेट के लिए भी सही है?
क्या बुद्धि और असीम दया को अस्वीकार कर दिया जाएगा?

वह सबसे छोटे प्राणी की अंतरतम आवाज सुनता है,
उसकी चोट को ठीक करता है, उसकी शिकायत को दूर करता है, उसे पोषण देता है
अत्यंत सावधानी और विचार के साथ, तथा अन्य प्राणियों से अपनी सेवा
करवाता है। ऐसे में, यह कैसे संभव हो सकता है
उसने महानतम, सर्वाधिक शक्तिशाली व्यक्ति की गड़गड़ाती पुकार नहीं सुनी।
जीवन के मूल्यवान और सूक्ष्म रूप को स्वीकार करें या अनंत काल के लिए इसकी
शक्तिशाली प्रार्थना और विनती को नज़रअंदाज़ करें? ऐसा करने से
एक सैनिक को भरपूर हथियार मुहैया कराने और उसकी उपेक्षा करने जैसा होगा-

एक बड़ी आज्ञाकारी सेना को देखना, एक धब्बा देखना और सूरज को अनदेखा करना, एक मक्खी की आवाज सुनना और सूरज की रोशनी को न सुनना। गरजती गड़गड़ाहट.

सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ प्राणी में असीम दया, प्रेम और परवाह है। वह अपने लोगों से प्रेम करता है
कलात्मकता, खुद को प्यार करने का कारण बनती है, और बहुत
जो लोग उससे प्रेम करते हैं, उनसे प्रेम करता है। क्या ऐसा कोई प्राणी
स्थायी मृत्यु और अस्तित्वहीनता का उपयोग उस आत्मा (जीवन का सार और मूल) को नष्ट करने के लिए करें जो उनसे बहुत प्यार करती है, स्वयं प्रेम करने योग्य है, और जो अपने स्वभाव से प्रेम करने योग्य है
उसे अपना निर्माता मानकर पूजता है? क्या वह अपमान करेगा और
इसे हमेशा के लिए नकार दें या इसकी भावनाओं को ठेस पहुँचाएँ,
उसकी दया को अस्वीकार करना और दूसरों को भी अस्वीकार करने के लिए प्रेरित करना
अर्थ और उसके प्रेम का प्रकाश? एक परम सौंदर्य
जो स्वयं को प्रदर्शित करके सृष्टि को सुन्दर बनाता है,
और एक परम दया जो सभी प्राणियों को सक्षम बनाती है
आनन्दित हो, महान हो और ऐसी असीम कुरूपता और दया की कमी से बहुत ऊपर हो।

संक्षेप में, जो लोग जीवन के उद्देश्य को समझते हैं
और इसलिए अपना जीवन बर्बाद मत करो, वे शाश्वत स्वर्ग के चिंतनशील प्रदर्शन बन जाएंगे। सभी पारदर्शी
पृथ्वी की सतह पर मौजूद वस्तुएं, जैसे कि चमकीले बुलबुले जो सूर्य की किरणों की चमक को पकड़ते हैं और फिर परावर्तित करते हैं
प्रकाश को दर्पण के सामने रखें और उसका प्रतिबिम्ब देखें।
ऐसी छवियों से पता चलता है कि प्रकाश की प्रत्येक चमक
एक, सर्वोच्च सूर्य की प्रतिबिंबित अभिव्यक्ति।

अपनी अनेक और विविध भाषाओं से वे सूर्य का उल्लेख करते हैं और अपनी प्रकाशमय “उंगलियों” से उसकी ओर संकेत करते हैं।

इसी प्रकार, नित्य-जीवित और स्वयं-निर्भर सत्ता के “जीवनदाता” नाम के सर्वोच्च प्रकटीकरण के माध्यम से, सभी चेतन प्राणी

यहाँ भगवान की शक्ति के माध्यम से जीवन वापस चमकता है। वे फिर अदृश्य के पर्दे के पीछे गायब हो जाना (मर जाना),
सदा जीवित रहने वाले की सदा जीवित रहने की क्षमता को प्रदर्शित करना
गुणवत्ता। वे नए आगमन के लिए जगह बनाने के लिए मर जाते हैं,
जो यहाँ निरंतर साक्ष्यों की श्रृंखला में प्रवाहित होते हैं
सदा-जीवित और आत्मनिर्भर प्राणी के जीवन और आवश्यक अस्तित्व के संकेत और संकेत।

इसी प्रकार, ईश्वरीय सत्ता को प्रमाणित करने वाले सभी तर्क
ज्ञान, जिसके चिह्न सभी प्राणियों की व्यवस्था में दिखाई देते हैं; ब्रह्माण्ड को नियंत्रित करने वाली एक शक्ति के अस्तित्व को स्थापित करने वाले सभी साक्ष्य; सभी प्रमाण
ब्रह्माण्ड की व्यवस्था और प्रशासन को निर्देशित करने वाली इच्छाशक्ति की ओर इशारा करते हुए; सभी संकेत और चमत्कार
पैगम्बरों के संदेशवाहक होने की पुष्टि करते हुए,
जिसके द्वारा वह अपनी सृष्टि को संबोधित करता है और प्रकट करता है उसकी आज्ञाएँ; तथा दिव्यता के सात गुणों34 की गवाही देने वाले संकेत - ये सभी

---

३४ ईश्वर में तीन प्रकार के गुण हैं: ईश्वर के आवश्यक गुण
“सार”, सकारात्मक विशेषताएँ और नकारात्मक विशेषताएँ।

सदा-जीवित और आत्मनिर्भर प्राणी के जीवन की ओर इशारा करें और गवाही दें।
यदि कोई प्राणी देख सकता है, तो उसे अवश्य ही देखना चाहिए
यदि वह सुन सकता है, तो अवश्य ही वह बोल भी सकेगा।

इसी प्रकार, ऐसे गुण जिनका अस्तित्व
पूरे ब्रह्मांड में उनके निशानों द्वारा स्थापित और स्वयंसिद्ध (उदाहरण के लिए, पूर्ण शक्ति, सर्वव्यापी इच्छा और व्यापक ज्ञान)

अपने सभी सबूतों के साथ गवाही दें
सदा जीवित एवं आत्मनिर्भर प्राणी का जीवन और
आवश्यक अस्तित्व। वे उसकी शाश्वतता की गवाही देते हैं-

उनके सकारात्मक गुण उनकी पूर्ण सत्यता के दावे को संदर्भित करते हैं
एकता; उनके नकारात्मक गुण सीमा और समग्रता के निषेध को संदर्भित करते हैं।

सार अस्तित्व है, जिसका कोई आरंभ नहीं, स्थायित्व,
निर्मित और आत्मनिर्भरता में असमानता।
उपरोक्त पाठ में बताए गए सकारात्मक गुण हैं जीवन,
ज्ञान, शक्ति, इच्छा, वाणी, देखना, सुनना, और, कुछ धर्मशास्त्रियों के अनुसार, सृजन।
नकारात्मक गुण
इसे इस प्रकार समझाया जा सकता है: ईश्वर का वर्णन नहीं किया जा सकता
कोई भौतिक या मानवरूपी शब्द नहीं है। वह शरीर, रंग और आकार से बना नहीं है।
कोई भी व्यक्ति या वस्तु उसे नहीं देख सकती,
उसकी कल्पना या अवधारणा मत बनाओ। उसे किसी भी रूप में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता
पदार्थ या पदार्थ या रूप की आकस्मिकता की शर्तें, अंतरिक्ष के किसी भी हिस्से में
स्थानीयकृत, समय के किसी भी हिस्से तक सीमित, या संरेखित
और किसी भी प्राणी के साथ गिना नहीं जा सकता। कोई भी चीज सह-अस्तित्व में या एक साथ नहीं रह सकती
वह न तो कभी जन्म लेता है और न ही कभी जन्मा है।
और इसी तरह. (ट्र.)

वह एक ऐसा जीवन है, जिसकी एक छाया ही ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करने के लिए पर्याप्त है, जिसकी एक अभिव्यक्ति ही परलोक और उसके सभी घटक कणों को जीवन देने के लिए पर्याप्त है।

उनका जीवन का गुण स्वर्गदूतों में विश्वास से जुड़ा हुआ है और अप्रत्यक्ष रूप से इसके लिए तर्क देता है। जीवन ब्रह्मांड का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है। सजीव प्राणी सबसे विविध प्रकार की सृष्टि बनाते हैं, और उनके प्रकार और प्रजातियाँ उनके मूल्य के कारण कई गुना बढ़ जाती हैं। वे लगातार अपने कारवां में आने और जाने से इस दुनिया को जीवंत करते हैं। पृथ्वी, जो इतनी सारी जीवित प्रजातियों से भरी हुई है, लगातार खाली और फिर से भरी जा रही है क्योंकि विविध प्रजातियों का नवीनीकरण, विविधता और वृद्धि हो रही है।

यहां तक कि इसके सबसे घिनौने और सबसे सड़े हुए पदार्थ भी इतने सारे जीवों को जीवन देते हैं कि वे सूक्ष्म जीवों के झुंडों को आश्रय देते हैं। बुद्धि और चेतना (जीवन का आसुत सार) और आत्मा (जीवन का सूक्ष्म और स्थिर पदार्थ) पृथ्वी पर हर जगह सबसे बड़ी बहुलता में मौजूद हैं, जैसे कि यह ग्रह जीवन, बुद्धि, चेतना और आत्मा के आनंद से भरा हुआ और फूट रहा हो।

इसे देखते हुए, यह असंभव लगता है कि अधिक सूक्ष्म और चमकदार खगोलीय पिंड, जो सभी पृथ्वी की तुलना में आयाम में कहीं अधिक महत्वपूर्ण हैं,

यह निर्जीव और पूरी तरह से जीवन, गति या आवाज से रहित होना चाहिए। इसलिए आकाश, सूर्य और सितारों को जीवंत करने वाले जीवित और सचेत प्राणी होने चाहिए।
वे अवश्य ही स्वर्गीय क्षेत्र को अपनी जीवन शक्ति दे रहे होंगे और इस प्रकार उस उद्देश्य को प्राप्त कर रहे होंगे जिसके लिए वे स्वर्ग में हैं।
स्वर्ग की रचना हुई और वे महिमावान परमेश्वर से संदेश प्राप्त कर रहे हैं। ये प्राणी स्वर्गदूत हैं।

इसी प्रकार, जीवन का अर्थ और आवश्यक प्रकृति
पैगम्बरों में विश्वास स्थापित करता है।
जीवन के लिए बनाया गया है, और जीवन उनमें से एक है
जीवित, आत्मनिर्भर और शाश्वत एक की सर्वोच्च अभिव्यक्तियाँ, और उनकी सबसे अधिक
उत्तम डिजाइन और सबसे सुंदर कला। ईश्वर के शाश्वत जीवन की घोषणा
संदेशवाहकों को भेजकर की जाती है और
प्रकट की गई पुस्तकें। इनके बिना, उनका शाश्वत होना
अज्ञात ही रहेगा। जिस तरह से हमें माना जाता है
जब हम बोलते हैं तो जीवित रहते हैं, पीछे से अस्तित्व
अदृश्य (दृश्यमान ब्रह्माण्ड द्वारा आवृत) बोलता है और
अपने आदेश और निषेध भेजता है
पैगम्बर और अवतरित पुस्तकें।

ब्रह्मांड में जीवन की उपस्थिति इस बात की गवाही देती है
जीवित और शाश्वत एक का आवश्यक अस्तित्व,
और भेजने का संकेत और अप्रत्यक्ष रूप से पुष्टि करता है
रसूलों और धर्मग्रंथों के अवतरण का,
क्योंकि दोनों ही उस शाश्वत की किरणें और अभिव्यक्तियाँ हैं

जीवन। विशेष रूप से, मुहम्मद की पैगम्बरी और कुरान का अवतरण, दोनों ही जीवन की आत्मा और बुद्धि हैं, तथा ये जीवन के अस्तित्व की तरह ही निर्विवाद रूप से स्थापित हैं।

जीवन ब्रह्माण्ड से निकाला गया सार है।

चेतना (चेतना और भावना) जीवन से निकला हुआ सार है, बुद्धि चेतना से निकला हुआ सार है, और आत्मा जीवन का शुद्ध और अविभाज्य पदार्थ है, इसका स्थिर और स्वतंत्र सार है।

पैगंबर का भौतिक और आध्यात्मिक जीवन ब्रह्मांड के जीवन और अर्थ से निकाला गया सबसे शुद्ध सार है; उनका संदेशवाहक ब्रह्मांड की चेतना, चेतना और बुद्धि का शुद्ध और आसुत सार है। उनके जीवन और उपलब्धियों ने, उनके भौतिक और अभौतिक, आध्यात्मिक दोनों पहलुओं में, खुद को ब्रह्मांड के जीवन का सच्चा सार साबित किया है, और उनका संदेशवाहक ब्रह्मांड की चेतना का सच्चा प्रकाश और सार है। जैसा कि इसके जीवित और जीवंत सत्य गवाही देते हैं, कुरान ब्रह्मांड के जीवन की आत्मा और उसकी चेतना की बुद्धि है।

यदि उसके संदेशवाहक का प्रकाश ब्रह्मांड से गायब हो जाए, तो वह मर जाएगा। यदि कुरान ब्रह्मांड को त्याग दे, तो ब्रह्मांड अपनी विवेकशीलता खो देगा, और पृथ्वी अपनी बुद्धि खो देगी। चक्कर आना

और समझ न पाने की स्थिति में, यह किसी अन्य ग्रह से टकरा जाएगा और अपना स्वयं का विनाश कर लेगा।

जीवन ईश्वरीय नियति में विश्वास से भी जुड़ा हुआ है और इसे अप्रत्यक्ष रूप से स्थापित करता है। जीवन दृश्यमान दुनिया का प्रकाश है, जो उसमें व्याप्त है और उस पर हावी है। यह अस्तित्व का परिणाम और लक्ष्य है, ब्रह्मांड के निर्माता के लिए सबसे समावेशी दर्पण है, भगवान के रूप में उनकी गतिविधि का सबसे सही नमूना और सूचकांक है, और एक तरह का कार्यक्रम है। जीवन का अर्थ यह है कि अदृश्य दुनिया के जीव, अतीत और भविष्य में, किसी क्रम, नियमितता और अन्य नियमों या आदेशों के अनुरूप होने के लिए तैयार हों।

इनमें से कुछ प्राणी दृश्यमान हैं, प्रत्येक अपने-अपने रूप और चरित्र में, जैसा कि सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता ने उन्हें अपने जीवन को संचालित करने के लिए निर्धारित किया है।

उदाहरण के लिए, एक वृक्ष के मूल बीज और जड़, साथ ही उसके जीवन के परिणाम (फल) में निहित बीजों में से प्रत्येक का जीवन स्तर पूरे वृक्ष के समान ही होता है।

दरअसल, वे अपने भीतर जीवन के ऐसे नियम रखते हैं जो पेड़ के नियमों से कहीं ज़्यादा सूक्ष्म हैं। पिछले पतझड़ में छोड़े गए बीज और जड़ें, और साथ ही वे बीज और जड़ें जो आने वाले वसंत में छोड़ी जाएँगी, सभी वसंत से कम जीवन की स्पष्ट छाप नहीं रखते हैं, और उसके नियमों के अधीन हैं।

इसी तरह ब्रह्मांडीय वृक्ष की सभी शाखाओं और टहनियों का एक अतीत और एक भविष्य होता है। वे एक श्रृंखला बनाते हैं
अतीत और भविष्य के चरणों और परिस्थितियों का।
सभी प्रजातियों के कई जीवन चरण और उनके सभी
व्यक्तिगत सदस्य, जो दिव्य में मौजूद हैं
ज्ञान, अर्थ या अस्तित्व की एक श्रृंखला बनाता है
ज्ञान। बाह्य (भौतिक) अस्तित्व की तरह
वस्तुओं के ज्ञान या अर्थ में उनका अस्तित्व भी जीवन का एक पहलू या अभिव्यक्ति रखता है।
एक जीवित प्राणी के जीवन की सभी अवस्थाएँ, तथा उसके जीवन के दौरान जो कुछ भी उसके साथ घटित होता है, वह सब ईश्वरीय ज्ञान में उसके जीवन की "भौतिक" प्रतिकृति है।
जिसे हम भाग्य कहते हैं, वह एक तरह से एक शीर्षक है
वह ज्ञान.

आत्माओं की दुनिया, एक प्रकार की अदृश्य दुनिया,
जीवन का सार बनाने वाली आत्माओं से भरा है और
पदार्थों और इस प्रकार अतीत और भविष्य की आवश्यकता है
(एक अन्य प्रकार की अदृश्य दुनिया या उसका दूसरा रूप)
अपनी अभिव्यक्ति प्राप्त करें।35

---

35 मूल शब्द जिसका हम अनुवाद करते हैं
"अनदेखा" या "अनदेखे की दुनिया" ग़ैब है: अर्थात
जिसे हम अपनी पाँच इंद्रियों से नहीं समझ सकते, या जो हमारे लिए अदृश्य और अज्ञात है जब तक कि हम किसी तरह से उसका ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेते। आत्माओं की दुनिया की तरह जिसे हम देख नहीं सकते, और
जिसकी प्रकृति हम अपनी इन्द्रियों, भूतकाल आदि से नहीं जान सकते
और भविष्य भी हमारे लिए अज्ञात है जब तक कि हम किसी तरह से प्राप्त न कर लें

इसके अतिरिक्त, ईश्वर के ज्ञान में विद्यमान पूर्ण क्रमबद्धता और सार्थकता भी है।
साथ ही इसकी सभी अंतर्निहित घटनाओं, परिस्थितियों,
चरण और फल, स्पष्ट रूप से एक प्रकार का जीवन प्रदर्शित करते हैं।
अनन्त जीवन के “सूर्य” द्वारा उत्सर्जित प्रकाश होने के नाते,
जीवन इस दुनिया, वर्तमान या भविष्य तक सीमित नहीं रह सकता।
बाह्य अस्तित्व के लिए। बल्कि, प्रत्येक दुनिया को प्राप्त होता है
उस प्रकाश की अभिव्यक्ति उसकी क्षमता के अनुसार होती है, और वह
उसके माध्यम से जीवित और प्रकाशित होता है। अगर ऐसा होता
ऐसा नहीं होगा, प्रत्येक दुनिया विशाल और भयानक होगी
लाश, क्षणभंगुर जीवन की दृश्यमान परत के नीचे एक अँधेरा खंडहर। यही तो गुमराह लोग सोचते हैं।

इस प्रकार दैवी भाग्य में विश्वास का एक व्यापक पहलू
और डिक्री के माध्यम से समझा और स्थापित किया जाता है
जीवन के अर्थ से। जिस तरह जीवन और जीवंतता
भौतिक जगत और विद्यमान, दृश्यमान वस्तुएं
उनकी व्यवस्थितता और
उनके अस्तित्व, अतीत और भविष्य के परिणाम
प्राणी (अदृश्य से संबंधित माने जाते हैं)
एक अमूर्त अस्तित्व, एक मौलिक और आध्यात्मिक अस्तित्व है

उनका ज्ञान। भूत और भविष्य, समय की दो शाखाएँ होने के कारण, वह "क्षेत्र" है
जहाँ परम की दुनिया है
अदृश्य स्वयं को दृश्य जगत में प्रकट करता है, और हो सकता है
इसे इसका दूसरा रूप माना जाता है। (ट्र.)

ईश्वर के ज्ञान में वास्तविक उपस्थिति। यह एक प्रकार का
जीवन का। वह जीवन और उपस्थिति दृश्य रूप प्राप्त करती है
और इसे भाग्य की गोली के माध्यम से जाना जाता है और
डिक्री, जिसमें सभी चरण शामिल हैं
प्राणी अपने भौतिक जीवन के दौरान जो कुछ भी गुजरते हैं और उनके साथ जो घटनाएं घटती हैं,
वे सभी इस संसार में घटित होती हैं।

भाग तीन

प्रश्न: जैसे कि: यह एक ही पुकार है
(36:29, 49, 53; 38:15; 54:31) और: आदेश
क़ियामत की घड़ी तो बस पलक झपकने भर की है, या क़ियामत के नज़दीक
(16:77)
एक पल में हो जाएगा। हमारी सीमित समझ को एक ठोस सादृश्य की आवश्यकता
है ताकि हम सक्षम हो सकें
इस अनोखे, चमत्कारी विचार से सहमत हों और उसे स्वीकार करें
आयोजन।

उत्तर: पुनरुत्थान में तीन तत्व [या चरण, यदि समय शामिल है] शामिल हैं:
आत्माएं
अपने शरीर में वापस लौटेंगे, शरीर पुनः जीवित हो जायेंगे,
और शरीरों का पुनर्निर्माण और पुनरुत्थान किया जाएगा।

प्रथम तत्व: एक अत्यंत अनुशासित सेना के सैनिकों की कल्पना करें। सभी
दिशाओं में अलग-अलग विश्राम स्थलों पर फैले हुए सैनिकों को बुलाया जा
सकता है।
साथ ही एक जोरदार बिगुल की ध्वनि भी। इसराफिल की तुरही

निश्चित रूप से बिगुल से कम शक्तिशाली नहीं है।36 हमारा
आत्माओं - जिनमें से प्रत्येक से पूछा गया: "क्या मैं तुम्हारा नहीं हूँ
प्रभु?” अनंत काल से आ रहा है, और पुष्टि की: “हाँ,
आप अभी भी अतीत अनंत काल की दुनिया में हैं
और कण का क्षेत्र - अधिक आज्ञाकारी हैं,
किसी भी सैनिक से अधिक अनुशासित और आज्ञाकारी।37

दूसरा तत्व: एक महान उत्सव के लिए
शहर के बिजलीघर में एक स्विच दबाकर, असंख्य लैंपों को तुरन्त जलाया जा सकता है।
एक ही दीपक से पूरे विश्व में असंख्य दीप जलाना भी संभव हो सकेगा।

पावर स्टेशन [अगर कोई मौजूद है]। अगर बिजली, सर्वशक्तिमान की रचना, इस अस्थायी दुनिया में एक सेवक और एक मोमबत्ती धारक,
यह प्रकट कर सकता है
अपने निर्माता के प्रशिक्षण और अनुशासन के कारण संपत्ति,
पुनरुत्थान पलक झपकते ही हो सकता है
आँख और दिव्य बुद्धि के ढांचे के भीतर
व्यवस्थित नियम, जिनका प्रतिनिधित्व और प्रदर्शन उनके हजारों
प्रकाश देने वाले सेवकों द्वारा किया जाता है
बिजली की तरह.

---

36 इसराफ़ील वह प्रधान फ़रिश्ता है जो सूर (तुरही) फूँकेगा
ब्रह्माण्ड के विनाश और पुनरुत्थान से ठीक पहले,
जिसका संकेत कुरान 39:68 में मिलता है। (ट्र.)

37 तीसवाँ वचन यह प्रदर्शित करता है कि सभी आत्माएँ और कण एक दिव्य सेना की आज्ञाकारी सेना हैं।

तीसरा तत्व: हजारों सूट हैं-

मानव के पुनर्निर्माण और पुनरुत्थान के लिए सक्षम सादृश्य
क़यामत के दिन जिन शवों को दफनाया जाएगा, उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:
जिस तरह से पेड़ की पत्तियों को पहले की पत्तियों के समान ही (लगभग एक समान) बहाल किया जाता है
प्रत्येक वर्ष की शुरुआत के कुछ दिनों के भीतर
वसंत ऋतु, भले ही पेड़ कहीं अधिक संख्या में हों
लोगों की तुलना में; जिस तरह से सभी पेड़ खिलते हैं
और फल पुनः उत्पन्न होते हैं जैसे कि पूर्ववर्ती वसंत में थे;38 अचानक जागृति, प्रकटीकरण,
और अनगिनत बीजों, गुठलियों और पौधों का जीवित होना
जड़ें, जो सभी वसंत विकास का उद्गम हैं;
जिस तरह से पेड़, सीधे कंकालों की तरह, अचानक "मृत्यु के बाद पुनरुत्थान" के संकेत दिखाना शुरू करते हैं; असंख्य छोटे जीवों का, विशेष रूप से विभिन्न मक्खी प्रजातियों का, सबसे अद्भुत तरीके से पुनर्जीवन - हर वसंत में कुछ दिनों के लिए उनका "पुनरुत्थान", अन्य प्रजातियों के साथ

कीट प्रजातियाँ, जो कि संख्या में बहुत अधिक हैं
सभी लोग जो कभी जीवित रहे हैं।

---

38 यद्यपि किसी वृक्ष के पत्ते, फूल और फल पिछली बसंत ऋतु के समान नहीं होते, फिर भी वे
प्रकृति में उनसे भिन्न नहीं। यदि वे जीवित होते और
मनुष्यों की तरह आत्माएं, उन्हें पुनर्जीवित किया जाएगा
समान पहचान. (ट्र.)

यह संसार बुद्धि का क्षेत्र है, परलोक बुद्धि का क्षेत्र है। शक्ति का निवास है।३९ यहाँ, के अनुसार ऐसे दिव्य नामों की आवश्यकताएँ जैसे कि सर्वज्ञ, व्यवस्थाकर्ता, निपटानकर्ता, पोषणकर्ता और प्रशिक्षक, सृष्टि व्यापक है और समय के साथ कुछ हद तक क्रमिक है। यह उनकी बुद्धि के लिए आवश्यक है क्योंकि प्रभु और पालनहार। लेकिन उस शक्ति और दया को देखते हुए आख़िरत में हिकमत से ज़्यादा स्पष्ट हैं, उस क्षेत्र में सृजन तात्कालिक और प्रतिरक्षित है पदार्थ, स्थान, समय और अवधि से संबंधित किसी भी चीज़ के लिए।

कुरान में कहा गया है कि जो एक दिन या एक दिन में पूरा हो जाता है, यहाँ बनाने के लिए वर्ष एक पल के भीतर किया जाएगा वहाँ: क़ियामत का हुक्म तो बस एक पलक है आँख के निकट, या निकट (16:77) यदि तुम इस बात की स्पष्ट समझ चाहते हो कि पुनरुत्थान आएगा, जैसे कि अगला वसंत होगा, दसवीं और का अध्ययन करें उनतीसवाँ शब्द.

पुनरुत्थान का एक और तत्व यह है दुनिया का विनाश। यदि कोई ग्रह या क्षुद्रग्रह आपस में टकराता है

---

39 यह संसार ज्ञान का क्षेत्र है, जहाँ चीज़ें घटित होती हैं कुछ उद्देश्यों और विचार-विमर्श के अनुसार, कुछ कानूनों के अनुरूप, और जिसमें ईश्वर पीछे से कार्य करता है कारण और प्रभाव का पर्दा। परलोक शक्ति का निवास है, जिसमें ईश्वर बिना किसी आवरण के कार्य करेगा। (ट्र.)

इस ग्रह के साथ, भगवान की आज्ञा से, हमारा निवास स्थान तुरंत नष्ट हो जाएगा, जैसे कि एक महल जिसे बनाने में 10 साल लगे हों, एक मिनट में नष्ट हो सकता है।

भाग चार

उसने कहा, "जब हड्डियाँ सड़ चुकी होंगी, तो उन्हें कौन जीवित करेगा?" कह दो, "जिसने उन्हें पहली बार उत्पन्न किया, वही उन्हें जीवित करेगा।" वह सर्वज्ञ है।

सारी सृष्टि का परमेश्वर। (36:78-79)

दसवें वचन के नौवें सत्य में तीसरी तुलना में इस्तेमाल किए गए सादृश्य को याद करें। संक्षेप में: कोई व्यक्ति आपकी आंखों के सामने एक दिन में एक विशाल सेना इकट्ठा कर लेता है। अगर आपसे कहा जाए कि जिसने अपनी सेना को आराम के लिए अलग-अलग क्षेत्रों में फैला दिया है, वह उन्हें फिर से इकट्ठा कर सकता है और बटालियनों में उन्हें फिर से व्यवस्थित कर सकता है, और आपने जवाब दिया कि वह ऐसा नहीं कर सकता, तो आपको पागल माना जाएगा।

सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ ने अपने आदेश से सभी सजीव प्राणियों के परमाणुओं और सूक्ष्म शारीरिक घटकों को शून्य से बनाया। फिर उसने उन्हें दर्ज किया और उन्हें उनके स्थानों पर नियुक्त किया, जैसे कि वे एक सेना हों, पूर्ण क्रमबद्धता और संतुलन के साथ। हर वसंत के दौरान, वह अनगिनत विभिन्न प्रजातियों और सजीव प्राणियों के समूहों का निर्माण करता है-

चरित्र, जिनमें से प्रत्येक एक सेना जैसा दिखता है। निश्चित रूप से
वह इसराफिल की तुरही बजाकर पुनः एकत्र हो सकता है,
सभी मौलिक परमाणु और मूल घटक
जो शरीर के आदेश के प्रति सामूहिक समर्पण के माध्यम से आपसी परिचय का आनंद लेते हैं - एक आदेश
जो किसी भी बटालियन से अधिक है। यदि आप इसे असंभव मानते हैं, तो क्या आप तर्कहीन नहीं हैं?

कुछ आयतों में सर्वशक्तिमान हमें बताता है कि
यहाँ उन्होंने जो चमत्कार किए हैं, वे लोगों को प्रभावित करने के लिए हैं
हमारे दिलों में यह आश्चर्य है कि वह क्या पूरा करेगा
परलोक में, और अपने मन को स्वीकार करने के लिए तैयार करना
और इसे समझें। अन्य आयतों में, वह संकेत करता है
भविष्य में वह अद्भुत कार्य करेगा और
जो कुछ हम यहाँ देखते हैं, उसके अनुरूप परलोक की कल्पना कीजिए।
एक उदाहरण है: क्या मानवता ने यह नहीं देखा है कि हम
तो फिर देखो, मनुष्य तो खुला विरोधी है (36:77) और इसके बाद की आयतें भी।

बुद्धिमान कुरान पुनरुत्थान की स्थापना करता है
सात या आठ अलग-अलग रूपों में। यह सबसे पहले निर्देश देता है
हमारा ध्यान अपने मूल की ओर: "आप देखते हैं कि आप कैसे
प्रगति हुई - शुक्राणु की बूंद से रक्त की बूंद तक,
गर्भाशय की दीवार पर लटका हुआ रक्त का थक्का,
एक निलम्बित रक्त का थक्का एक निराकार मांस के लोथड़े में बदल जाता है,
और एक निराकार मांस के लोथड़े से एक मानव बन जाना

40 आप अपनी दूसरी रचना को कैसे नकार सकते हैं?
यह बिलकुल पहले जैसा ही है, या उससे भी ज़्यादा आसान है [परमेश्वर के लिए इसे पूरा करना]।”

ईश्वर ने हमें जो महान उपहार दिए हैं, उनका भी उल्लेख किया है: जिसने तुम्हारे लिए हरे वृक्ष से आग बनाई (36:80)। वह हमसे पूछता है: "क्या वह जिसने तुम पर अपना आशीर्वाद बरसाया है, तुम्हें अपनी इच्छानुसार व्यवहार करने की स्वतंत्रता देगा और फिर कब्र में जाकर हमेशा के लिए सो जाएगा, फिर कभी नहीं उठेगा?" कुरान हमें निम्नलिखित उदाहरण से सिखाता है: तुम पेड़ों को फिर से जीवित होते और हरे-भरे होते देखते हो। तुम्हारी हड्डियाँ सूखी शाखाओं जैसी लगती हैं, फिर भी तुम उनके पुनः जीवित होने में समानता को पहचानने से इनकार करते हो और ऐसी बात को पूरी तरह असंभव मानते हो।

कुरान पूछता है: "क्या वह जो आकाश और पृथ्वी का निर्माण करता है, मनुष्य के जीवन और मृत्यु पर अधिकार नहीं रख सकता, जबकि हम आकाश और पृथ्वी के फल हैं? क्या तुम सचमुच मानते हो कि वह वृक्ष को व्यर्थ और निष्फल कर देगा?

[40] हमने मनुष्य को मिट्टी के एक कण से पैदा किया, फिर उसे वीर्य की एक बूँद के रूप में सुरक्षित स्थान पर रखा, फिर हमने उस बूँद से गर्भाशय की दीवार पर लटका हुआ एक रक्त का थक्का बनाया, फिर हमने उस लटके हुए रक्त के थक्के से एक छोटा-सा पिंड बनाया, फिर हमने उस छोटे-से पिंड से हड्डियाँ बनाईं, फिर हमने हड्डियों को मांस से ढक दिया, फिर हमने उसे एक अन्य प्राणी के रूप में उत्पन्न किया (23:12-14)। (अनुवाद)

सृष्टि, जिसके सभी भागों को उसने उद्देश्यपूर्ण बुद्धि से आकार दिया, उसके उच्च उद्देश्य और

मुद्दा: मानवता?" यह उत्तर देता है: "वह जो

पुनरुत्थान के समय तुम्हें जीवन प्रदान करने वाला वही है

जिसके सम्मुख सारी सृष्टि उसके आज्ञाकारी सोल के समान है-

जब भी यह सुनता है तो यह अपना सिर विनम्रतापूर्वक झुका देता है

आदेश 'हो जाओ!' और यह हो जाता है। वसंत का निर्माण करना उतना ही है

उसके लिए एक फूल बनाना और सब कुछ बनाना उतना ही आसान है

उसकी शक्ति के लिए जानवरों को बनाना उतना ही आसान है जितना एक मक्खी को बनाना।

किसी को भी उसकी शक्ति का उल्लंघन या ह्रास नहीं करना चाहिए

मांग करते हुए: “हड्डियों को पुनर्जीवित कौन करेगा?”

पवित्र है वह जिसके हाथ में हर चीज़ की प्रभुता है (36:83), कुरान उसकी पुष्टि करता है

सभी चीज़ों की कुंजी पर नियंत्रण और कब्ज़ा। वह

रात की जगह दिन और सर्दी की जगह गर्मी ले लेती है,

किताब के पन्ने पलटने जितना आसान। वह सर्वशक्तिमान है,

राजसी। वह दुनिया को बंद कर देता है और खोलता है

इसके बाद मानो वे दो स्टेशनों से अधिक नहीं होंगे।

इसका अर्थ यह है कि तुम सब उसी की ओर लौटाये जाओगे (36:83)।

इस प्रकार वह तुम्हें पुनर्जीवित करेगा, तुम्हें स्वर्ग के मैदान में ले जाएगा।

पुनरुत्थान, और अपनी राजसी उपस्थिति में आपका न्याय करेंगे।

ऐसी उपमाएँ हमारे दिल और दिमाग को तैयार करती हैं

पुनरुत्थान को स्वीकार करने के लिए। हालाँकि, कुरान

कभी-कभी यह परलोक में ईश्वर के कार्यों की ओर संकेत करता है, जो एक तरह से

उनके सांसारिक भाग की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

एलील्स, ताकि संदेह और इनकार के लिए कोई जगह न बचे।
उदाहरण निम्नलिखित सूराओं में मिलते हैं : जब सूरज मुड़ा हुआ होता है (81:1), जब आसमान फट जाता है (82:1), और जब आसमान फट जाता है (84:1)। इन सूराओं में, सर्वशक्तिमान पुनरुत्थान और विशाल क्रांतियों के साथ-साथ उन प्रभुतापूर्ण कार्यों का संकेत देता है जो तब घटित होंगे, जो हम हर शरद ऋतु या वसंत में देखते हैं।

इन उपमाओं को समझते हुए, जो हमारे दिलों में विस्मय पैदा करती हैं, हम आसानी से वह स्वीकार कर सकते हैं जिसे बुद्धि अन्यथा अस्वीकार कर सकती है। चूँकि अधिक विस्तृत विश्लेषण में कई पृष्ठ लगेंगे, इसलिए हम खुद को यहाँ तक सीमित रखेंगे: जब पृष्ठ फैले हुए हैं (81:10)।

इस आयत का तात्पर्य है: "पुनरुत्थान के समय, हर किसी के कर्म एक लिखित पृष्ठ पर प्रकट किए जाएँगे।" पहली नज़र में, यह अजीब और समझ से परे लगता है। लेकिन जैसा कि सूरा बताता है, जैसे वसंत का नवीनीकरण दूसरे पुनरुत्थान के समानांतर होता है, वैसे ही "पृष्ठों का फैलना" भी बहुत स्पष्ट समानांतर है। हर फलदार पेड़ और फूल वाले पौधे के अपने गुण, कार्य और कर्म होते हैं। यह ईश्वर की महिमा (अर्थात्, उनके नामों को प्रकट करना) के अनुसार अपनी पूजा करता है।

इसके सभी कर्म और जीवन का रिकॉर्ड अंकित है
प्रत्येक बीज में जो अगले वसंत में मिट्टी के दूसरे टुकड़े में उगेगा। आकार और रूप की जीभ के साथ,
पेड़ या फूल वाले पौधे [बीज से उगने वाले]
पिछली शरद ऋतु में दफन] वाक्पटुता से इंगित करते हैं
मूल वृक्ष या फूल वाले पौधे का जीवन और कर्म,
और अपने कर्मों के पन्ने फैलाए
उनकी शाखाएँ, टहनियाँ, पत्तियाँ, फूल और फल।
वह जो कहता है: जब पन्ने फैले हुए हैं तो वह है
वही सत्ता जो हमारी आँखों के सामने इन सब को प्राप्त करती है
बहुत बुद्धिमानी, विवेकपूर्ण, कुशल और सूक्ष्म तरीके से करतब
ऐसा मार्ग उसके नामों से निर्धारित होता है जो सर्वज्ञ, सर्वरक्षक, सर्वपालक और प्रशिक्षण देने वाला है,
और सर्व सूक्ष्म।४१

आप पुनरुत्थान के अन्य मुद्दों पर भी चर्चा कर सकते हैं
समान समानताओं के माध्यम से। उदाहरण के लिए, विचार करें
कि: जब सूर्य मुड़ा हुआ है (८१:१) दोनों संदर्भित करता है
एक शानदार छवि के लिए, मुड़ा हुआ के माध्यम से भी संकेत मिलता है
इस दुनिया में इसके समानांतर:

---

41 चूँकि कुरान सभी समयों और विभिन्न स्तर की समझ वाले लोगों को संबोधित करता है, इसलिए स्वाभाविक रूप से यह अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह ध्वनियों के रिकॉर्डिंग और पुनरुत्पादन की व्याख्या करे।
और छवियाँ बनेंगी। हालाँकि, मानवता की क्षमता
टेप रिकॉर्डर और टेलीविज़न के ज़रिए ऐसी चीज़ें करना लोगों के "पृष्ठों से बाहर फैलने" के लिए एक निर्णायक तर्क है
क़यामत के दिन किए जाने वाले कर्म। (ट्र.)

प्रथम: सर्वशक्तिमान ने अस्तित्वहीनता के पर्दे हटाए, फिर आकाश और आकाश के पर्दे हटाए, ताकि अपनी दया के भण्डार से एक रत्न-जैसा दीपक - सूर्य - निकालकर संसार को प्रकाशित कर सके।

संसार को बंद करने के बाद, वह उस रत्न को पुनः उसके आवरण में लपेटेगा और हटा देगा।

दूसरा: सूर्य को एक अधिकारी माना जा सकता है जिसे प्रकाश को फैलाने और पृथ्वी के चारों ओर बारी-बारी से प्रकाश और अंधकार को लपेटने का कार्य सौंपा गया है।

हर शाम को उसे अपना सामान (प्रकाश) समेटकर छिप जाने का आदेश दिया जाता है। कभी-कभी सूरज बहुत कम काम करता है, क्योंकि बादल या चाँद की वजह से वह अपना काम पूरी तरह से नहीं कर पाता। जिस तरह सूरज इस दुनिया में नियमित रूप से अपना सामान और बहीखाता इकट्ठा करता रहता है, उसी तरह एक दिन ऐसा आएगा जब वह अपने काम से मुक्त हो जाएगा।

भले ही इस तरह की बर्खास्तगी का कोई कारण न हो, लेकिन इसके चेहरे पर दो धब्बे - जो अब छोटे हैं और बढ़ने वाले हैं - इस हद तक बढ़ सकते हैं कि सूर्य अपने प्रभु के आदेश से, पृथ्वी के सिर के चारों ओर लपेटे गए प्रकाश को वापस ले लेगा। भगवान उस प्रकाश को सूर्य के अपने सिर के चारों ओर लपेटते हुए कहेंगे: "आओ, पृथ्वी के प्रति तुम्हारा कोई कर्तव्य नहीं है। नरक की यात्रा करो और उसके निवासियों को जला दो, जो पूजा करते थे

और इस प्रकार आप जैसे आज्ञाकारी सेवक का अपमान किया
अविश्वास के साथ।" अपने काले, जख्मी चेहरे के साथ,
सूर्य ने घोषणा की: जब सूर्य मुड़ा हुआ है

ऊपर (81:1).

भाग पांच

मानवता के चुने हुए सभी 124,000 पैगम्बरों ने
बताया कि परलोक अस्तित्व में है और सभी प्राणी
वहाँ ले जाया जाएगा, जैसा कि सृष्टिकर्ता ने वादा किया है। ये रिपोर्ट
उनके प्रत्यक्ष दर्शन पर आधारित हैं

और पूर्ण विश्वास। लाखों संत अपने ज्ञान और विश्वास के आधार पर इन रिपोर्टों की पुष्टि

करते हैं

(छिपे हुए सत्यों) का अनावरण और अनुभव,
और आख़िरत के अस्तित्व की गवाही देते हैं।

ब्रह्माण्ड के सर्वज्ञ निर्माता के सभी नाम

एक शाश्वत क्षेत्र के अस्तित्व की आवश्यकता है
उनकी अभिव्यक्तियाँ इस दुनिया में प्रदर्शित होती हैं।
इसके अलावा, परलोक का अस्तित्व भी आवश्यक है
निम्नलिखित कारण हैं: • अनंत

शाश्वत शक्ति, जो प्रत्येक वसंत में

अनगिनत मृत पेड़ों और विभिन्न पौधों को पुनर्जीवित करता है
और पशु प्रजातियाँ (परम पुनरुत्थान के सभी "नमूने") "हो!" के
साथ और यह उन्हें पुनरुत्थान की छवि बनाता है,

इसकी आवश्यकता है.

• असीम अनन्त बुद्धि का ध्यान

अनंत सीमा तक न्यूनतम विवरण के लिए भी इसकी आवश्यकता होती है।

• शाश्वत दया और स्थायी अनुग्रह

जो पूर्ण देखभाल और अद्भुत ढंग से, सभी सजीव प्राणियों को, जिन्हें दिव्यदृष्टि की आवश्यकता है, सहारा देते हैं, तथा जो प्रत्येक झरने में अनंत प्रकाश प्रदर्शित करते हैं।

थोड़े समय में ही अलंकरण और सौंदर्य की विविधता

अवधि, इसकी आवश्यकता है.

• हमारा उत्कट, अटूट और निरंतर प्रेम

अनंत काल, अमरता की हमारी लालसा, हमारी अभिलाषा

स्थायित्व के लिए, और तथ्य यह है कि हम हैं
ईश्वर की सबसे प्रिय रचनाएँ हैं और

किसी भी अन्य प्राणी की अपेक्षा सृजन से अधिक चिंतित

इसकी आवश्यकता है.

इससे हम समझ सकते हैं कि अस्तित्व

एक शाश्वत परलोक की, जिसमें एक क्षेत्र भी शामिल है

खुशी, स्पष्ट रूप से दिखाई देती है और दृढ़ता से स्थापित होती है। यह इतनी प्रभावी रूप से सिद्ध है कि हमें अवश्य ही

इसे वैसे ही स्वीकार करें, जैसे हम इस संसार के अस्तित्व को स्वीकार करते हैं।४२

---

[42] इस भाग से यह समझा जा सकता है कि रिपोर्ट करना कितना आसान है
पहले से मौजूद चीज़ या स्पष्ट तथ्य और उसे समझना कितना कठिन है
इसे नकारें। उदाहरण के लिए, अगर कोई कहता है: "इस पर कहीं
पृथ्वी एक अद्भुत उद्यान है जो "डिब्बाबंद" दूध प्रदान करता है—
सभी प्रकार के फल - और अन्य लोग इस पर विवाद करते हैं, केवल पहला व्यक्ति
बगीचे या उसकी कुछ उपज दिखानी होगी।
हालाँकि, इसे सही ठहराने के लिए पूरी दुनिया का निरीक्षण और प्रदर्शन करना होगा

आख़िरत पर ईमान लाना हिकमत वाले क़ुरआन की सबसे अहम शिक्षाओं में से एक है। यह इतना पक्का है कि
और इसमें इतनी शक्तिशाली आशा और सांत्वना निहित है
कि यह एक बुजुर्ग व्यक्ति को सांत्वना देगा। कहावत: “स्तुति करो
विश्वास की पूर्णता के लिए ईश्वर पर भरोसा रखें," हम बुजुर्गों को अपने बुढ़ापे में खुश होना चाहिए।

इसी तरह, दो सच्चे गवाहों (जैसे कि पैगंबर या संत) की गवाही स्वर्ग के अस्तित्व को स्थापित करती है, भले ही हम दूसरों द्वारा दिखाए गए कई संकेतों और संकेतों पर विचार न करें जो इसके अस्तित्व का दावा करते हैं।

इनकार करने वालों को अनंत ब्रह्मांड की जांच, अन्वेषण और छानबीन करनी चाहिए
और अनंत और शाश्वत समय में यात्रा करते हैं इससे पहले कि वे
स्वर्ग के अस्तित्व को साबित कर सकता है। इसलिए, मेरे दोस्तों,
समझें कि इस पर विश्वास करना कितना सुरक्षित और सही है
इसके बाद.

अट्ठाईसवाँ शब्द

स्वर्ग के बारे में सवालों के जवाब

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

उन लोगों को खुशखबरी सुनाओ जो ईमान लाए और अच्छे कर्म करते हैं
उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें हैं

हर बार जब उन्हें वहाँ से फल दिया जाता है, तो वे कहते हैं: "यह वही है जो हमें दिया

गया था

पहले," और यह उन्हें समानता में दिया गया है। वहाँ

उनके लिए पवित्र पत्नियाँ हैं, और वे वहाँ रहेंगे

हमेशा के लिए. (2:25)

नीचे प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दिए गए हैं
जन्नत हमेशा रहने वाली है। कुरान में जन्नत से भी ज्यादा खूबसूरत वर्णन है।
'उसकी हूरियों से अधिक रमणीय, और उसके झरनों से अधिक मधुर'
सुखद जल, कुछ भी जोड़ने के लिए नहीं छोड़ना चाहिए। हम करेंगे
कुछ कदम बताएं ताकि ऐसे शानदार, शाश्वत,
ऊंचे और सुंदर छंदों को समझा जा सकता है
हम कुछ बारीक बिंदुओं को भी समझाएंगे, जैसे-

उस कुरानिक स्वर्ग से चमकते फूल,
पाँच महत्वपूर्ण प्रश्न और उत्तर।

स्वर्ग सभी आध्यात्मिक और शारीरिक सुखों का साधन है

प्रश्न: दोषपूर्ण, परिवर्तनशील, अस्थिर और पीड़ाग्रस्त शरीर का अन्य प्राणियों से क्या लेना-देना है?
अनंत काल और स्वर्ग के साथ? आत्मा का उत्थान
सुख पर्याप्त होना चाहिए। शारीरिक सुख क्यों चाहिए?
क्या पुनरुत्थान शारीरिक सुख के लिए होता है?

उत्तर: मिट्टी, अपने अंधेरे और घनत्व के बावजूद पानी, हवा और प्रकाश की तुलना में सबसे अधिक घनी है।
दिव्य कला के सभी कार्यों का साधन और स्रोत।

इसलिए यह किसी भी तरह अर्थ में श्रेष्ठ है
अन्य तत्व। आपका आत्म-स्वरूप, इसके घनत्व के बावजूद
और इसके व्यापक होने और प्रदान किए जाने के कारण
यह शुद्ध हो जाता है, किसी प्रकार की श्रेष्ठता प्राप्त कर लेता है
आपकी अन्य इंद्रियाँ और क्षमताएँ। इसी तरह, आपका शरीर
के लिए एक सबसे व्यापक और समृद्ध दर्पण है
दिव्य नामों की अभिव्यक्तियाँ, और
वजन और माप के लिए उपकरणों से सुसज्जित
सभी दिव्य खजानों की सामग्री। उदाहरण के लिए,
यदि जीभ की स्वाद की इंद्रिय मूल न होती
भोजन की विविधता जितनी अधिक होगी,
पीने के बाद, यह अनुभव नहीं कर सकता, पहचान नहीं सकता, या माप नहीं सकता-

उन्हें सुरक्षित रखें। इसके अलावा, आपके शरीर में भी ये तत्व मौजूद होते हैं
अनुभव करने और पहचानने के लिए आवश्यक उपकरण
दिव्य नामों की अधिकांश अभिव्यक्तियाँ भी
सबसे विविध अनुभव करने के लिए संकायों के रूप में
और असीम रूप से भिन्न सुख।

ब्रह्माण्ड का आचरण और मानवता की व्यापक प्रकृति दर्शाती है कि ब्रह्माण्ड का निर्माता अपनी दया के सभी भण्डारों और अपने सभी नामों के प्रकटीकरण को प्रकट करना चाहता है, तथा यह भी चाहता है कि सभी लोग अपने नाम के सभी स्वरूपों को प्रकट करें।
हमें उसके सभी वरदानों का अनुभव कराएँ
ब्रह्मांड। इसे देखते हुए, अनन्त की दुनिया के रूप में
खुशी एक विशाल तालाब है जिसमें बाढ़ आती है
ब्रह्मांड का प्रवाह, क्या है इसका एक विशाल प्रदर्शन
ब्रह्माण्ड का करघा उत्पन्न करता है, और अनन्त
इस (भौतिक) जगत के क्षेत्र में उत्पादित फसलों का भंडार, कुछ लोगों के लिए यह ब्रह्मांड जैसा होगा
डिग्री। सर्व-बुद्धिमान निर्माता, सर्व-दयालु
केवल एक ही, प्रत्येक शारीरिक अंग को उनके कर्तव्य, सेवा और पूजा के बदले में विशेष सुख देगा। अन्यथा सोचना उनके नियम के विपरीत होगा।

बुद्धि, न्याय और करुणा.

प्रश्न: जीवित शरीर निर्माण और विकृति की अवस्था में रहता है, और इसलिए विघटन के अधीन है और शाश्वत नहीं है। खाना-पीना व्यक्ति को शाश्वत बनाता है; यौन संबंध शाश्वत बनाते हैं।

प्रजातियों को खा लिया। ये इस क्षेत्र में जीवन के लिए मौलिक हैं
दुनिया में अप्रासंगिक और अनावश्यक हैं, लेकिन
अनंत काल की दुनिया। यह देखते हुए, उन्हें क्यों रखा गया है
स्वर्ग के सबसे बड़े सुखों में कौन-सा सुख शामिल है?

उत्तर: जीवित शरीर क्षीण होता है और मर जाता है
क्योंकि उसे जो चाहिए उसे बनाए रखने और जो लेता है उसके बीच का संतुलन बिगड़ जाता है। बचपन से

शारीरिक परिपक्वता की उम्र तक, इसमें अधिक समय लगता है
इससे यह बाहर निकलता है और स्वस्थ बढ़ता है। इसके बाद, यह
आमतौर पर वह अपनी आवश्यकताओं को संतुलित तरीके से पूरा नहीं कर पाता।
या तो यह अपनी आवश्यकता से अधिक ग्रहण कर लेता है और इसलिए
मोटा हो जाना, या आवश्यकता से कम खाना खाना वगैरह
पतला हो जाता है। इससे संतुलन बिगड़ जाता है
और, सामान्य परिस्थितियों में, अंततः मृत्यु हो जाती है।
हालाँकि, अनंत काल की दुनिया में, शरीर के कण स्थिर रहते हैं और विघटन और पुनः निर्माण से प्रतिरक्षित होते हैं। दूसरे शब्दों में, यह संतुलन स्थिर रहता है।43

---

[43] इस दुनिया में मनुष्य और पशुओं के शरीर गेस्टहाउस, बैरक या परमाणुओं के स्कूल जैसे हैं। बेजान परमाणु उनमें प्रवेश करते हैं,
अनन्त जगत के लिए परमाणु बनने के योग्य बनो, और
फिर उन्हें छोड़ दो। हालाँकि, आख़िरत में, इस प्रकार :
आख़िरत का घर, वह सब जीवित है (29:64),
जीवन का प्रकाश सब कुछ समाहित कर लेता है। इसकी कोई आवश्यकता नहीं है
परमाणुओं को वही यात्रा करनी है और वही प्रशिक्षण प्राप्त करना है जो इस संसार में परमाणुओं को करना पड़ता है।

निरंतर चक्र में घूमते हुए, एक जीवित शरीर
आनंद के लिए शारीरिक जीवन के कारखाने के निरंतर संचालन के साथ-साथ अनंत काल प्राप्त होता है।
दुनिया, खान-पान, वैवाहिक यौन संबंध
किसी ज़रूरत से उत्पन्न होते हैं और एक कार्य करते हैं। इस प्रकार एक
उत्कृष्ट (और श्रेष्ठ) सुखों की महान विविधता
तत्काल मजदूरी के रूप में उनमें निहित हैं
इस दुनिया में बीमारियों से भरे खाने-पीने और शादी-ब्याह से कई अद्भुत और विविध सुख मिलते हैं। इस प्रकार स्वर्ग, खुशी का क्षेत्र

और आनंद, इन सुखों को अपने में समाहित करना चाहिए
सबसे ऊंचा रूप। उनमें अलौकिकता भी शामिल है
अपने कर्तव्यों के निर्वहन के लिए मजदूरी (सुख के रूप में)
दुनिया भर में उनके द्वारा की गई खोज और यहाँ उनकी आवश्यकता महसूस की गई
एक सुखद और अलौकिक भूख के रूप में,
वे एक सर्वव्यापी में परिवर्तित हो जाएंगे,
आनंद का जीवित स्रोत जो उपयुक्त है
स्वर्ग और अनंत काल.

इसके अनुसार: इस संसार का जीवन तो एक मनोरंजन और खेल है, परन्तु परलोक तो एक धाम है।
यह सब वास्तव में जीवित है (29:64), इस दुनिया में सभी निर्जीव और अचेतन पदार्थ और वस्तुएं हैं
दूसरी दुनिया में जीवित और सचेत। यहाँ के लोगों और जानवरों की तरह, वहाँ के पेड़ और पत्थर भी होंगे
आज्ञाओं को समझें और उनका पालन करें। यदि आप किसी पेड़ से कहें

तुम्हें फलां फल लाना है, तो वह ऐसा ही करेगा।
अगर आप पत्थर को आने को कहेंगे तो वह आएगा। चूंकि पत्थर और पेड़ इतने ऊंचे रूप धारण कर लेंगे, इसलिए खाने-पीने और वैवाहिक संबंधों के लिए ऐसा रूप धारण करना जरूरी होगा जो उनके सांसारिक रूपों से उसी हद तक श्रेष्ठ हो, जिस हद तक स्वर्ग इस दुनिया से श्रेष्ठ है। इसमें उनकी शारीरिक वास्तविकताओं को संरक्षित करना भी शामिल है।

प्रश्न: एक परंपरा में कहा गया है कि "एक व्यक्ति उसी के साथ होता है जिसे वह प्यार करता है," और इसलिए दोस्त स्वर्ग में एक साथ होंगे। इस प्रकार एक साधारण बेडौइन जो ईश्वर के रसूल के साथ एक मिनट की संगति में उनके लिए गहरा प्यार महसूस करता है, उसे स्वर्ग में उनके साथ होना चाहिए। लेकिन एक साधारण खानाबदोश की रोशनी और इनाम उसे ईश्वर के रसूल के साथ एक ही स्थान साझा करने का कारण कैसे बना सकता है, जिसका प्रकाश और इनाम असीमित है?

उत्तर: मैं इस महान सत्य को तुलना के द्वारा इंगित करूँगा। एक भव्य व्यक्ति ने एक बहुत ही सुंदर और भव्य उद्यान में एक विशाल भोज और एक भव्य रूप से सजा हुआ कार्यक्रम तैयार किया। इसमें सभी स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ शामिल थे जिनका स्वाद अनुभव किया जा सकता है, सभी सुंदर चीजें जो दृष्टि को प्रसन्न करती हैं, सभी आश्चर्य जो कल्पना को प्रसन्न करते हैं, इत्यादि। वह सब कुछ जो बाहरी और आंतरिक रूप से संतुष्ट और प्रसन्न करेगा

होश में थे। दो दोस्त भोज में गए और एक ही मंडप में एक मेज पर बैठ गए।

उसकी रुचि सीमित थी और इसलिए उसे बहुत कम आनंद मिलता था। उसकी कमज़ोर दृष्टि और सूंघने की अक्षमता ने उसे अद्भुत कलाओं को समझने से रोक दिया

चमत्कारों को समझना। वह केवल लाभ उठा सकता था

उसकी क्षमता की सीमा तक, जो कि नगण्य थी।

लेकिन दूसरे व्यक्ति ने अपनी बाहरी

और आंतरिक इंद्रियाँ, बुद्धि, हृदय, और सभी क्षमताएँ और भावनाएँ सर्वोच्च सीमा तक। इसलिए

वह सभी सूक्ष्मताओं, सुन्दरताओं, चमत्कारों और सुन्दरताओं को देख सकता था, अनुभव कर सकता था और उनसे आनन्द प्राप्त कर सकता था।

उस सुन्दर बगीचे में बहुत सी चीजें हैं।

यह हमारे भ्रमित, दर्दनाक और

संकीर्ण दुनिया। बीच एक अनंत दूरी है

सबसे महान और सबसे छोटे, जो एक साथ मौजूद हैं

स्वर्ग, खुशी और अनंत काल का निवास।

जब दोस्त एक साथ होते हैं, तो यह अधिक उपयुक्त होता है कि

प्रत्येक को मेज से अपना हिस्सा मिलता है

अल्लाह के मुताबिक वह अत्यन्त दयालु है।

उसकी योग्यता की डिग्री। भले ही वे

अलग-अलग स्वर्गों में या अलग-अलग “मंजिलों” पर

स्वर्ग, वे मिल सकेंगे, स्वर्ग के लिए

आठ स्तर एक दूसरे के ऊपर हैं और साझा करते हैं

एक ही छत - परमेश्वर का सर्वोच्च सिंहासन।

मान लीजिए कि एक शंक्वाकार पर्वत के चारों ओर दीवारनुमा घेरे हैं, एक दूसरे के भीतर और एक दूसरे के ऊपर

एक दूसरे के सामने, प्रत्येक अपने पैर से दूसरे तक

शिखर सम्मेलन। यह हर किसी को रोकने से नहीं है

सूर्य को देखना। (वास्तव में, विभिन्न आख्यान या परम्पराएँ बताती हैं कि स्तर या मंजिलें

स्वर्ग कुछ इस तरह है।)

प्रश्न: भविष्यसूचक परम्पराएँ कहती हैं: "हूरिस

70 वस्त्र पहने हुए हैं (एक के ऊपर एक),

फिर भी उनके पैरों की हड्डियों का मज्जा देखा जा सकता है।"

इसका क्या मतलब है? यह कैसी खूबसूरती है?

उत्तर: इस परंपरा का बहुत अच्छा अर्थ है

और एक प्यारी सुंदरता। इस दुनिया में, जो बदसूरत है,

यह बेजान है, और अधिकांशतः केवल एक आवरण है,

जब तक सुन्दरता और आकर्षण दिखाई दे तब तक यह पर्याप्त है

आँखों को सुंदर लगता है और जब तक कि बहुत अधिक परिचितता उसे छिपा न ले। स्वर्ग में, जो सुंदर है,

जीवित, चमकदार, और पूरी तरह से सार या कर्नेल बिना आवरण के, आंख की तरह, हमारी सभी इंद्रियां और संकाय हूरियों से और महिलाओं से आने वाली महिलाओं से अपने अलग-अलग सुख प्राप्त करना चाहेंगे

इस दुनिया से भी खूबसूरत कौन होगा

यह परंपरा इंगित करती है कि ऊपरी वस्त्र की सुंदरता से लेकर हड्डी में मज्जा तक,

प्रत्येक एक इंद्रिय के लिए आनंद का साधन होगा और

संकाय।

इसमें यह भी बताया गया है कि हूरों की सजावट,
शारीरिक और आध्यात्मिक सुंदरता और आकर्षण, प्रसन्न होगा,
सौंदर्य के लिए हमारी इंद्रियों, भावनाओं, शक्तियों और क्षमताओं की सभी
लालसाओं को संतुष्ट और संतुष्ट करें, और
आनंद और श्रृंगार के प्रति उनका बड़ा प्रेम।
स्वर्ग के 70 प्रकार के श्रृंगार से सुसज्जित

एक तरीका है कि एक दूसरे को छुपा नहीं है, हूरिस
70 से अधिक प्रकार की शारीरिक और आध्यात्मिक सुंदरता और लालित्य
प्रदर्शित करें, और इस प्रकार प्रदर्शित करें
सत्य इसमें निहित है: इसमें (स्वर्ग में) जो कुछ भी है
आत्माएँ तो चाहती हैं और आँखें उससे प्रसन्न होती हैं (43:71).44

यह परंपरा यह भी बताती है कि चूंकि स्वर्ग
इसमें कोई अनावश्यक, छिला हुआ या खोल वाला कचरा नहीं है

---

44 फिरदौस में सबसे बड़ी आशीष है परमेश्वर की मंज़ूरी पाना
और अच्छा सुख और, जैसा कि कुछ आयतों में निहित है और कुछ परंपराओं में स्पष्ट रूप से
कहा गया है, गुणवत्ता और मात्रा की सभी अवधारणाओं से परे ईश्वर को देखना। हालाँकि, चूँकि
इस तरह के विशुद्ध आध्यात्मिक आशीर्वाद विश्वासियों के अभिजात वर्ग से संबंधित हैं, इसलिए
कुरान में आमतौर पर स्वर्ग के आशीर्वाद का उल्लेख किया गया है

मानो वे विशुद्ध रूप से शारीरिक सुख हों। लोग केवल आत्मा से नहीं बने हैं, बल्कि वे त्रिपक्षीय
प्राणी हैं जो आत्मा से बने हैं
आत्मा, शारीरिक आत्मा और मांस (भौतिक शरीर) का। चूँकि
विश्वासियों के शरीर और शारीरिक आत्माएं दुनिया में उनकी सेवा करती हैं,
कुछ कष्ट सहने पड़ते हैं, तथा कुछ सुविधाओं से वंचित रहना पड़ता है।
सांसारिक सुखों को अनुशासित और प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, प्रत्येक शरीर
उन्हें उनके लिए विशेष सुखों से पुरस्कृत किया जाएगा।
यह नहीं सोचना चाहिए कि ये सुख विशुद्ध रूप से भौतिक हैं।

तलछट के साथ पदार्थ, इसके निवासी मलत्याग नहीं करेंगे

खाने-पीने के बाद जो कचरा निकलता है, उसे पेड़-पौधे खाकर पीते हैं। इस दुनिया में पेड़-पौधे,

सबसे साधारण जीवित प्राणी, मलत्याग नहीं करते

बहुत सारा पोषण लेने के बावजूद। तो क्यों करना चाहिए

स्वर्ग के निवासी, जीवन की सर्वोच्च श्रेणी,

अपशिष्ट उत्सर्जित करें?

प्रश्न: कुछ भविष्यसूचक परम्पराएँ कहती हैं कि

स्वर्ग के कुछ निवासियों को जगह दी जाएगी

वे जो आध्यात्मिक संतुष्टि देंगे वह उससे कहीं अधिक है

शारीरिक संतुष्टि। उदाहरण के लिए, हर व्यक्ति को शारीरिक संतुष्टि की आवश्यकता होती है।

दोस्त, साथी। किसी व्यक्ति की मानवीय भावना को सबसे अधिक संतुष्टि किससे मिलती है

जरूरत है एक अंतरंग जीवन साथी की जिसके साथ

प्यार, खुशी और दुख साझा करें। चूँकि सबसे दयालु और सबसे दयालु और उदार

दिल एक महिला का दिल है,

कुरान में महिलाओं को पुरुषों के लिए जन्नत की सबसे बड़ी नेमतों में से एक बताया गया है, जबकि इसके विपरीत

कुरान में महिलाओं को पुरुषों के लिए जन्नत की सबसे बड़ी नेमतों में से एक बताया गया है।

वह जो कामुक आनंद प्रदान करती है, उसके अतिरिक्त आध्यात्मिक

वह अपने जीवनसाथी को इस तरह के उत्कृष्ट प्रदर्शन के माध्यम से कितना आनंद दे सकती है

करुणा, प्रेम और जीवन-साथी होने जैसी भावनाएँ

एक पुरुष उसे जितना दे सकता है, उससे कहीं ज़्यादा। इसका मतलब यह नहीं है कि महिलाएँ

स्वर्ग में साथी विहीन रह जाओगे।

आपसी मदद करने, एक दूसरे के सुख-दुख बांटने से

एक दूसरे का साथ और साथ, और वह जो प्रेम, स्नेह और आत्मीयता से मिलता है,

वह शारीरिक सुखों से कहीं अधिक है

पुरुष और महिलाएं एक दूसरे की सहायता करते हैं।

शारीरिक सुखों में लिप्त और उनमें सम्मिलित आध्यात्मिक सुखों से अनभिज्ञ लोग

स्वर्ग को भूल से कामुक आनंद का क्षेत्र मान सकते हैं। (अनुवाद)

दुनिया जितनी बड़ी होगी, और उन्हें सैकड़ों-हजारों महल और हूरें दी जाएंगी।

इसका क्या कारण है, क्यों और कैसे?

क्या एक व्यक्ति को इन सब चीजों की जरूरत है?

उत्तर: यदि आप केवल एक ठोस वस्तु होते, एक शाकाहारी प्राणी जिसमें पेट होता, या केवल
एक सीमित, भारी, सरल और क्षणिक शारीरिक या
पशु शरीर, आप इतने सारे के मालिक या लायक नहीं होंगे
महल या हूरें। लेकिन आप एक व्यापक हैं
ईश्वरीय शक्ति का चमत्कार। यदि आप इस दुनिया पर राज करते
और अपनी सारी सम्पत्ति और सुख का उपयोग अपनी संतुष्टि के लिए किया
आपकी अविकसित इंद्रियों और क्षमताओं की ज़रूरतें, आप
फिर भी अपने संक्षिप्त समय में अपने लालच को संतुष्ट नहीं कर सके
जीवन। हालाँकि, अगर आपके पास असीमित क्षमता है
खुशी का एक शाश्वत निवास, और यदि आप दस्तक देते हैं
अनंत दया के द्वार पर, अनंत आवश्यकता की भाषा में, आपको दिव्य उपहार प्राप्त होंगे
ऐसी परंपराओं में वर्णित है। हम एक प्रस्तुत करेंगे
इस उच्च सत्य को स्पष्ट करने के लिए एक तुलना कीजिए।

इस घाटी के बगीचे की तरह, बारला में प्रत्येक अंगूर के बाग और बगीचे का एक अलग मालिक है।45 प्रत्येक पक्षी, स्पार-रो, या शहद-मधुमक्खी, जिसके पास केवल मुट्ठी भर है

---

45 बरला का यह बाग सुलेमान का है, जो इस बाग में सेवा करता था।
गरीब व्यक्ति 8 वर्षों तक पूर्ण निष्ठा के साथ, जहां यह वचन था
1 या 2 घंटे में लिखा जा सकता है।

अनाज के मालिक कह सकते हैं: “बरला के सभी अंगूर के बाग और बगीचे मेरे मनोरंजन के स्थान हैं।” हर कोई बरला पर कब्ज़ा कर सकता है और उसे अपनी संपत्ति में शामिल कर सकता है। तथ्य यह है कि
दूसरों का उसमें हिस्सा होना उसके शासन को नकार नहीं देता। एक सच्चा इंसान कह सकता है: “मेरे रचयिता ने बनाया
दुनिया मेरे लिए एक घर है, जिसका मुख्य दीपक सूर्य है
और तारे इसकी बिजली की रोशनी हैं। धरती मेरा पालना है जिस पर फूलों के कालीन बिछे हैं,” और फिर धन्यवाद
भगवान। यह निष्कर्ष इसलिए खारिज नहीं किया जा सकता क्योंकि इस "घर" में दूसरे जीव रहते हैं। इसके विपरीत,
जीव इस घर को सजाते हैं और इसकी सजावट की तरह हैं। अगर, इंसान होने के नाते, आप या यहाँ तक कि
एक पक्षी ऐसे पर नियंत्रण का अधिकार का दावा करता था
इस संकीर्ण, संक्षिप्त दुनिया में एक विशाल क्षेत्र और प्राप्त करने के लिए
इतना विशाल इनाम, आपको इस पर विचार क्यों करना चाहिए?
यह संभावना नहीं है कि आप संपत्ति के मालिक होंगे
500 वर्ष सुख के विशाल, शाश्वत निवास में?46

जैसे सूर्य यहाँ अनेक दर्पणों में मौजूद है
साथ ही, एक आध्यात्मिक रूप से प्रबुद्ध व्यक्ति
एक ही समय में कई स्थानों पर उपस्थित रहना, जैसे
सोलहवें वचन में चर्चा की गई है। उदाहरण के लिए,
गेब्रियल 1,000 सितारों पर मौजूद रहते हुए भी मौजूद रह सकता है
ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन पर, पैगंबर की उपस्थिति में-

---

[46] शास्त्रीय न्यायशास्त्र की पुस्तकों में, एक दिन की दूरी लगभग होती है
30 किलोमीटर (लगभग 18.6 मील) (ट्र.)

ईश्वरीय उपस्थिति में, और ईश्वरीय उपस्थिति में। पैगंबर मुहम्मद पुनरुत्थान के बाद सभा स्थल में अपने समुदाय के अधिकांश समर्पित, ईश्वर-चेतन सदस्यों से मिल सकते हैं, ठीक उसी तरह जैसे वे इस दुनिया में कई स्थानों पर और कई संतों के सामने एक साथ प्रकट हो सकते हैं। संतों का एक समूह (अब्दल: प्रतिस्थापन) एक ही समय में कई स्थानों पर प्रकट हो सकता है।

साधारण लोग कभी-कभी स्वप्न देखते हुए या उसका दर्शन करते हुए एक मिनट में एक वर्ष जितना काम कर सकते हैं, और प्रत्येक व्यक्ति हृदय, आत्मा और कल्पना में एक ही समय में अनेक स्थानों के संपर्क में रह सकता है और उनसे जुड़ा रह सकता है। ऐसी बातें सर्वविदित और प्रत्यक्ष होती हैं।

इस प्रकार, स्वर्ग (जो प्रकाशमय, अप्रतिबंधित, विस्तृत और शाश्वत है) के निवासियों के पास आत्मा की शक्ति और हल्कापन तथा कल्पना की तीव्रता वाला शरीर होगा। वे एक साथ अनगिनत स्थानों पर जा सकेंगे, असंख्य हूरियों से बात कर सकेंगे, और अनगिनत तरीकों से आनंद प्राप्त कर सकेंगे। यह उस शाश्वत स्वर्ग और अनंत दया के लिए उपयुक्त है, और सत्यवादी रिपोर्टर कहता है कि यह वास्तविकता और सत्य है।

लेकिन ऐसी सच्चाइयों को हमारे छोटे दिमाग के तराजू पर नहीं तौला जा सकता।

आपकी जय हो। हमारे पास कोई ज्ञान नहीं है सिवाय इसके कि
जो कुछ तूने हमें सिखाया है, तू सर्वज्ञ है।
सर्वज्ञ.

हे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या भूल जाएं तो हमें जवाबदेह मत ठहराना।
हे ईश्वर, अपने भक्तों पर कृपा करें।
प्रियतम, जिसने स्वर्ग के द्वार खोले
आपके द्वारा प्रिय होने के कारण, और उसकी प्रार्थनाओं के माध्यम से, और
जिनके समुदाय को आपने उन दरवाज़ों को खोलने में सक्षम बनाया
उस पर आपका आशीर्वाद पुकारने के द्वारा। उस पर आपका आशीर्वाद हो
आशीर्वाद और शांति। हे ईश्वर, हमें स्वर्ग में प्रवेश करने दो
तेरे चुने हुए प्रियतम की मध्यस्थता से पवित्र, धर्मी लोगों के बीच में आ। आमीन।

उनतीसवाँ शब्द

प्रलय का दिन, विश्व का विनाश और परलोक

इस अध्याय में एक परिचय और
चार बुनियादी बातें.

परिचय: यदि कोई यह दावा करे कि एक शहर
या किसी महल को नष्ट कर दिया जाएगा और फिर मजबूती से पुनर्निर्माण किया जाएगा, तो किसी से निम्नलिखित छह प्रश्न पूछे जाएंगे
प्रश्न:

इसे क्यों नष्ट किया जाएगा और क्या इसका विनाश आवश्यक है?

क्या इसका विध्वंसक और इसका पुनर्निर्माणकर्ता वास्तव में ऐसा कर सकते हैं
ये बातें?

क्या ऐसा विनाश संभव है?

यदि सम्भव हुआ तो क्या इसे सचमुच नष्ट कर दिया जाएगा?

क्या ऐसा पुनर्निर्माण संभव है?

यदि संभव हुआ तो क्या इसका पुनः निर्माण किया जाएगा?

दुनिया एक महल के बराबर है और ब्रह्मांड एक शहर के बराबर। दोनों को नष्ट किया जा सकता है, और दोनों को नष्ट किया जा सकता है।

उनके विनाश के लिए एक आवश्यक कारण। उनका विध्वंसक और पुनर्निर्माणकर्ता दोनों ही कर सकते हैं।

पहला मूलभूत सिद्धांत: आत्मा शाश्वत है, और स्वर्गदूतों के अस्तित्व के लिए प्रथम उद्देश्य के प्रमाण और अन्य आत्मिक प्राणी इसकी अनंतता को प्रमाणित करते हैं। मृतकों की आत्माओं के बहुत करीब, जो इंतज़ार कर रहे हैं बरज़ख47 में आख़िरत में जाना, आवश्यकता होना उनके अस्तित्व का प्रमाण। यदि ऐसे प्राणियों के पास चीज़ों की वास्तविकता में आवश्यक अंतर्दृष्टि, संत उन्हें देख सकते हैं और उनसे संवाद भी कर सकते हैं। इसके अलावा, लगभग हर कोई उनसे वास्तविक रूप में मिलता है सपने। चूँकि आधुनिक भौतिकवाद ऐसे सपनों में संदेह पैदा करता है स्पष्ट मामलों के लिए, हम चार स्रोत प्रदान करते हैं जिससे प्रेरक ज्ञान प्राप्त किया जा सके।

परिचय: एक शाश्वत, अतुलनीय सौंदर्य एक शाश्वत प्रेमी की आवश्यकता है जिसके माध्यम से यह होगा स्थायी रूप से परिलक्षित होता है। एक दोषरहित, शाश्वत और परिपूर्ण कला एक स्थायी चिंतनशील हेराल्ड की मांग करती है। एक असीम दया और परोपकार की आवश्यकता होती है जरूरतमंद लोगों की निरंतर सहजता और खुशी उसका धन्यवाद करना। मानव आत्मा उन सबसे प्रमुख है प्रेमी, चिंतनशील हेराल्ड, और जरूरतमंद धन्यवाद-

---

47 इस दुनिया और अगली दुनिया के बीच की मध्यवर्ती दुनिया। (सं.)

पूर्ण। इसे देखते हुए, यह अनंत काल के रास्ते पर उस सुंदरता, पूर्णता और दया के साथ होगा।

शायद सभी प्राणी, यहां तक कि सबसे आदिम प्राणी भी, किसी न किसी तरह के अनंत काल के लिए बनाए गए हैं। बेजान फूल में एक तरह की मृत्यु के बाद की अमरता होती है: इसका रूप यादों में संरक्षित होता है, और इसके निर्माण के नियम नए माध्यम से स्थायित्व प्राप्त करते हैं इसके बीजों से फूल उगते हैं। चूँकि ये नियम, इसके स्वरूप का मॉडल जिसका समान महत्व है क्योंकि यह हमारे लिए हमारी आत्मा की तरह ही संरक्षित है इसके बीजों को सर्वरक्षक, सर्वबुद्धिमान परमेश्वर द्वारा मानव आत्मा, जिसमें एक उदात्त व्यापकता है प्रकृति और चेतना और के साथ कपड़े पहने किया गया है बाह्य अस्तित्व, कहीं अधिक योग्य है शाश्वत। एक सर्वज्ञ महामहिम कैसे हो सकता है, अनंत काल का एक सर्व-संरक्षण करने वाला, जो बनाए रखता है एक विशाल वृक्ष का जीवन-चक्र और एक छोटे से बीज के माध्यम से उसके निर्माण का नियम, किसी की आत्माओं को संरक्षित नहीं करता है मृत लोग?

पहला स्रोत: यह एक व्यक्ति के रूप में आपसे संबंधित है और आपकी आंतरिक दुनिया से संबंधित है। अपने जीवन और आंतरिक पहलू को ध्यान से देखें, और आप पाएंगे कि शाश्वत आत्मा के अस्तित्व को समझें। प्रत्येक व्यक्ति हर साल पूर्ण नवीनीकरण के माध्यम से अपना शरीर बदलता है, लेकिन आत्मा अपरिवर्तित रहती है।

शरीर क्षणभंगुर है; इसमें निवास करने वाली आत्मा
स्थायी है। आपके शरीर का बनना या बिगड़ना
शरीर के अणुओं, या इसकी संरचना और अपघटन, आत्मा को प्रभावित नहीं
करता है, जो सालाना अपने शारीरिक परिधान को बदलता या नवीनीकृत
करता है। जब यह
मृत्यु के समय जब मनुष्य इस वस्त्र को उतार देता है, तो न तो इसका
स्थायित्व और न ही इसका मूल स्वरूप ही प्रभावित होता है।
प्रभावित क्योंकि, जैसा कि अनुभवों और अवलोकन के माध्यम से स्थापित
किया गया है, आत्मा निर्भर नहीं करती है
शरीर पर उसके जीवन के लिए निर्भर है। शरीर केवल उसका है
निवास स्थान, उसका आवरण नहीं। आत्मा के पास एक सूक्ष्म आवरण है,
उसका "ऊर्जावान आवरण", और वह अपना आवरण छोड़ देता है
निवास स्थान इस आवरण में लिपटा हुआ है जब उसका शरीर
मर जाता है.

दूसरा स्रोत: यह बाहरी दुनिया से संबंधित है।
अवलोकन और अनुभव आत्मा की ओर संकेत करते हैं
अनंत काल। व्यक्तिगत आत्मा की स्थायित्व, जो
मृत्यु के बाद के जीवन में इसकी पुष्टि हो चुकी है,
मृत्यु के बाद आत्मा का चिरस्थायी होना। यह तार्किक रूप से स्थापित किया गया है
कि किसी भी आवश्यक पहलू का अवलोकन किया जाना चाहिए
एक व्यक्ति में संपूर्ण प्रजाति के लिए सामान्य है,
क्योंकि सार में उत्पन्न गुण साझा किए जाते हैं
सभी व्यक्तियों द्वारा। प्रत्येक आत्मा का स्थायी अस्तित्व
शरीर की मृत्यु के बाद, अवलोकन के आधार पर और
सपनों और अन्य प्रकार के अनगिनत अनुभव

संचार का अस्तित्व उतना ही निश्चित है जितना कि
एक ऐसे महाद्वीप का जहाँ हम कभी नहीं गए।
हमारे साथ एक रिश्ता, क्योंकि हमारी प्रार्थनाएँ उन तक पहुँचती हैं
और बदले में हमें उनका आशीर्वाद मिलता है।
यह माना जा सकता है कि प्रत्येक का एक अनिवार्य पहलू
शारीरिक मृत्यु के बाद व्यक्ति का अस्तित्व होता है: उसकी आत्मा।

चूँकि आत्मा एक सरल एकात्मक इकाई है, इसलिए यह
मिश्रित भौतिक चीजों की तरह विघटन या विघटन के अधीन। जीवन
बहुलता के भीतर एकता का एक रूप सुनिश्चित करता है और एक प्रकार
की स्थायित्व का कारण बनता है। दूसरे शब्दों में, एकता और स्थायित्व
एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।
आत्मा के लिए आवश्यक, जिससे वे फैल गए
बहुलता.

आत्मा की नश्वरता या तो निम्न कारणों से होगी
इसका विघटन और विघटन या इसका विनाश। पहला विकल्प असंभव
है, क्योंकि आत्मा का सार सरल एकात्मक है। दूसरा विकल्प

यह भी असंभव है, क्योंकि यह पूर्णतया सत्य के विपरीत है।
परम उदार भगवान की असीम दया। इसके अतिरिक्त,
उनकी असीम उदारता ने उन्हें ऐसा करने की अनुमति नहीं दी
मानव आत्मा को उस अस्तित्व के आशीर्वाद से वंचित किया जाना चाहिए जो
परमेश्वर ने उसे प्रदान किया है, क्योंकि वह उत्कटता से
वह इस आशीर्वाद की इच्छा रखता है और इसके योग्य है।

तीसरा स्रोत: आत्मा एक जीवित, सचेतन,
प्रकाश देने वाली इकाई; एक व्यापक कानून या कॉम-

ईश्वर का मानव बाह्य अस्तित्व से सुसज्जित है और

सार्वभौमिकता प्राप्त करने की क्षमता है। यहां तक कि प्राकृतिक नियम, जो आत्मा की तुलना में काफी कमजोर हैं, उनमें भी स्थिरता और स्थायित्व है,

आत्मा द्वारा सन्निहित कानून की तो बात ही छोड़िए। सभी प्रकार अस्तित्व का, यद्यपि परिवर्तन के अधीन,

एक स्थायी आयाम जो अपरिवर्तित रहता है

जीवन के सभी चरणों में। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति एक

व्यक्ति और उसकी व्यापक प्रकृति, सार्वभौमिक चेतना और सर्वव्यापी कल्पना के कारण, एक प्रजाति की तरह। एक कानून जो संचालित होता है

मानवता पर यह प्रभाव व्यक्ति पर भी लागू होता है।

महान सृष्टिकर्ता ने हमें उत्कृष्ट प्रकृति प्रदान की है और हमें व्यापक बनाया है

दर्पण जिसके माध्यम से उनके नाम और गुण

प्रतिबिंबित होते हैं। उन्होंने हम पर एक सार्वभौमिक कर्तव्य आरोपित किया है

पूजा की। इसे देखते हुए, प्रत्येक व्यक्ति की आध्यात्मिक वास्तविकता ईश्वरीय अनुमति से हमेशा जीवित रहती है, भले ही उसका रूप अनगिनत परिवर्तनों से गुज़रता हो

बदलता है। इस प्रकार मानव आत्मा, जो कि

हमारा चेतन, जीवित तत्व शाश्वत है और हमेशा से रहा है

ऐसा परमेश्वर की आज्ञा और अनुमति से हुआ।

चौथा स्रोत: प्रकृति के दैवीय नियम

आत्मा को शांति दो, क्योंकि वे भी परमेश्वर की दुनिया के हैं

ईश्वरीय इच्छा और आदेश। हालाँकि, वे संचालित होते हैं-

उन श्रेणियों पर खाया जिनमें बोधगम्यता नहीं है
अस्तित्व। जब हम इन नियमों का विश्लेषण करते हैं, तो हम देखते हैं
यदि उन्हें बाहरी अधिकार दिए गए होते तो वे स्वयं श्रेणियों की आत्माएं होतीं

अस्तित्व। चूँकि वे स्थायी और अपरिवर्तनीय हैं,
उनकी एकता किसी भी परिवर्तन या रूपांतरण से प्रभावित नहीं होती है। एक मृत
अंजीर के पेड़ के बीज में अभी भी मौजूद है
इसके निर्माण से संबंधित स्थायी, आत्मा जैसा कानून।

चूँकि कमज़ोर और साधारण आदेशात्मक कानून हैं
स्थायित्व और निरन्तरता से जुड़ा हुआ,
मानवीय भावना को स्थायित्व से जोड़ा जाना चाहिए और
अमरता और अनंत काल। इसके अनुसार: आत्मा-यह मेरे प्रभु की आज्ञा है (17:85),
आत्मा है
की दुनिया से एक सचेत और जीवित कानून
ईश्वरीय आदेश और बाह्य शक्तियों से संपन्न किया गया है
अनन्त शक्ति द्वारा अचेतन अस्तित्व।
इच्छा के दिव्य गुण से जारी होने वाले कानून
और ईश्वरीय आदेश की दुनिया स्थायी है, आत्मा ऐसी स्थायित्व के और भी अधिक
योग्य है,
क्योंकि यह एक ही स्रोत से आता है और इसका
जीवन के अतिरिक्त गुण और एक बाहरी वास्तविकता का होना। सचेत होने का मतलब
है कि यह अधिक है
अन्य कानूनों की तुलना में उत्कृष्ट और शक्तिशाली; जीवन युक्त

इसका मतलब है कि यह अधिक स्थायी और मूल्यवान है
उन्हें।

दूसरा मूल सिद्धांत: एक शाश्वत विश्व

खुशी जरूरी है, और महाप्रतापी भी ऐसा कर सकते हैं
इसे बनाएँ। हमारे ब्रह्मांड का विनाश और

साथ ही हर चीज का पुनरुत्थान संभव है
और घटित होगा। निम्नलिखित टिप्पणियाँ सभी को हटा देती हैं
पुनरुत्थान के विषय में संदेह, तथा निम्नलिखित 10 बिंदु अनन्त सुखमय विश्व के
उद्देश्य और आवश्यक कारण की व्याख्या करते हैं:

पहला बिंदु: सृष्टि एक परिपूर्ण सामंजस्य और एक उद्देश्यपूर्ण व्यवस्था प्रदर्शित
करती है, और इसका हर पहलू एक दूसरे से जुड़ा हुआ है।
ब्रह्माण्ड इच्छाशक्ति और संकेतों के संकेत दिखाता है
किसी उद्देश्य का। प्रत्येक वस्तु और घटना, इरादे में बुद्धि और विकल्प को न पहचान
पाना असंभव है
और होगा, और प्रत्येक रचना में के माध्यम से
इसके फलों या परिणामों की गवाही। यदि सृष्टि न होती
इसका उद्देश्य शाश्वत खुशी, सद्भाव पैदा करना है
और व्यवस्था एक धोखा होगी। इसके अलावा, सभी अर्थ, संबंध और कनेक्शन
(व्यवस्था की भावना)
कुछ भी नहीं होगा, केवल शाश्वत खुशी होगी
इस व्यवस्था को स्थापित करने का कारण बनता है.

दूसरा बिन्दु: ब्रह्माण्ड की रचना दर्शाती है
पूर्ण बुद्धि। दिव्य बुद्धि, प्रतिनिधित्व
अनन्त अनुग्रह का, अनन्त के आगमन की घोषणा करता है

पूरे ब्रह्मांड में लाभ और उद्देश्यों को देखने की भाषा के माध्यम से खुशी। अगर वहाँ है
यदि शाश्वत सुख न होता, तो ब्रह्माण्ड में पाए जाने वाले सभी लाभ और उद्देश्य नष्ट हो जाते।
अस्वीकृत।

तीसरा बिंदु: मानव बुद्धि, ज्ञान, अनुभव और निगमनात्मक तर्क बताते हैं कि
सृष्टि में कुछ भी अनावश्यक या व्यर्थ नहीं होता।
यह शाश्वत खुशी के अस्तित्व का संकेत देता है।
ब्रह्माण्ड का राजसी निर्माता सर्वोत्तम को चुनता है
और सृष्टि का सबसे आसान तरीका है, और कई भागों में बांटता है
प्रत्येक प्राणी के प्रति कर्तव्य और उद्देश्य, चाहे वह कोई भी हो
यह कितना भी महत्वहीन क्यों न लगे।
व्यर्थ कुछ भी नहीं, शाश्वत होना चाहिए
खुशी, क्योंकि शाश्वत अस्तित्वहीनता उसे ऐसा बना देगी
सब कुछ व्यर्थ और बेकार। बर्बादी का अभाव
सृष्टि में, विशेष रूप से मानवता में, यह प्रदर्शित होता है
कि हमारी अनगिनत आध्यात्मिक क्षमताएं, असीम
आकांक्षाएं और विचार, और झुकाव कभी नहीं होंगे
बर्बाद हो जाना। पूर्णता की ओर हमारा मूल झुकाव पूर्णता के अस्तित्व को इंगित करता है, और हमारी इच्छा
क्योंकि खुशी यह बताती है कि हम किस्मत में हैं
शाश्वत सुख। यदि ऐसा न होता, तो हमारी सच्ची प्रकृति को बनाने वाली सभी बुनियादी आध्यात्मिक विशेषताएँ और उत्कृष्ट आकांक्षाएँ बेकार और निरर्थक हो जातीं।

चौथा बिन्दु: दिन और रात का परिवर्तन,
साथ ही वसंत और सर्दियों, वायुमंडलीय परिवर्तन,
हमारे शरीर का वार्षिक नवीकरण, और हमारी जागृति और
हर सुबह नींद के बाद उठना सभी एक पूर्ण उत्थान और नवीनीकरण
का संकेत देते हैं। सेकंड एक मिनट का पूर्वानुमान लगाते हैं,
एक मिनट एक घंटे की भविष्यवाणी करता है, और एक घंटा
एक दिन। भगवान की महान घड़ी-पृथ्वी-के डायल इशारा करते हैं,
उत्तराधिकार में, दिन, वर्ष, हमारे जीवनकाल, और
वे युग जिनसे दुनिया गुज़रती है। जैसे-जैसे वे
रात के बाद सुबह और सर्दी के बाद वसंत दिखाओ,
वे बताते हैं कि पुनरुत्थान की सुबह
सृष्टि की मृत्यु के बाद होगा।

एक व्यक्ति के जीवन में कई चक्र होते हैं
एक तरह की मृत्यु और पुनरुत्थान के रूप में माना जाता है (उदाहरण के लिए,
दैनिक, मौसमी और वार्षिक परिवर्तन; सोने और
प्रकृति की जागृति, तथा विभिन्न पुनरुत्थान और नवीनीकरण)।
हर बसंत में पुनरुत्थान अंतिम का वादा है
पुनरुत्थान, क्योंकि उस मौसम में अनगिनत प्रकार के लोग
पुनरुत्थान की घटनाएँ जानवरों और पौधों में घटित होती हैं।
इस प्रकार सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता हमें याद दिलाता है
पुनरुत्थान आने वाला है।

सभी लोग मूल्य और व्यापकता में किसी भी अन्य सजीव प्रजाति
के बराबर हैं, क्योंकि
उनकी बुद्धि के प्रकाश ने उन्हें व्यापक आकांक्षाएं और विचार प्रदान
किए हैं

अतीत और भविष्य। अन्य सभी प्रजातियों में, एक व्यक्ति की प्रकृति विशेष होती है, उसका मूल्य व्यक्तिगत होता है,
इसका दृष्टिकोण सीमित है, इसके गुण सीमित हैं, और
उसका सुख और दुख तात्कालिक है।
हालाँकि, प्राणियों का स्वभाव उत्कृष्ट होता है और
सबसे बड़ा मूल्य, असीम पूर्णता, और अधिक स्थायी आध्यात्मिक सुख और दर्द। इसे देखते हुए,
अन्य प्रजातियों द्वारा अनुभव किए जाने वाले पुनरुत्थान के प्रकार
सुझाव है कि प्रत्येक मनुष्य को न्याय के दिन पूरी तरह से पुनर्जीवित किया जाएगा।

पांचवां बिंदु: मानवता असीमित संभावनाओं से संपन्न है जो असीमित क्षमताओं में विकसित होती हैं। ये, बदले में, अनगिनत प्रवृत्तियों को जन्म देती हैं जो असीमित इच्छाएं उत्पन्न करती हैं, जो कि असीमित इच्छाएं हैं।

अनंत विचारों और अवधारणाओं का स्रोत।
जैसा कि विद्वानों द्वारा देखा और पुष्टि की गई है
गहन ज्ञान, एक के अस्तित्व का संकेत देते हैं
इस भौतिकता से परे अनन्त सुख की दुनिया
शाश्वत सुख की ओर हमारा सहज झुकाव हमें यह विश्वास दिलाता है कि ऐसी दुनिया अवश्य ही होगी।
स्थापित।

छठा बिन्दु: ईश्वर की सर्वव्यापी दया
ब्रह्माण्ड के सर्व-दयालु निर्माता को एक विश्व की आवश्यकता है
अनन्त सुख की प्राप्ति। यदि यह सुख न होता, तो मानवता के लिए ईश्वर की मुख्य कृपा, सभी लोग

अनंत अलगाव पर विलाप करेंगे,
उपकार के कार्य प्रतिशोध में बदल जाएंगे, और दैवीय
करुणा नकार दी जाएगी। लेकिन ईश्वरीय दया
संपूर्ण सृष्टि में पाया जाता है और अधिक स्पष्ट है
सूर्य से भी अधिक चमकदार। सूर्य की तीन अभिव्यक्तियों पर गौर करें

दिव्य करुणा: प्रेम, स्नेह और बुद्धि।
यदि मानव जीवन का परिणाम अनंत काल के लिए अलग होना है
बिछड़ने की अंतहीन पीड़ा, वह दयालु प्रेम
सबसे बड़ी पीड़ा में बदल जाओ, स्नेह एक
सबसे दर्दनाक बीमारी, और प्रकाश देने वाली बुद्धि
एक अप्रतिबंधित बुराई में। हालाँकि, दिव्य करुणा (क्योंकि यह करुणा है) कभी भी पीड़ा नहीं पहुँचाती
सच्चे प्यार पर शाश्वत अलगाव का।

सातवां बिंदु: सभी ज्ञात सुखदायी अनुभव, सुन्दरता, परिपूर्णता, आकर्षण, उत्कट इच्छाएं,
लालसाएँ और करुणा की भावनाएँ आध्यात्मिक अभिव्यक्तियाँ और राजसी की अभिव्यक्तियाँ हैं
सृष्टिकर्ता की कृपा, दया और उदारता
बुद्धि को ज्ञात है। चूँकि एक सत्य है और

इस ब्रह्मांड में एक वास्तविकता है, सच्ची दया है; चूँकि
वहाँ सच्ची दया है, वहाँ शाश्वत खुशी होगी।

आठवां बिंदु: हमारा विवेक (चेतन प्रकृति)
अनंत सुख का संकेत देता है। जो कोई इसे सुनता है
इसे बार-बार अनंत काल कहते हुए सुनता है।
अगर हमें पूरा ब्रह्मांड दे दिया जाए तो हम

अनंत काल की कमी के लिए क्षतिपूर्ति नहीं की जा सकती, क्योंकि
हममें एक जन्मजात लालसा है और हम इसके लिए बनाए गए हैं
इस प्रकार शाश्वत के प्रति हमारा स्वाभाविक झुकाव
खुशी एक वस्तुनिष्ठ वास्तविकता से आती है - अनंत काल का अस्तित्व
और अनंत काल के लिए हमारी इच्छा।

नौवां बिन्दु: पैगम्बर, जिन्होंने सच बोला
और जिनके वचन सदियों से पुष्ट होते आ रहे हैं, जिन्होंने अनन्त जीवन
और अनन्त सुख के आगमन का उपदेश दिया और वादा किया।

संदेश लगभग उतना ही केंद्रित था
ईश्वरीय एकता के रूप में पुनरुत्थान,
सभी पैगम्बरों और संतों की सर्वसम्मति।

दसवां बिन्दु: कुरान, 40 पहलुओं वाला एक अद्वितीय चमत्कार,
पुनरुत्थान की घोषणा करता है
और अनंत खुशी का आगमन। यह पर्दा उठाता है
सृष्टि के रहस्य को उजागर करता है और पुनरुत्थान के लिए अनगिनत
तर्कसंगत तर्क प्रस्तुत करता है। जैसे कि:
उसने तुमको चरणों में पैदा किया (71:14) और कह दो, "वह जो
उन्हें पहली बार उत्पन्न किया है उन्हें लाना होगा
फिर से जीवन के लिए" (36:79) में एक तुलना शामिल है और
और, तुम्हारा रब अपने बन्दों पर अत्याचार नहीं करता (41:46) यह अल्लाह के न्याय की
ओर संकेत करता है। ये हमें पुनरुत्थान और सदैव की ओर दृष्टि प्रदान करते हैं।

स्थायी खुशी। मैंने इसके प्रमाणों पर चर्चा की है-

मेरे ग्रंथ नुक्ता (बिंदु) में इन छंदों में

निम्नलिखित नुसार:

विकास की प्रक्रिया के दौरान प्रत्येक मनुष्य व्यवस्थित एवं व्यवस्थित परिवर्तनों से गुजरता है।
प्रत्येक शुक्राणु, रक्त का थक्का, ऊतक, हड्डी और मांस
(चरणों में) एक अन्य (विशिष्ट) मानव-आकार वाले प्राणी के रूप में विकसित होने के लिए, सटीक सिद्धांतों का पालन करना होगा,
विकास के क्रमिक चरणों के लिए विशेष,
उद्देश्य, इच्छाशक्ति और बुद्धिमता के प्रयोग को इंगित करते हैं।
वह सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता, जो मानव का सृजन करता है
इन चरणों के द्वारा, शरीर स्वयं को नवीनीकृत भी करता है
हर साल। इस नवीनीकरण के लिए प्रतिस्थापन की आवश्यकता है
विघटित कोशिकाओं का निर्माण नई कोशिकाओं द्वारा किया जाता है
सर्व-प्रबन्धक के अनुसार भोजन का प्रावधान
प्रत्येक शारीरिक भाग की आवश्यकताओं के अनुसार।

यदि हम नवीनीकरण या मरम्मत के लिए उपयोग किए जाने वाले परमाणुओं का अवलोकन करें
शरीर, हम उन्हें एक साथ आते हुए देखते हैं
वायुमंडल, मिट्टी और पानी। उनकी गतियाँ इतनी हैं
ऐसा लगता है कि उन्हें किसी निश्चित स्थान पर जाने के लिए मार्चिंग ऑर्डर मिले हैं। इसके अलावा, उनके
जाने का तरीका वास्तविक के संचालन को इंगित करता है
एजेंट। तत्वों की निर्जीव दुनिया से शुरू
और रासायनिक पदार्थों के साथ मिलकर वे वनस्पतियों और जानवरों की सजीव दुनिया में प्रवेश करते हैं।
परिभाषा के अनुरूप जीविका के रूप में विकसित किया गया

प्रारंभिक सिद्धांत, वे भोजन के रूप में शरीर में प्रवेश करते हैं।
विभिन्न "रसोई" में "पकाया" जाता है और रूपांतरित किया जाता है और कुछ "फ़िल्टर" से गुज़ारा जाता है, वे
शरीर के अंगों में आवश्यकतानुसार वितरित किया जाता है।48

ये सभी प्रक्रियाएं नियमानुसार होती हैं
सर्वशक्तिमान ईश्वर के नियमों के साथ और उसके बिना
अंधे संयोग, अराजक संयोग, बहरे स्वभाव और अचेतन कारणों का हस्तक्षेप। वे

उत्तम ज्ञान, बुद्धि और अंतर्दृष्टि प्रदर्शित करें।
किसी भी अवस्था में एक परमाणु शरीर की कोशिका में प्रवेश करता है
आस-पास के तत्व से, यह एक व्यवस्थित ढंग से ऐसा करता है और उस चरण के निर्दिष्ट के अनुरूप होता है
कानून। जिस भी स्तर तक यह यात्रा करता है, वह ऐसे कदम उठाता है
इस प्रकार कि यह स्पष्ट रूप से एक सर्वज्ञ चालक के आदेश पर आगे बढ़ता हुआ प्रतीत हो। अपने लक्ष्य और उद्देश्य से कभी विचलित न होते हुए, यह धीरे-धीरे आगे बढ़ता है
एक चरण से दूसरे चरण तक और एक स्तर से दूसरे स्तर तक, जब तक
अपने पालनहार की आज्ञा पाकर वह अपनी उचित स्थिति पर पहुँच जाता है। वहाँ पहुँचकर वह स्वयं को स्थापित कर लेता है और
काम करना शुरू कर देता है.

भोजन की व्यवस्था और कोशिकाओं तक उसका पहुंचना
जिसके लिए यह नियत है ईश्वरीय इच्छा दिखाएं और
ईश्वरीय निश्चय। यह प्रक्रिया इतनी उत्तम है'

---

[48] पाचन में शामिल अंगों और प्रणालियों का संदर्भ,
साँस लेना, और खाए गए पदार्थ को छानना। (ट्र.)

प्रत्येक कण जिस क्रम और व्यवस्था में प्रतीत होता है
अपने अंतिम गंतव्य को अपने "अग्र-" पर लिखा हुआ देखना
क्या यह कल्पना की जा सकती है कि राजसी निर्माता,
जो असीम शक्ति और सर्वव्यापी बुद्धि के साथ सृष्टि पर प्रभुत्व रखते हैं,

पदार्थ के कणों को ग्रहों तक पहुंचाता है, और उन्हें घुमाता है
क्या व्यवस्था और संतुलन, सृष्टि को पुनर्जीवित करने में विफल हो सकता है?
कुरान की आयतें इस पुनरुत्थान के प्रति हमारी आँखें खोलती हैं
हमारी पहली रचना से इसकी तुलना:

> कह दो, "वही है जिसने उनको पहली बार उत्पन्न किया
> (निश्चित उद्देश्य के साथ) उन्हें पुनः जीवित कर देंगे
> (आख़िरत में)।" (36:79)
>
> वह सृष्टि की शुरुआत करता है, फिर उसे वापस लाता है,
> और यह उसके लिए आसान है। (30:27)

एक बटालियन के सैनिक फिर एक साथ आए
जब वे आराम करने के लिए बिखर गए थे, उससे कहीं अधिक तेजी से
बिगुल बजाना। ऐसा करतब उतना ही आसान और संभव है
शरीर के आवश्यक कणों के लिए, जिन्होंने अपने सांसारिक जीवन के दौरान परस्पर घनिष्ठ संबंध और परिचय स्थापित किया था, जब फ़रिश्ता इसराफ़िल फूँकता है
उसकी तुरही। वास्तव में, वे ऐसा अधिक आसानी से कर सकते हैं
पहली रचना की तुलना में। सभी घटक नहीं
भागों का भी मौजूद होना ज़रूरी है; बल्कि, मूलभूत भाग और आवश्यक कण, जो कि

नाभिक और बीज और जो एक भविष्यवाणी परंपरा

जिसे "पूंछ की जड़" (ओएस कोक्सीक्स) कहते हैं, वह दूसरी रचना के आधार और नींव के लिए पर्याप्त हो सकता है।

सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता मानव जाति का पुनर्निर्माण करेगा

इस आधार पर शरीर.

निम्नलिखित अनुभाग सत्य का सारांश प्रस्तुत करता है न्याय के सादृश्य द्वारा ऐसे श्लोकों में व्यक्त किया गया है जैसे: तुम्हारा रब अपने बन्दों पर अत्याचार नहीं करता (41:46)।

हम देखते हैं कि क्रूर, पापी और अत्याचारी लोग आमतौर पर आरामदायक और शानदार जीवन जीते हैं जीवन जबकि ईश्वरीय, उत्पीड़ित लोग गरीबी में रहते हैं और कठिनाई। मृत्यु उन्हें दोनों के लिए समान बना देती है अपने कर्मों के साथ हमेशा के लिए चले गए होते यदि कोई सर्वोच्च न्यायाधिकरण न होता तो यह निर्विवाद होता। ईश्वरीय बुद्धि और न्याय, जो किसी भी गलत काम को अनदेखा नहीं करते और अन्याय का निषेध करते हैं, के लिए आवश्यक है दण्ड देने के लिए सर्वोच्च न्यायाधिकरण की स्थापना बुराई को इनाम दो और अच्छाई को इनाम दो।

चूँकि यह संसार मानवीय क्षमताओं के सम्पूर्ण विकास के लिए अनुकूल नहीं है, इसलिए हम हमारी किस्मत में एक और दुनिया में आत्मसाक्षात्कार पाने का मौका है। सार व्यापक है और अनंत काल तक बंधा हुआ है। चूंकि हमारी प्रकृति मूल रूप से उत्कृष्ट है, इसलिए हम महत्वपूर्ण कार्य संपन्न करें, चाहे अच्छे हों या बुरे। व्यवस्था और अनुशासन आवश्यक हैं, और हमें इनका पालन करना चाहिए।

हमें खुद को खत्म होने के लिए नहीं छोड़ना चाहिए। नरक हमारे लिए खुले आसमान में

इंतज़ार कर रहा है

मुँह से, और स्वर्ग खुली बाहों से हमारा इंतज़ार कर रहा है।

ऊपर बताए गए दो श्लोकों का अध्ययन करें,
जिसमें पुनरुत्थान के लिए तर्कसंगत तर्क शामिल हैं,
और देखिये कि अनन्त जीवन में कितना महान सत्य निहित है।
आप जिन दस बिंदुओं का अनुसरण कर रहे हैं, वे यह भी बताते हैं
आपको एक स्पष्ट अंतर्दृष्टि और मजबूत सबूत
पुनरुत्थान। इसके अलावा, महान सृष्टिकर्ता का
सुंदर नाम (जैसे, सर्व-बुद्धिमान, सर्व-दयालु,
सर्व-रक्षक, और सर्व-न्यायप्रिय) वास्तव में यह अपेक्षा करते हैं कि
पुनरुत्थान होना चाहिए, अनंत जीवन होना चाहिए
आओ, और शाश्वत खुशी का एहसास हो। नतीजतन, पुनरुत्थान की
आवश्यकता
और आवश्यकता इतनी प्रबल है कि कोई जगह नहीं है
संदेह या अनिश्चितता के लिए.

तीसरा मूलभूत सिद्धांत: जैसे पुनरुत्थान का

आवश्यकता और अपेक्षा निश्चित है, इसलिए एक
जो इसे लाना चाहे, वह ऐसा कर सकता है। चूँकि उसके पास हर चीज़ पर
शक्ति है, इसलिए उसकी शक्ति के संबंध में सब कुछ एक जैसा है। वह
वसंत को फूल की तरह आसानी से बनाता है। वह इतना शक्तिशाली है कि
सृष्टि में बहुत कुछ है।
उसकी शक्ति और महिमा का साक्षी। यह देखते हुए, कैसे
क्या आपको संदेह है कि वह मरे हुओं को जीवित कर सकता है?
अंतिम निर्णय? उसकी शक्ति इतनी महान है कि वह-

प्रत्येक वर्ष एक नया वातावरण अस्तित्व में आता है

वह हर साल ब्रह्मांड को नया बनाता है और हर दिन एक नई दुनिया बनाता है। वह कई क्षणभंगुर दुनियाओं को सदियों के रूप में समय की डोरी पर लटकाता है,

एक पूर्ण, निश्चित उद्देश्य के लिए वर्षों या दिन भी बीत जाते हैं। वह अपनी बुद्धि की पूर्णता और
पृथ्वी को वस्त्र पहनाकर उनकी कला की सुन्दरता
वसंत को ऐसे देखना मानो वह एक फूल हो, और फिर उसे पुनरुत्थान के अनगिनत उदाहरणों से सजाना और अलंकृत करना।

जब वह ऐसा कर सकता है तो तुम कैसे संदेह कर सकते हो?
पुनरुत्थान लाने की उनकी क्षमता और
इस दुनिया को किसी और से बदल दो? कविता: तुम्हारा
सृष्टि और तुम्हारा उठाया जाना एक दूसरे के समान है
एक आत्मा का सृजन और उत्थान (31:28)
घोषणा करता है कि सर्वशक्तिमान इतना शक्तिशाली है कि उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है, कि सृष्टि का निर्माण करना
असंख्य व्यक्तियों का समूह बनाना उतना ही आसान है जितना कि एक व्यक्ति का समूह बनाना।

दिव्य शक्ति दिव्य सार से आती है

यह स्वभाव से ही है, और इसलिए इसमें कोई अक्षमता नहीं हो सकती
इससे जुड़ा हुआ है। चूंकि यह अस्तित्व के आंतरिक, अमूर्त आयाम को संचालित करता है, इसलिए कोई भी बाधा इसके संचालन में बाधा नहीं डाल सकती। वस्तुओं के साथ इसके संबंध में,
दैवी शक्ति प्रकृति के दैवी नियमों से मिलती जुलती है,
जो कहते हैं कि एक सार्वभौमिक चीज़ बनाना उतना ही आसान है

किसी विशेष चीज़ को बनाने के रूप में। निम्नलिखित तर्कों पर विचार करें: पहला तर्क:

शाश्वत शक्ति आवश्यक है

दिव्य सार, क्योंकि यह दिव्यता का एक अनिवार्य गुण है। वे एक मामले में समान हैं:

कोई भी अक्षमता असंभव है, क्योंकि इसके लिए अनंत में दो विपरीत तत्वों का अस्तित्व पूर्व-मान लिया जाएगा।

अस्तित्व। चूँकि यह असंभव है, और चूँकि ईश्वरीय सार में नपुंसकता नहीं हो सकती, इसलिए कुछ भी ईश्वरीय शक्ति में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। चूँकि नपुंसकता ईश्वरीय शक्ति के साथ शामिल नहीं हो सकती, इसलिए यह

किसी चीज़ की ऐसी डिग्री के लिए कोई डिग्री नहीं हो सकती

अस्तित्व केवल विपरीतों के हस्तक्षेप से ही संभव है। तापमान की डिग्री बदलती रहती है

ठंड के हस्तक्षेप के कारण सुंदरता की डिग्री मौजूद है और कुरूपता के हस्तक्षेप के कारण सुंदरता की डिग्री मौजूद है। यह है

ब्रह्मांड में सभी गुणों के लिए सत्य है। आकस्मिक चीजें

और प्राणियों में विपरीतताएं होती हैं, क्योंकि उनका अस्तित्व नहीं होता

वे मूलतः स्वयं के हैं और उनके अस्तित्व के लिए कोई भी शुद्ध गुण आवश्यक नहीं है।

आकस्मिकताओं में डिग्री और स्नातक शामिल हैं,

यह परिवर्तन और रूपांतरण के अधीन है।

चूँकि शाश्वत दिव्य शक्ति में कोई डिग्री नहीं होती,

इसके लिए कणों या आकाशगंगाओं को बनाना या अस्तित्व में लाना भी उतना ही आसान है।

इसके लिए जीवन उतना ही आसान है जितना एक व्यक्ति को पुनर्जीवित करना, और वसंत का निर्माण करना उतना ही आसान है जितना एक फूल का निर्माण करना। यदि सृजन या पुनरुत्थान को कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो एक फूल का निर्माण करना वसंत के निर्माण जितना ही कठिन होगा।
लेकिन यदि सृष्टिकर्ता एक ही है, तो प्रत्येक वस्तु का निर्माण करना एक वस्तु के निर्माण जितना ही आसान है।

दूसरा तर्क: ईश्वरीय शक्ति कार्य करती है
चीज़ों का आंतरिक, आध्यात्मिक आयाम (आध्यात्मिक-भौतिक साम्राज्य)। दर्पण की तरह, ब्रह्मांड में भी
दो पक्ष: भौतिक (दर्पण के रंगीन चेहरे जैसा) और आध्यात्मिक (दर्पण के चमकते चेहरे जैसा और सृष्टिकर्ता की ओर देखना)।

भौतिक पक्ष में विपरीतताएं विद्यमान हैं, जो सुन्दरता और कुरूपता, अच्छाई और बुराई, बड़ाई और बुराई को व्यक्त करती हैं।
छोटा, कठिन और आसान। का राजसी निर्माता
ब्रह्माण्ड उसकी शक्ति के कार्यों को पर्दे के पीछे छिपा देता है
देखे गए कारणों का ताकि जो लोग समझ की कमी रखते हैं वे उसकी शक्ति के संबंध पर ध्यान न दें
साधारण बातें उनके लिए अशोभनीय हैं। उनके सम्मान और
महामहिम को इसकी आवश्यकता है। कारणों का कोई वास्तविक प्रभाव नहीं होता
सृष्टि, क्योंकि यह उसकी एकता का उल्लंघन होगा और
एकता। आध्यात्मिक दुनिया, बिल्कुल स्पष्ट
और पारदर्शी, भौतिक दुनिया का कोई भी हिस्सा इसमें शामिल नहीं है
स्थूलता। चूँकि ईश्वरीय शक्ति सीधे वहाँ कार्य करती है,
कारण और प्रभाव का कोई प्रभाव नहीं होता, बाधाएं नहीं हो सकतीं

हस्तक्षेप करना, तथा एक कण का निर्माण करना सूर्य के निर्माण जितना ही आसान है।

निष्कर्षतः, ईश्वरीय शक्ति सरल, अनंत,
और ईश्वरीय “सार” का एक अनिवार्य गुण।
यह शक्ति सीधे उस क्षेत्र में कार्य करती है जो स्पष्ट है,
परिष्कृत और पारदर्शी, जिसमें विरोध करने या हस्तक्षेप करने के लिए कुछ भी नहीं है। इस प्रकार कोई भी ऐसा नहीं है जो
समुदाय और व्यक्ति, विशेष और सार्वभौमिक या बड़ा और छोटा के बीच का अंतर।

तीसरा तर्क: दैवीय शक्ति इस प्रकार कार्य करती है
एक ऐसा नियम जिसका हर चीज़ के साथ एक जैसा संबंध है। हम इस सूक्ष्म मामले को कई तुलनाओं या संबंधों के माध्यम से समझने योग्य बनाएँगे। पारदर्शिता, पारस्परिकता, संतुलन, व्यवस्थितता, अमूर्तता और आज्ञाकारिता ब्रह्मांड में ऐसी घटनाएँ हैं जो कई लोगों को कुछ के बराबर बनाती हैं,

और बड़ा छोटे के बराबर है।

पहला संबंध: पारदर्शिता। वही सूरज
समुद्र की सतह पर परावर्तित होती है और एक बूँद
पानी। अगर पृथ्वी कांच के टुकड़ों से बनी होती, तो प्रत्येक कांच के टुकड़े
कोई भी बिना किसी बाधा के सूर्य को परावर्तित कर सकता है और
एक दूसरे के साथ हस्तक्षेप किए बिना। अगर सूरज
वे एक सचेतन स्वतंत्र प्राणी थे, जिनमें इच्छाशक्ति थी, जो अपना प्रकाश स्वयं प्रतिबिंबित कर सकते थे, प्रकाश दे सकते थे

एक कण में या पूरे पर प्रतिबिंबित होना
पृथ्वी पर भी यह उतना ही आसान होगा।

दूसरा संबंध: पारस्परिकता। अगर हम एकमत हैं
एक बड़े वृत्त के मध्य में एक जलती हुई मोमबत्ती के साथ
लोग, जिनमें से प्रत्येक एक दर्पण पकड़े हुए है, प्रत्येक
दर्पण बिना किसी प्रभाव के वही प्रतिबिंब रखेगा
एक दूसरे को बाधा पहुंचाना।

तीसरा संबंध: संतुलन। अगर हम एक जोड़ी का वजन करें
प्रत्येक वस्तु को मापने वाले संतुलन के साथ चीजों का
पूर्ण परिशुद्धता के साथ, किसी भी अतिरिक्त बल को लगाया गया
किसी भी तराजू का संतुलन बिगड़ जाएगा।

चौथा संबंध: व्यवस्था। हम दिशा तय कर सकते हैं
एक विशाल जहाज को एक छोटे खिलौने की तरह आसानी से, सभी भागों के लिए
इसकी व्यवस्थित प्रणाली के सभी तत्व आपस में जुड़े हुए हैं।

पांचवां संबंध: अमूर्तता या अभौतिकता।
किसी जीवित प्राणी के आकार का उसके वास्तविक स्वरूप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
सार या प्रकृति, क्योंकि ये अमूर्त और अवास्तविक विशेषताएं प्रत्येक प्राणी के लिए समान हैं।
व्यक्तिगत रूपों में अंतर के कारण नहीं होता
भ्रम। उदाहरण के लिए, एक छोटी मछली का भी यही हाल है
सार या प्रकृति एक बेसकिंग-शार्क के रूप में (दोनों मछली हैं),
और एक सूक्ष्म जीव का सार एक ही है
गैंडा (दोनों जीवित जानवर हैं)।

छठा संबंध: आज्ञाकारिता। एक कमांडर
एक अकेले सैनिक द्वारा सेना को आसानी से चलाया जा सकता है
उसे मार्च करने का आदेश देते हुए। आज्ञाकारिता की वास्तविकता
ब्रह्माण्ड इस प्रकार है: सब कुछ झुकता है
अपनी पूर्णता की ओर झुकाव बढ़ता है।
एक ज़रूरत में, एक बढ़ी हुई ज़रूरत एक तड़प बन जाती है,
और बढ़ी हुई लालसा आकर्षण बन जाती है।
झुकाव, आवश्यकता, तड़प और आकर्षण इसी प्रकार कार्य करते हैं
दिव्य कानून और नेतृत्व करने के लिए डिज़ाइन किए गए तरीकों से काम करते हैं
चीज़ों को उनकी पूर्णता का एहसास कराने के लिए। सृष्टि का अंतिम,
पूर्ण पूर्णता तब होती है जब यह विकसित होती है
पूर्ण अस्तित्व। किसी चीज़ की सापेक्ष पूर्णता है
सापेक्ष अस्तित्व जो अपने सभी को प्रभाव देता है
यही कारण है कि ब्रह्मांड की आज्ञाकारिता
ईश्वरीय आदेश "हो जाओ" की ओर और वह हो गया (36:82)
कण से भिन्न नहीं है।

सृष्टि इस दिव्य आदेश का पालन करती है, जो सृष्टिकर्ता की शाश्वत इच्छा से, उसी के माध्यम से आता है
झुकाव, आवश्यकता, लालसा और आकर्षण की शक्तियाँ। इन सभी को एक ही ईश्वरीय इच्छा द्वारा सभी प्राणियों पर कार्य करने के लिए प्रेरित किया जाता है। इस शक्ति का उपयोग
आज्ञाकारिता सबसे अच्छी तरह पानी में देखी जाती है, जो टूट जाती है या
यहां तक कि जब उसे स्थिर रहने को कहा जाता है तो वह लोहे को भी तोड़ देता है।

यह देखते हुए कि ये दोषपूर्ण, सीमित, कमजोर और
गैर-रचनात्मक आकस्मिक बल ऐसे प्रभाव प्रदर्शित करते हैं,

सब कुछ समान रूप से ईश्वरीय शक्ति के अधीन है
शक्ति का आदेश। यह शक्ति अनंत है, शाश्वत है,
बिल्कुल सही है, और ब्रह्मांड को अंदर ला सकता है
अस्तित्व को गैर-अस्तित्व से अलग करना। यह भी प्रकट हो सकता है
अपने उन भव्य कार्यों के माध्यम से जो मोहित करते हैं और
हमें चकित कर दें। इसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है।
इन छह कनेक्शनों से कोई निर्णय नहीं लिया जाता
ईश्वरीय शक्ति पर निर्भर रहना, क्योंकि हमारे लिए ऐसा करना असंभव है
इसलिए; बल्कि, वे हमें कुछ समझ पाने में सक्षम बनाते हैं
मामला।

संक्षेप में: दैवीय शक्ति अनंत है, सर्वोच्च सत्ता का एक अपरिहार्य गुण है जो कार्य करता है
आध्यात्मिक क्षेत्र में, जिसमें कोई बाधा या विशिष्टता नहीं है। यह क्षेत्र ईश्वरीय शक्ति के सीधे संपर्क में है, जिसके भीतर किसी भी चीज़ का भौतिक अस्तित्व या गैर-अस्तित्व समान रूप से संभव है। यह सृष्टि के सभी ईश्वरीय नियमों का पालन करता है। इस प्रकार

ईश्वरीय शक्ति सब कुछ समान रूप से बना सकती है
आसानी। उदाहरण के लिए, यह निर्माण को तेज कर सकता है
अंतिम दिन यह एक कीट को जितनी आसानी से पुनर्जीवित कर सकता है
वसंत ऋतु। इसे देखते हुए, दिव्य घोषणा
एक आत्मा के रूप में आपकी रचना और पुनरुत्थान है
सत्य और अप्रतिष्ठित। इससे यह सिद्ध होता है कि एजेंट
कौन ब्रह्माण्ड को नष्ट करेगा और पुनः बनाएगा?
अंतिम दिन ऐसा कर सकते हैं.

चौथा मूल सिद्धांत: पुनरुत्थान के रूप में
ज़रूरी है, जो मरे हुओं को ज़िंदा करेगा, वह कर सकता है
ऐसा करो। पूरी दुनिया इसके संपर्क में है
पुनरुत्थान। यहाँ चार संबंधित अवधारणाएँ हैं:
दुनिया नष्ट हो सकती है, नष्ट हो जाएगी, नष्ट हो जाएगी
दुनिया को परलोक के रूप में फिर से बनाया जा सकता है, और यह होगा
पुनर्जीवित और पुनर्निर्माण किया जाएगा।

पहली बात: सृष्टि की मृत्यु संभव है।
वह जो विकास के नियम के अधीन है
अंतिम लक्ष्य तक विकसित होना ही चाहिए। जो विकसित होता है
अंतिम लक्ष्य का जीवनकाल सीमित होना चाहिए और इसलिए, एक निश्चित
प्राकृतिक लक्ष्य होना चाहिए। जिसका एक निश्चित लक्ष्य हो
अनिवार्य रूप से मर जाता है। मानवता एक सूक्ष्म जगत विषय है
मृत्यु के अधीन; ब्रह्माण्ड को एक वृहद मानव के रूप में माना जा सकता है और इसलिए वह भी मृत्यु के अधीन है।
तदनुसार, यह नष्ट हो जाएगा और पुनर्जीवित हो जाएगा
अंतिम दिन की सुबह। जैसे एक जीवित वृक्ष
(एक लघु ब्रह्मांड) खुद को विनाश से नहीं बचा सकता, "प्राणियों की शाखाएं" बढ़ रही हैं
“सृष्टि का वृक्ष” नष्ट हो जाएगा।

यदि ब्रह्माण्ड को किसी बाह्य शक्ति द्वारा नष्ट नहीं किया जाता
विनाशकारी घटना, शाश्वत इच्छा की अनुमति के साथ, अंततः यह मरना
शुरू हो जाएगा। यहां तक कि वैज्ञानिक भी
यह कहो। कुरान के अनुसार, यह एक देगा
तीखी चीख, और फिर निम्नलिखित बातें घटित होंगी-

कलम: जब सूर्य अंधकारमय हो जाएगा; जब
तारे गिरा दिए जाएँगे; जब पहाड़
गतिमान हो जाएगा (८१:१-३) और जब आकाश
फटा हुआ; जब तारे बिखर जाते हैं; जब
समुद्र उमड़ पड़ता है (82:1-3)।

एक महत्वपूर्ण सूक्ष्म बिंदु: पानी जम जाता है और अपना आवश्यक तरल रूप खो देता है, बर्फ पिघल जाती है और अपनी आवश्यक ठोस अवस्था खो देती है, किसी वस्तु का सार बन जाता है अपने भौतिक रूप की कीमत पर अधिक मजबूत, मोटा भाषा अर्थ व्यक्त करने के लिए उपयुक्त नहीं है, जैसे-जैसे शरीर अधिक ठोस होता जाता है, आत्मा कमजोर होती जाती है, और जैसे-जैसे आत्मा अधिक ठोस होती जाती है, शरीर कमजोर होता जाता है। और अधिक प्रकाशित। इस प्रकार जीवन धीरे-धीरे परिष्कृत होता जाता है ठोस दुनिया में जीवन के बाद के जीवन के पक्ष में। रचनात्मक शक्ति आश्चर्यजनक गतिविधियों के परिणामस्वरूप घने, ठोस और निर्जीव पदार्थों में जीवन फूंकता है, और उस ठोस दुनिया को लाभ के लिए परिष्कृत करता है इसके बाद जीवन के प्रकाश के माध्यम से।

कोई भी सत्य, अपनी कमजोरी के बावजूद, कभी नष्ट नहीं होता। बल्कि, यह भौतिक जगत में एक रूप ग्रहण करता है। जैसे-जैसे यह फलता-फूलता और फैलता है, इसका रूप कमजोर होता जाता है और अधिक परिष्कृत होता जाता है। आध्यात्मिक सत्य जो किसी वस्तु का सार बनाता है, उसके रूप की ताकत के व्युत्क्रमानुपाती होता है। इस प्रकार रूप सघन होता जाता है जैसे-जैसे सत्य कमजोर होता जाता है, और सत्य मजबूत होता जाता है

जैसे-जैसे रूप कमजोर होता जाता है। यह नियम हर उस चीज के लिए समान है जो विकसित और विकसित होती है। इसे देखते हुए, भौतिक-वास्तविक दुनिया, जो एक ऐसा रूप है जिसमें महान सत्य समाहित है

ब्रह्मांड का, राजसी के साथ, बिखर जाएगा

सृष्टिकर्ता की अनुमति से, और अधिक खूबसूरती से पुनर्निर्माण किया जाएगा। एक दिन, जिस दिन पृथ्वी बदल जाएगी

पृथ्वी के अलावा अन्य को (14:48) एहसास होगा, क्योंकि

दुनिया मर सकती है.

दूसरा मामला: दुनिया की अंतिम मृत्यु है

सभी ईश्वर-प्रकट धर्मों द्वारा पुष्टि की गई, सभी शुद्ध और संत व्यक्तियों द्वारा समर्थित, और संकेतित

ब्रह्माण्ड के परिवर्तन, रूपांतरण और

परिवर्तन। इस गेस्ट हाउस के निवासियों का निरंतर प्रतिस्थापन, जिनका सभी का स्वागत किया जाता है और

फिर अपने नियत समय पर चले जाते हैं (मृत्यु के माध्यम से)

ताकि उनकी जगह नए लोगों को लाया जा सके,

इस संसार की मृत्यु का संकेत देता है।

कुरान में मिनट के वर्णन पर गौर करें

ब्रह्मांड के घटक भागों के बीच सटीक अंतर्संबंध। उनके उदात्त और नाजुक पहलुओं पर विचार करें

संगठन को एक प्रणाली में बदलना। यदि कोई आकाशीय पिंड

यदि ब्रह्माण्ड को अपनी धुरी छोड़ने को कहा जाए तो वह

मौत की पीड़ा में फेंक दिया जाएगा। सितारे गिर जाएंगे-

यदि ऐसा होता तो ग्रह बिखर जाते और ध्वनि उत्पन्न होती

विस्फोटित गोले अंतरिक्ष को भर देंगे। पहाड़

गति करने लगेंगे और पृथ्वी चपटी हो जाएगी।
अनन्त शक्ति अगले जीवन को बस कुछ ही समय में लाएगी
इस तरह, और स्वर्ग और नरक के तत्व
एक दूसरे से अलग हो जायेंगे.

तीसरी बात: ब्रह्माण्ड को पुनर्जीवित किया जा सकता है, जैसा कि द्वितीय मूलभूत
सिद्धांत में सिद्ध किया गया है,
ईश्वरीय शक्ति में कोई दोष नहीं है।
इसकी सख्त जरूरत है और यह संभव है। अगर
यह एक मजबूत आवश्यकता है कि कुछ संभव होना चाहिए
घटित होने पर, इसे कुछ ऐसा माना जाता है
घटेगा।

एक और महत्वपूर्ण बात: ब्रह्मांड में जो कुछ घटित होता है उसका गहन परीक्षण करने से पता चलता है कि
इसमें ऐसे विपरीत तत्व हैं जो हर जगह फैल गए हैं
और जड़ हो जाते हैं। उनके संघर्षों के परिणाम
अच्छाई और बुराई, लाभ और हानि, पूर्णता और दोष, प्रकाश और अंधकार, मार्गदर्शन और
गुमराही, विश्वास और अविश्वास, आज्ञाकारिता और
विद्रोह, भय और प्रेम। इस तरह का निरंतर संघर्ष
ब्रह्माण्ड में निरंतर परिवर्तन और रूपांतरण होता रहता है, जिससे कि

एक नई दुनिया के तत्व.

ये विरोधी तत्व अंततः आगे बढ़ेंगे
अनंत काल दो अलग-अलग दिशाओं में और भौतिक रूप में
स्वर्ग और नर्क के रूप में। अनंत दुनिया बनाई जाएगी

इस क्षणभंगुर दुनिया के आवश्यक तत्वों को, जिन्हें स्थायित्व दिया जाएगा। स्वर्ग और नर्क सृष्टि के वृक्ष की दो शाखाओं पर उगने वाले दो विपरीत फल हैं, सृष्टि की श्रृंखला के दो परिणाम, दो कुण्ड जो चीजों और घटनाओं की दो धाराओं से भरे हुए हैं, दो ध्रुव जहाँ प्राणी तरंगों में बहते हैं, और वे स्थान जहाँ दिव्य कृपा और दिव्य क्रोध स्वयं प्रकट होते हैं। जब दिव्य शक्ति ब्रह्मांड को हिलाएगी तो वे अपने विशेष निवासियों से भर जाएँगे।

यह बिंदु महत्वपूर्ण है क्योंकि ईश्वर, जो शाश्वत सर्वज्ञ है और अपनी शाश्वत कृपा और बुद्धि की आवश्यकता के अनुसार, इस दुनिया को एक परीक्षण क्षेत्र के रूप में बनाया है, अपने सुंदर नामों को प्रतिबिंबित करने के लिए एक दर्पण, एक विशाल पृष्ठ जिस पर उसकी नियति और शक्ति की कलम से लिखा जा सकता है। लोगों को उनकी क्षमताओं को विकसित करने और उनकी क्षमताओं को प्रकट करने के लिए यहाँ पर परीक्षण किया जाता है। क्षमताओं के इस उद्भव के कारण ब्रह्मांड में सापेक्ष सत्य प्रकट होते हैं, जो बदले में, राजसी निर्माता के सुंदर नामों को उनके शिलालेखों को प्रकट करने और ब्रह्मांड को अनंत-प्रार्थना-के-लिए-सभी का संदेश बनाने का कारण बनता है। इसके अलावा, यह परीक्षण उत्कृष्ट आत्माओं के हीरे जैसे सार को आधार के कोयले जैसे पदार्थ से अलग करता है

वाले.

अपने स्वयं के उत्कृष्ट उद्देश्यों के लिए, परमेश्वर ने चाहा
वह सृजन, साथ ही उसका परिवर्तन और आशोधन,
होना चाहिए। उसने विपरीतों को एक दूसरे के सामने खड़ा कर दिया
दूसरा - लाभ के साथ हानि, बुराई के साथ
अच्छाई को सुंदरता से और कुरूपता को सुंदरता से मिलाना।
आटे की तरह एक साथ, उसने ब्रह्मांड को अधीन कर दिया
परिवर्तन का नियम और पूर्णता का सिद्धांत। एक दिन यह परीक्षण और
परीक्षा समाप्त हो जाएगी, और
ईश्वरीय नियति की कलम ने जो लिखा होगा,
लिखना होगा। दैवी शक्ति ने अपना काम पूरा कर लिया होगा
काम करते हुए, सभी प्राणी अपने कर्तव्यों का पालन कर चुके होंगे
और सेवाएँ, और बीज बोये जा चुके होंगे
परलोक का क्षेत्र। पृथ्वी ने दिव्य शक्ति के चमत्कार प्रदर्शित किए होंगे, और इस क्षणभंगुर
दुनिया ने सभी शाश्वत दृश्यों को लटका दिया होगा

समय की चित्र-रेल.

राजसी निर्माता की शाश्वत बुद्धि और अनुग्रह
परीक्षा के परिणाम घोषित करने की आवश्यकता होगी
और दिव्य सुंदर नामों की सच्चाई'
अभिव्यक्तियाँ और दिव्य नियति की कलम
संदेशों का अनावरण किया जाएगा।
प्राणियों को चुकाया जाएगा, ब्रह्मांड की पुस्तक के शब्दों द्वारा व्यक्त अर्थों
की सच्चाई
देखा जाएगा, संभावनाओं के फल प्राप्त होंगे, एक सर्वोच्च न्यायालय की
स्थापना की जाएगी, और

प्राकृतिक कारणों का पर्दा हटा दिया जाएगा ताकि हर चीज सीधे ईश्वरीय इच्छा के अधीन हो जाए और
शक्ति।

उस दिन, महान निर्माता नष्ट कर देगा
ब्रह्मांड को शाश्वत बनाने और अलग करने के लिए
इसके विपरीत। यह अलगाव नरक का कारण बनेगा
अपनी सारी भयावहता के साथ प्रकट हो, और स्वर्ग प्रकट हो
अपनी सारी खूबसूरती और वैभव के साथ। नर्क के लोग
धमकी दी जाएगी: अब अपने आप को अलग रखो,
हे पापियों, इस दिन (36:59) जबकि लोग
स्वर्ग का स्वागत इस प्रकार किया जाएगा: शांति हो
तुम बहुत अच्छे हो; प्रवेश करो, और सदा वास करो (39:73)। उसकी सम्पूर्ण शक्ति के द्वारा, परमेश्वर ने तुम्हारे लिये प्रार्थना की है।
शाश्वत सर्वज्ञ दोनों निवासों के निवासियों को एक शाश्वत, अपरिवर्तनीय अस्तित्व देगा
वे बूढ़े नहीं होंगे, न ही उनका शारीरिक विघटन या विघटन होगा, क्योंकि वहां कोई भी परिवर्तन करने वाली कोई चीज नहीं होगी।

चौथी बात: इस संसार का नाश करने के बाद,
जिसने इसे बनाया है, वह इसे और अधिक सुन्दर बना देगा।
और इसे आख़िरत के भवन में परिवर्तित कर दो।
कुरान, जिसमें हजारों तर्कसंगत प्रमाण हैं, और अन्य ईश्वरीय ग्रंथ इस बात पर सहमत हैं
यह, जैसा कि सर्व-महान् के गुण संबंधित हैं-

उनकी महिमा, कृपा और सुंदर नामों को नमन।
इसके अलावा, उसने वादा किया कि वह अपने सभी स्वर्गीय आदेशों के माध्यम से पुनरुत्थान और महान सभा लाएगा, जो उसके नबियों को भेजे गए थे, जिनमें से सभी इस बात पर सहमत हैं कि वह अपने वादों को पूरा करता है। पैगंबर मुहम्मद अपने 1,000 चमत्कारों की ताकत के साथ इसकी पुष्टि करने वाले सबसे आगे हैं।

सभी संत और धार्मिक विद्वान भी इसकी पुष्टि करते हैं। अंत में, ब्रह्मांड अपने सभी वैज्ञानिक प्रमाणों के साथ इसकी भविष्यवाणी करता है।

संक्षेप में, यह बात उतनी ही निश्चित है, जितनी कि आज शाम को सूरज के अस्त होने के बाद अगली सुबह का उदय होना, कि इस संसार के अस्त होने के बाद "सत्य का सूर्य" परलोक के जीवन के रूप में प्रकट होगा।

ईश्वर के नाम से प्रेरित होकर, जो सर्वज्ञ है और कुरान की कृपा से प्रेरित होकर, मैंने बुद्धि को समझाने और हृदय को इसे स्वीकार करने के लिए तैयार करने के लिए इस सत्य के प्रमाणों को विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया है। लेकिन इस मामले में बोलने का सबसे बड़ा अधिकार ब्रह्मांड के रचयिता के शब्दों का है। इसलिए, सर्वज्ञ रचयिता के शाश्वत प्रवचन को सुनिए, जिसमें वह समय और स्थान की परवाह किए बिना सभी को संबोधित करता है। जवाब में, हमें उसकी कही बातों पर विश्वास करना चाहिए और उनकी पुष्टि करनी चाहिए:

जब पृथ्वी एक शक्तिशाली झटके से हिलती है और
अपना बोझ सामने लाता है, और मानवता पूछती है: "क्या
क्या यह बुरा है?" उस दिन वह अपनी ख़बरें देगा, क्योंकि
उसके रब ने उसमें वह्यी की है। उस दिन लोग
अपने पूर्व कर्मों का प्रतिफल पाने के लिए समूह में आगे बढ़ें, और जिसने
एक अणु के बराबर भी कर्म किया हो
अच्छाई का काम तो देखेगा ही, और जिसने भी परमाणु का काम किया है,
बुराई का भार उसे देखेगा। (99:1-8)

उन लोगों को शुभ सूचना दो जो ईमान लाए और अमल में लाए
धार्मिकता के काम, जो उनके लिए बाग-बगीचों का इंतज़ार कर रहे हैं
जिनके नीचे नदियाँ बहती हैं। जब भी वे
यदि उन्हें वहाँ से फल प्राप्त हो जाएँ तो वे कहेंगे:
“यह वही है जो हमें पहले प्रदान किया गया था”;
कि वे पूर्ण स्वरूप में दिए जाएंगे; तथा
कि उनके लिए शुद्ध पत्नियाँ होंगी।
उसी में सदैव निवास करो। (2:25)

सारी महिमा आपकी हो। हमें इसके सिवा और कुछ ज्ञान नहीं कि
तूने हमें सिखाया है, तू सर्वज्ञ है,
सर्वज्ञ.

हे हमारे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोष मत देना।
हे भगवान, हमारे स्वामी पर कृपा करें
मुहम्मद और उनके परिवार पर, जैसा कि आपने प्रदान किया
हमारे स्वामी अब्राहम और उसके परिवार पर आशीष हो।
वे अत्यन्त प्रशंसनीय एवं महिमावान हैं।

अनुक्रमणिका

एफ

जी

एच

मैं

जे

एल